शाश्वत सौन्दर्य के शिल्प तीर्थ

सावित्री परमार

श्याम प्रकाशन, जयपुर

(राजस्थान साहित्य अकादमी के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित)



सावित्री परमार

प्रकाशक
श्याम प्रकाशन
फिल्म कालोनी जयपुर 302003

संस्करण प्रथम 1985

मूल्य पैंतीस रुपये

मुद्रक
गोपाल आर्ट प्रिन्टर्स
फिल्म कालोनी, जयपुर

Shashwat Saundrya ke Silp Tirath
By *Savitri Parmar* *Price* Rs 35 00

कुछ शब्द और

रग रगीले राजस्थान ने जाने कितनी सजीली-हठीली ऐतिहासिक करवटें समय समय पर बदली हैं। कभी मादक अगडाइयो मे, कभी सिंह गजना के तुमुलघोष मे, कभी त्याग बलिदान और दान शीलता के रूप मे न जाने कितने जौहर यहाँ सजे हैं जाने कितने विकट आक्रमणो पर प्रसिद्ध विजय प्राप्त की हैं कुछ कहा नही जा सकता। राजस्थान अपने आप मे एक चुम्बकीय सबोधन रहा है।

आज तक असख्य काव्य, साहित्य, इतिहास और प्रशस्तियाँ इस प्रान्त पर लिखी जा चुकी हैं, फिर भी लगता है कि इसकी बालुई चुनटो म न जाने कितने अबूझे अछूते कथानक आज भी छिपे हुए हैं। आन-बान शान के लिये यह मरुथली प्रारम्भ से ही अतुलनीय रही है।

दिन मे स्वर्णिम आभा से दपदपाती बालू और रात मे भूरे-सलेटी फैले कस धोरो ढूहो के बीच अकृत लोक कथाओ, लोक गीतो, लोक कलाओ के सरसराते स्वर इतिहास के फडफडाते पृष्ठ दर पृष्ठ लोक नृत्यो-वाद्यो मे थिरकते लास्य-रग और गोरबदो के झूमते-छनछनाते मोतियो, घु घरुओ के उद्वेलन यही सब कुछ तो है जो इस धरती से सभी का मन गु फित किये रहता है।

पराक्रमी जुझारू रणबाकुरो का जैसा शानदार जीवन रहा वसा ही रहा यहाँ का समृद्ध लोक-जीवन। विरासत मे पायी इसने बडी रगीन मोहक और अनोखी परम्पराए और पाया साहित्य सस्कृति कला और धम का अलभ्य, अटूट-अकूत खजाना।

राजस्थान के हर कोने मे किले गढ कोट छतरिया, गु बद बारह दरिया और हवेलिया छाई हुई मिलती हैं उत्कृष्ट कला से वेष्टित मन्दिरो की अनुपम शृ खलाए इनमे गु थी हुई हैं राजाओ महाराजाओ की बेमिसाल गौरव गाथाए और जडी मिलती हैं बेजोड कलाकृतिया। सगीत कला साहित्य और सस्कृति म हर कण रचा बसा हुआ। चित्रकला और वास्तु कला के ऐसे अनूठे उदाहरण यहाँ ठौर-ठौर पर देखने को मिलते हैं कि उस समय के युग चितेरो की कल्पना शक्ति पर अचभा होने लगता है। नृत्य रगशालाए पोथीखाने शस्त्रागार, हस्तलिखित पाण्डु-लिपियां, उच्चकोटि के सलचित्र चप्पे चप्पे पर समुद्र की तरह ठाठें मारता हुआ राजपूतो का कालजयी इतिहास विद्वानो कलावतो और धनकुबेरो की अलबेली सगम भूमि रहा है यह मरुदेश ।

सुख शाति से भरा यहाँ का रहा लोक जीवन। मृदुभाषी लाग कसूमल रग से महकता हुआ सौहाद्र पूर्ण जन मानस पूजा व्रत, पव त्योहारो की हर दिन महक म दिर गू जते रहे हैं कि ईश वदना से और यह धरा आलोकित रही है

अपनी परम्पराओं से। अनुराग पराक्रम, स्वाभिमान मर्यादा, हठ मनोरंजन और युद्ध पर्वों आदि के तेवर कसे रहा है सदैव यह राजस्थान। शृंगार वीरता की मिश्रित भावनाएं यहाँ कण कण में आज भी विद्यमान हैं। यहाँ हर कदम पर हल्दी घाटी है और हर कदम पर विजय स्तम्भ है। यह मीरा की भूमि है। यहाँ राणा की हुंकार है और देलवाडा राणकपुर की चंदन पावन गंध है। हवेलियों महलों पर शृंगारित हैं इन्द्रधनुषी चित्ताकर्षक भित्तिचित्र इसी राजस्थान के बालू पत्र पर रचा गया है चन्द्रबरदाई का पृथ्वीराजरासो और यहीं बिहारी की सतसई के पद कण्ठ कण्ठ में गूंजे हैं और इसीलिये इस जमीन का मिजाज, इसके अपने संस्कार विश्वविख्यात रहे हैं।

इस वीर भूमि के हर युग ने अपने सम्मानित अमिट चित्र कई प्रकार के बिंब साधनों में रूपायित कर सहेज कर रखे हैं—राजपत्रों, मुहरों शिलालेखों, फरमानों, कलाकृतियों और भित्तिचित्रों आदि में प्रत्येक काल मुखरित हुआ मिलता है।

हर धर्म का यह राजस्थान तीर्थ स्थली रहा है कितने ही ऋषि मुनियों, देवी देवताओं भक्तों जोगियों और अवतारों के कथानक इन तीर्थों से जुड़े हुए हैं। पुष्कर और केशवरायपाटण जैसे सुविख्यात पावन स्थल जन जन का ध्यान आकर्षित करते हैं धार्मिक मेलों में यहां का सामाजिक तथा सांस्कृतिक जन मानस शहद रोली सा घुला मिलता है। यह आध्यात्मिक गुंजन संकीर्णता से ऊपर उठाकर जन-जन की आत्मा में संवेगात्मक अनुभूतियां जगाता रहता है। इसी भूमि पर है विभिन्न प्रस्तर शैलियों की सर्वोच्च कलात्मक खण्डित मूर्तियों का विशाल भण्डार समेटे हर्षपर्वत और किराडू दोनों ही स्थानों पर उत्कृष्ट मूर्तियों का बहुमूल्य खजाना मिलता है।

अपने लेखन के और पत्रकारिता के दौर में मैंने इस अनूठे राजस्थान की जब जब भी यात्राएं की हैं तब तब यात्रा वृतांत लिखे हैं। न जाने कितने सरोवर, पर्वत, गुफा मंदिर, गढ किले और पुरातत्व विभाग आदि देखे हैं और इन्हें आत्मसात् किया है। यही सब यात्रा वृतांत मैंने यहाँ इस पुस्तक में दिये हैं।

सावित्री परमार

पालीवाल भवन,
खजाने वालों का रास्ता
चांदपोल जयपुर (राज०)

अनुक्रमणिका

लोकतीर्थ देलवाडा

राजस्थान शौय देशभक्ति और धमनिष्ठा का पावन सगम एक ऐसा नाम, जिसमे अनेको गौरवपूर्ण युग मोतियो की तरह गुम्फित हैं—यहा की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि को न जाने कितनी आधियो के, केसरिया बलिदानो के और यज्ञ-सामग्री की सुगधी के सेतुबध पार करने पडे हैं जाने कितने जौहर यहा की हवा म नीलकमल से लहरा रहे हैं कनल टॉड जब यहा की यात्रा पर निकला तब अत मे उसे भी आश्चय से अभिभूत होकर कहना पडा कि—"राजस्थान की तुलना मे यूनान के स्पार्टा का शौय भी एकदम हल्का रहा जाता है।"

दूर दूर तक ठाठें मारता हुआ रतीला सागर इन्हीं रसमी बालुई पर्तों मे *असख्य शिलालेख दुग महल, गुम्बद मीनारें, समाधि स्थल प्रशस्ति स्तभ* माहर सिक्के, लोकगीत नृत्य, कथा कहानिया और मठ मदिर बिखरे हुए है नदी नालो, झरनो और दुगम पहाडी घाटियो से घिरे रमणीक स्थानो पर सिद्धहस्त शिल्पियो द्वारा निर्मित देवी देवताओ की दुलभ मूर्तियो से आवेष्टित अनेको देवालय मिलते हैं—जिनके माध्यम से राजस्थान की स्थापत्यकला मूर्तिकला और चित्रकला का सम्पूर्ण परिचय मिलता है—इ ही म हैं देलवाडा के भव्य मदिर निर्माणकला की सर्वोत्तम कृति के परिचायक।

देलवाडा मरुभूमि का प्रसिद्ध लोकतीथ पवित्र वातावरण का सकेतात्मक स्थल अबुद पवत (आबू) पर स्थित एक ऐसा पवत, जहा वेद, पुराण उपनिषद महाभारत और जन धम के पुनीत हस्ताक्षर होते रहे है। कहा जाता है कि पाताल तक जाने के लिए पहले यहा से एक सुरग थी जहा महर्षि वशिष्ठ का जगत् प्रसिद्ध आश्रम है। अगर कोई मनुष्य हिमालय के पुत्र अबुदाचल (आबू) मे जाकर एक रात भी यहा व्यतीत कर लेता है, तो उसे हजार यज्ञ दान करने से भी अधिक पुण्य लाभ होता है।

मैं देलवाडा के मदिरो के कलात्मक सौदय को देखने के लिए आबू की ओर चल पडी हू—गाडी जसे ही आबू की सीमा को छूने लगी है कि एक अबूझा स्वप्न सा झरने लगा है—चारो ओर हरी भरी घाटियो का नसगिक सौदय, ऊची नीची चढाई, चिक्कन काई मण्डित फिसलती चट्टानें। कही साफ झक्क ढलानें फूलो के छीटदार घाघरो पर लहरिये ओढे गविता पहाडिया, तालिया बजाते हसते खेलते किशोर पत्ता के समूह कुहनी टहोकती तरुण शाखाए तीनो कालो म बहती गायत्री मत्र सी सुगधित वायु सामवेदी सगीत गुनगुनाते बहुरगी पाखियो के समवेत

स्वर। अजीब पौराणिक वातावरण कहां रुकें। किधर चलें ! क्या देखें ? भ्रमित चकित दृष्टि के आर पार तक विधाता की तूलिका का विलक्षण चमत्कार अनोखे चित्रों का अपूर्व वनवास धरती की अटारी पर स्वर्ग का सोपान और फिर मिलती है आबू के हृदय में बसी रसलीन नक्की झील हरी व वनवारों के बीच बहुमूल्य नीलमणि श्वेत हंसों सी हिलोरें मारती हुई नौकाएं—मखमली नीलम सलवटों में दमकते धूप के बिल्लौरी कुमकुमें फूल पादपों के झूलते बिंब प्रतिबिम्ब।

सामने है यहा का चमत्कारी शिखर जिसकी ऊंचाई पर है—अचलगढ़ दुर्ग सूचना मिलती है कि आबू समुद्र तल से लगभग ग्यारह बारह सौ मीटर की ऊंचाई पर है, जिसकी बडी चोटी का नाम गुरु शिखर है पहले यहा समुद्र था। ईसा से करीब पच्चीस हजार पूर्व पर्वत रूप में उभरा महर्षि वशिष्ठ का स्थान होने के कारण प्रज्ञा (बुद्धि) का द्योतक इतिहास प्रसिद्ध यात्री मेगस्थनीज ने भी इस गुरु शिखर का वर्णन किया है, जो ईसा से तीन सौ वर्ष पूर्व का माना जाता है। यही है यज्ञेश्वर का पवित्र स्थान तीन मठ मढ़िया इन्हें कुंवारी कन्या का मंदिर भी कहा जाता है। भगवान महावीर भगवान दत्तात्रेय कृष्णतीर्थ के मन्दिर और रामगुफा भी है।

लोक साहित्य में आबू तीर्थ की बड़ी महिमा उल्लेखित की है। गीतों में भी यहा का सौन्दर्य उकेरा गया है 'मोर बोले रे मलजी आबूरा पहाडा में ' और आछो मिंदर चिणायो आबूठाव रे लोक काव्य के दोहों में भी यहा की छवि मुखरित हुई है—

"टूक टूक कंतकी भिरणे भिरणे जाय अरबुद की छबि देखता और न सालदाय—"

अथवा
मोती समो न ऊजलो
चनण समो न काठ,
आबू समो न देवता
गीता समो न पाठ '

पांव सांसों में उत्सुकता जगाये बढ़ते जा रहे हैं। बहुत ऊंचे चबूतरे पर स्थित संगमरमरी देलवाडा का आह्वान अपनी ओर खींचे लिये जा रहा है। सामने है देवताओं का बाडा देलवाडा देवालयों का समूह दृष्टि अपलक रह गयी है— 'नयन जुड़े सो जुड़े ही रहे' स्थितप्रज्ञ जसी स्थिति। पाषाणों पर कला अद्भुत शिल्प। हर ओर विश्व प्रसिद्ध जैन मन्दिरों का समूह भुवनेश्वर प्रणाली पर आधारित कला कृतियां बेजोड़ कला।

पता चला है कि देवड़ा शासकों की सिरोही कभी राजधानी थी इसी की भौगोलिक सीमा में अपने कलात्मक वैभव के साथ देलवाडा विद्यमान है—पांच जैन मन्दिर। विमल शाह गुजरात के राजा भीमदेव के सलाहकार मंत्री तथा सेनापति

थे। किसी युग में भारत का स्वर्ण किरीट और जन धर्म का प्रमुख केन्द्र समझा जाने वाला स्थान अणहिलवाडा के वे बहुत धनी व्यापारी थे। अनायास उनके मन में एक इच्छा जागी कि पराकाष्ठा की स्थापत्य कला से सुसज्जित जन मंदिरों का निर्माण उनके द्वारा होना चाहिये—तलाश करते हुए यह रमणीक पहाडी स्थल उन्होंने इस धर्म कर्म के लिए चुना। लक्ष्मी की पहले ही उन पर अनुकम्पा थी। कहते हैं कि इस सुरम्य स्थान को खरीदने के लिए उन्होंने हीरे माणिक मुक्ता, और मोहरों से जमीन पाट दी थी। और अपार धनराशि देकर सर्वोच्च कलानिष्ठ शिल्पियों को आमन्त्रित किया था तीन मंदिरों का ही निर्माण हुआ था कि उनकी मृत्यु हो गयी। इसके लगभग सौ वर्ष के पश्चात् वास्तुपाल और तेजपाल ने शेष दो मंदिरों का निर्माण कराया। मैं देख रही हूं कि मंदिर के ठीक सामने अश्वारूढ विमल शाह की भव्यमूर्ति है। वास्तुपाल और तेजपाल के बनवाये मंदिर भी कला की दृष्टि से बहुत वैभवपूर्ण हैं।

भारत के कोने कोने से यात्री आते हैं। देखकर इन्हें सराहते हैं। जीवन को धन्य मानते हैं। इस समय भी दर्शनार्थियों की अपार भीड है। पोरवाल जाति के श्रेष्ठ धनिक महाजनों का यशोगान इन मंदिरों के माध्यम से छाया पडा है। निर्माण कला की सर्वश्रेष्ठ छाप लिये हुए मेरे चारों ओर कला की सुन्दरता संगीत नृत्य सी झंकृत हो रही है।

देलवाडा के प्रसिद्ध जन तीर्थंकर भगवान आदिनाथ का देवालय बाहर से देखने पर एकदम साधारण लगता है लेकिन ज्यों ही मैं भीतर सभा मंडप में पहुंचती हूं कि आस पास की समस्त हलचल भूलकर पत्थरों में बारीक खुदाई की अलंकृत कला को देखकर चकाचौंध हो उठती हूं। स्तंभों की अष्टकोण कटाई फूलदार मेहरानों से युक्त नृत्यांगनाओं के वंकिम लास्य से मुस्कराती गोल गुम्बरी छत संगमरमर पर अति सूक्ष्म जालियों की सतरंगी छटा। प्रत्येक मूर्ति के अलग अलग आकर्षक हाव भाव मुग्धकारी कटाक्ष भंगिमाएं कला सौष्ठव से परिपूर्ण मंडप यह मंडप और गर्भगृह लगभग तीन चार फुट ऊंचे कटावदार चबूतरों पर बनाये गये हैं आठ खूबसूरत स्तंभों पर अधर टिकी हुई ऐसी सुन्दर छत मानो किसी ने जडाऊ स्वर्ण आभूषणों से इसका श्रृंगार किया हो! अधखिले कमलों के बीच गूंथी हुई मृणालों की वेणियों से आवृत विशाल गुम्बद यहीं पर हैं आदिनाथ भगवान की मोती नयना मनोहारी तांबे की मूर्ति गले में है दुर्लभ मणियां जैसे चमकदार पत्थरों का हार हीरक ज्योति सी फैलाये कितने कितने स्तंभ! सब कुछ अद्भुत अनोखा अवर्णनीय और कल्पनातीत है। लम्बी लम्बी पत्रांकित सुन्दर लताओं से आच्छादित वीथाएं बहुल पच्चीकारी युक्त गलरी भारी भारी लटकते तोरण भारपट्ट।

सामने है विशाल आंगन—बताया गया है कि यह एक सौ चालीस फुट लम्बा और काफी चौडा है। चौडाई का सही अनुमान नहीं हो सका है—यहां भी

मंडप को घेरे हुए बावन खम्भे अपनी श्रेष्ठ कला की ध्वजा आकाश तक फहराये उन्नत मस्तक किये खड़े हैं। सभी पर जैन तीर्थंकरों की आभायुक्त अनुपम भव्य मूर्तियां उत्कीर्ण हैं।

अम्बादेवी का प्राचीन चबूतरा मठ मंदिर और कई सभा भवन हैं। बहुत महीन खुदाई से सजी हुई गलरी में है हस्तिशाला। छोटे बड़े संगमरमरी हस्तिशिल्पकों की अलग ही छटा। बनाने वाले चितेरों के प्रति मन में अनेक प्रशंसाएं उमड़ पड़ती हैं। तभी दृष्टि दो विशाल ताकों की ओर उठती है, जहां देवराणी और जेठाणी के पच्चीकारी युक्त गवाक्ष हैं। हस्तिखाने का द्वार इतना ऊंचा है कि मय हौदे और महावत के एक पूरा कद्दावर हाथी इसमें प्रवेश कर सकता है। किंवदंती है कि यहां वास्तुपाल अपनी दो प्राणप्रिय पत्नियां—ललिता देवी और रूपादेवी के साथ आमोद विचरण किया करता था और कभी कभी तेजपाल की प्रिया अनुपमाश्री भी यहां आती थी। पांव बौराये से घूम रहे हैं। भवन निर्माण शैली का छोर अछोर आश्चर्य फैला पड़ा है—जरा सा मुड़ते ही एक और सुन्दर कृति नजर आती है—मां विद्यादेवी की मूर्ति चार भुजाओं वाली। सामने तीस बत्तीस अंतराल हैं आधी मानवाकृति और आधी पशु आकृति की विचित्र मूर्तियां प्रत्येक में उकेरी गयी हैं लेकिन कलात्मक रेखांकन में परिपूर्ण।

जानकारी लेती हूं कि मूर्तिकला का ऐसा नयनाभिराम संसार प्रस्तुत करने वाले मुख्य शिल्पकार का नाम शोभदेव था। बताया गया है कि खुदाई और घिसाई करने वाले अनेक कारीगरों में जबर्दस्त होड़ लगी रहती थी क्योंकि जितनी अधिक संगमरमर का रेत घिसाई के बाद निकलती थी, उसी बारीक रेत को तोलकर पारिश्रमिक दिया जाता था। चांदी और सोने की मुद्राएं तभी तो चारों ओर इतनी बारीक महीन जालियां के बीच फूल अधविकसित कमल गुलाब केतकी अंगूरी लताएं तोरण और झालरें मूर्तियों के भाव विलास नगीना से जुड़े हुए हैं। झालरें और कंगूरा की ऐसी पारदर्शी झलक, मानो झिल्ली अबरक के पतले कागज की बेलें झालर हों? हर तरफ कला की खुदाई का विलक्षण काम! धर्म निष्ठ भावना का हर कोने में स्पर्श। बौद्धिक सभ्यता के जीते जागते मौन होते हुए भी बोलते से स्थापत्य कला के अपरूप प्रतीक। प्रस्तर के कलेवर पर छैनी की इतनी प्यारी मीनाकारी पच्चीकारी! इतनी सुन्दर हथौड़ी से नव सज्जा! फिर ध्यान दिया जाय, तो लगता है कि मात्र मूर्तियों का अंकन टंकन ही क्या, वरन राजस्थानी यही क्या बल्कि भारतीय कला, शिल्प निर्माण गौरवपूर्ण इतिहास और सामाजिक मूल्यों का यहां सर्वांगीण ज्ञान हो उठता है। प्रतीत होता है जैसे सिरोही शासन के अन्तर्गत इस पहाड़ी भू भाग पर बने ये देवालय धर्म और संस्कृति के सुदृढ़ रक्षा कवच का काम देते रहे होंगे! जन जीवन का साहस, शक्ति चिन्तन और शान्ति की प्रेरणा इन्हीं से मिलती होगी? आकाशीय शिखर तक चुम्बित यहां की स्थापत्य कला की प्राचीनता का प्रमाण एक यह भी लगा कि यूनानी प्राचीन 'पान शैली' तथा "बौद्ध शैली" की छुअन भी इसमें परिलक्षित होती है। सप्त धातुनिर्मित ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इसका उदाहरण है और भी सर्वोत्कृष्ट नमूने ही नमूने कहां तक

गणना हो ! दुहरी तिहरी रविश वाली गैलरियां, ड्योढियां कटावदार मेहराबें, पीठासन, अण्डाकार भारपट्ट युगल प्रतिमाएं लच्छियों में गुम्फित जाली की कुराई छतों पर रची बसी अनेकों पौराणिक गाथाएं लताओं गुल्मों के बीच रास नृत्य प्राकृतिक छटाओं की अनेकानेक प्रवाह पूर्ण मधवती रेखाएं कैसे भूला जा सकता है वह प्रकोष्ठ कलावत दीर्घा, जहां बाईसवें जिनेश्वर नेमिनाथ भगवान विराजमान हैं डूंगरपुर की खान से प्राप्त पाषाण की विपुल अनुपम मूर्ति बड़ी उज्ज्वल आकृति और बेहद सजी अर्धगोलाकार गुम्बदों से घिरा स्थान एक ही केन्द्र से जुड़े हुए धनोत्कीर्ण लेकिन विभाजक रेखाओं में बटे हुए बीच बीच में मानव और प्रकृति के विभिन्न उत्सव समारोहों का आलकन राग रागनियां वेदियां, कामदार चदोवे संगमरमर पर ऐसा पैना-तीखा काम, मानो किसी ने चांदी के महापात्र में चांदनी निचोड़ दी हो ? वस्त्रों, आभूषणों और देह भंगिमाओं की बड़ी मोहक मुरकियां और चुनटें मूर्तियां के अधरों पर ऐसी लावण्यमयी मुस्कान ! कर्ण चुम्बित नेत्रों की छाव में आध्यात्मिक शांति का ऐसा विराट दर्शन, उंगलियों के भाव प्रदर्शन में आकाश का उजास भला और कहां देखने को मिलेगा ?

कलापूर्ण मुखाकृति वाले नृपदान चवर, स्फटिक नेत्र, हीरक तिलक, घृत दीप के झाड ढोल दमामे, नगाड़े, शंख तुरही, बांसुरी शहनाई क्या कुछ रूपायित नहीं है पाषाण के इस महाकाव्य में ?

सुबह से कब शाम हो गयी है, पता ही नहीं चला। पंछियों के गायन ने वनश्री की मुंडेर पर सान्ध्य दीप आलोकित कर दिये हैं। हरे भरे उपवन झाड़ियां और उपत्यकाएं श्यामवर्णी आभा में रहस्यवादी सी हो उठी हैं। पहाड़ों ने अपनी पगड़ियां में नक्षत्रों की कलगियां टांक ली हैं। घाटियों की हथेलियों में चांदनी की झांझरें बज उठी हैं। सांवली घाटियां के घूंघटों पर जरी किनारी के जुगनू झिल मिला रहे हैं।

लौटने से पहले मैं उस शिल्प सौन्दर्य की स्वप्न नगरी को एक बार और दृष्टि की मंजूषा में समेट लेने का प्रयास करती हुई सोच रही हूं कि—

"मत कहो ये फूल बस उत्कीर्ण हैं
पाषाणों पर
देवताओं ने लिखे हैं मन्त्र शायद
शालपत्रों पर

रात्रि धीरे धीरे अवतरित हो रही है। सन्ध्या आरती में लीन आबू पर्वत का विराट सत्ता के प्रति अनुगृहीत पूरे वातावरण को इन्द्रधनुषी झील को आकाश गंगा में प्रस्फुटित चन्द्र कमल को और समस्त देवगणों को शत शत प्रणाम करती हुई स्मृतियों का अटूट सिलसिला लिये पहचाने हुए रास्तों से लौट चली हूं।

शिल्प-तीर्थ : राणकपुर

'गढ आबू नवि फरसियो नु सुणिया हीर
ना रास ।
राणकपुर नर नवि गयो, तिण्ये
गर्भावास '

जिसने कमगाथा युक्त धम तीथ राणकपुर की यात्रा नही की, उसका जन्म लेना ही व्यथ है । यात्रा स्तवन' के अनुसार भी राणकपूर आदिनाथ प्रभु का मगल मय पावन धाम है "जन उपासरे व्याख्यानवृत" के अनुसार कला पवित्र है । धम दैनिक शक्ति है । देवालय सत्य हैं और मूर्तिया सौन्दय के सागर की उत्ताल तरगें हैं राणकपुर मे सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् का समावेश है ।

राजस्थान के पाली जिले मे अरावली पवत की श्रृखलाओ के मध्य दिल्ली महमदाबाद रेलव लाइन पर है मह प्रस्तार पुखराज सगमरमरी राणकपुर पोरवाल जातीय सघपति धरणीशाह की कलात्मक रुचि का श्रेष्ठतम उदाहरण टेढी मेढी चक्करदार पहाडिया के बीच आसपास फला हुआ है प्रकृति का सुरम्य अचल भूरी स्लेटी पहाडिया, घाटिया हरियाली का इनमे स्वतन्त्र साम्राज्य कहीं कही बडे गहरे जगल थरथराती हवा हरे रूमाल हिलाती शाखाए उत्सुकता से झाकते जगली फूल दरख्ता के गवाक्षो से किरण रूप झाक रह हैं हवा की मदालस थिरकन जलाशया को आन्दोलित कर रही है । गुहा द्वारो और पृथुल घाटिया मे न जाने कितन अनाम पक्षियो की बोलिया गूज रही है । पवतो के उन्नत ललाटो पर चदा तिलक लगाती धूप बडी सौम्य लजीली सी दिखाई पड रही ह । इधर उधर चुलाती सी चचल पगडडिया को थरजत से ढाणी गाव खेतो म व्यस्त मरदाने अगरखे फसला के लहराते हरे धानी लहरिय छाछ राबडी का कलवा ले जाते रसडी नथनी के गुनगुने बोल— म्हारा छल भवरजी ल्याद्योजी जपरिया रो लहरियो ' हसती हुई देव ललनाओ सी पल्लवित लताए मगछौनो सी भोली कलिया की अधखुली पलका मे प्रात काल की पवित्र आरती गूज रही हैं । सुबह का स्वस्त्ययन करने वाला हर्षो ल्लासपूण वातावरण बडी ही शान्ति देन वाला पवतीय तापस रूप पूरी वनश्री अलाभनीय ढेर ढर मैदानी पहाडी धूप बडी अच्छी लग रही ह कोई कक्श शोरगुलनही केवल पक्षिया के चिर पुरातन स्वर पेडा की झिरिया से टकराता पवन पत्तिया का वीणा वादन झुरमुटा म बको की तडपती सी टेर बडे जीवन दृश्य जस नीले आकाश के नीचे इन हर नर मेनाओ म सम्पूण झकार गूज रहा हो ।

एक अच्छा सा कस्बानुमा गाव सडक के किनारे पडता है। वहा चाय के साथ साथ मैं राणकपुर की जानकारी भी यात्रियो और वहा के निवासियो से ले रही हू। पहली बार इधर की यात्रा पर आना हुआ ह, इसलिये मन मे प्रबल जिज्ञासा और नवीनता के प्रति असीम उत्साह भरा हुआ है। नरम गुलगुली धूप ओढे फिर चल पडे हैं रास्ते।

यात्रा का हर चरण प्रकृति के नये नये दृश्य सकेत दे रहा है। पिंगल जटाए फैलाये पद्मासन लगाये पर्वतों की कतारें फिर प्रारम्भ हो गयी है। मृसण वनराजियो से आच्छादित मोड घुमाव और रास्ते ।

जसे जसे राणकपुर नजदीक आ रहा है जगल गहराता जा रहा ह। झबरी-सी झाडियो से आख मिचौनी खेल रहे हैं खरगोश रूई से गोल गदबद खरगोश और चौकन्नी कुलाचें भरते हुए मृग-किशोरो के मखमली कलेवरो से आखें हटाई नही जाती। मस्तक स्वय ही परितृप्त होकर अज्ञात विराट सत्ता के सम्मुख नत-मस्तक हो उठता ह। लग रहा है मानो प्रकृति कलानेत्री ध्यान-मग्ना होकर अज्ञात लिपि मे अतस की पन्नग तूलिका से किसी चिरतन की योग साधना मे अभिभूत होकर श्रद्धा भक्ति का सन्दम प्रस्तुत करके किसी ललित महाकाव्य की भूमिका लिख रही है सारा ही परिवेश कितना मौन लेकिन कितना मुखर !

गाडी राणकपुर आकर रुक गयी है। आसपास कई कई मदिर चादी के कटोरे मे पूरा ही मानसरोवर !

गुच्छ गुच्छ लाल बैंगनी फूल महकती क्यारियो के बीच रास्त विशाल परकोटे के भीतर कटे छटे हरी दूब के कोष्टक मदिरो के चमचमाते शिखर, लहराती हुई पताकाए बायी ओर बडे से परकोटे मे बहुत से कमरे धर्मशालाए, बहुत से विदेशी सलानी पुरुष महिलाए यहा से आ और जा रहे हैं। उनसे बात करती हू—बताते हैं कि अलग अलग देशो के हैं। महीनो से ठहरे हैं। राणकपुर ने मन बाध लिया ह। भारत की धरती का यह धर्म-निष्ठा का क्षीर सागर कितना मोहित कर उठा है ! सुनकर शर्मीली हसी के साथ गदन हिलाकर सत्य को स्वीकार उठत हैं।

बहुत ऊचे चबूतरे पर यह चतुर्मुख मदिर अवस्थित है। छोटी छोटी चौकियों की परिधि के बीच चौबीस पच्चीस सीढिया भीतर जाकर आखें स्थिर हो जाती हैं। बडे ताको वाली झिरियो म फश पर, गैलरियो मे छोटी छोटी धार्मिक पुस्तक पढते हुए कुछ जन भक्त पठन पाठन मे व्यस्त हैं। जिधर भी दृष्टि घूमती है, वही पर कला की अटूट सम्पदा हृदय को विमोहित किये डालती है।

मैं सोच रही हू कि कसे होगे वे कला के एकनिष्ठ साधक ? कसे थे वे शिल्प कला म पारगत नेत्र, जिनकी पुतलियो मे इतने सारे सगमरमरी सपने तरे होगे ? कसी होगी कुशाग्र बुद्धि ! चित्रात्मक अभिरुचि ? कैसा होगा हृदय का

कल्पना लोक जहा से ऐसे अपरूप सौन्दय बिंब एक एक कर झरे होगे ! विधाता ने कला की किस कसौटी पर कसी होगी वे उगलिया, जिन्होने छनी हथौडी के उत्सा हित सगीत की लय पर पाषाणो मे स्थापत्य कला का ऐसा अनोखा ससार बसा दिया ! ज्ञान शक्ति इच्छा शक्ति और क्रिया शक्ति को सहज रूप से साकार कर दिया ! अपने श्रम की कसी अनुपम अनुष्ठान वेदी बनायी है ! अपनी सासो की गणना पर क्षणो का कसा साथक पावन प्रयत्न फल ! तपश्चर्या का अमरफल ! युग युगो का समर्पित कला के कितने यथाथ उद्धरण ? कितने सत्वो मुखी सकल्प लिये होगी उनकी साधु दृष्टि ?

कला का हर पक्ष रूपायित सज्ञायित मन्दिर का प्रत्येक कोना ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो प्रत्येक पाषाण ने अमोघ रस सिद्धि प्राप्त कर ली हो ! कलात्मक श्री की लावण्यमयी अजस्र धाराए प्रवाहित हो रही हैं ! हरेक मूर्ति मनो हारी समय पारे की बूदो सा ढुलकता जा रहा है लेकिन आभास हो रहा है कि अभी तो कुछ देखा जाना ही नही है। तभी हवा के मदिर झोके पर, मृणाल पर तरगित कमल जालियो के पीछे से पुकार उठता है उधर पाव मुड जाते है। दो तीन जन सन्त दिखाई देते हैं।

उनसे वही सीढियो पर बठकर मन्दिर की चर्चा छेड दती हू । उन्ही से पता लगा है कि परिग्रह के अनुयायी जनियो की ओर से इस मन्दिर को स्थापत्य कला का यह अपार सचय मिला है। बहुत पहले मेवाड के महाराणा कुम्भा का इस क्षेत्र पर अधिकार था। रणकपुर या राणापुर या राणकपुर महाराणा कुम्भा की कला मण्डित सुरुचिपूर्ण अभिरुचि की छाप लिये यह गाव राणकपुर कालातर म यह जन धम क सवश्रेष्ठ मन्दिरो का प्रतीक बन गया।

दूसरे विद्वान बताते हैं कि महाराणा कुम्भा के एक बहुत विश्वासपात्र व्यक्ति थे, जिनका नाम धरणाक अथवा धरणीशाह था सिरोही राज्य के नन्द गाव के थे। बाद म महाराणा कुम्भा ने उन्हे राजसभा म बुलाकर बहुत मान सम्मान दिया। महाराणा कुम्भा स्वय भी बहुत विद्वान थे। सगीत, कला और साहित्य मे कुशल पारखी थे।

धरणीशाह के मन मे इतना सुन्दर मन्दिर बनवाने की इच्छा अचानक क्या बलवती हो उठी ? उसक पीछे एक कहानी, जनश्रुति, मुझे बतायी गयी।

कहा जाता है कि एक दिन बहुत काम करन के पश्चात् हारा थका धरणी शाह रात को सोया कि उसे बडा विचित्र स्वप्न आया नीले नीले, ऊचे ऊचे बादल कही कही चमकता आकाश दपण सा उजाला और नलिनी गुल्म' विमान हवा म लहराता हुआ आखें खुलन पर वह बडा हैरान हुआ। राम काज की व्यस्तता भी "नलिनी विमान" की सुन्दरता को भुला नही पायी। उसका हृदय धम के प्रति अनुरागी तो था ही, उसने ठीक नलिनी गुल्म जसी आकृति का जिन प्रासाद

तयार कराने की प्रतिज्ञा की। दूर दूर से शिल्पकारो को आमन्त्रित किया गया। नक्शे तयार कराये, लेकिन सन्तुष्टि नही हो पा रही थी। तब आया उस समय का बहुत प्रसिद्ध शिल्पकार देयाक जिसकी चारा ओर प्रशसा थी। देयाक जाति का ब्राह्मण था। उससे जब आग्रह हुआ, तब उस शिल्प विज्ञ ने अपूर्व रेखाचित्र बनाकर दिया "त्रलोक्य-दीपक" नामक मन्दिर का हू ब हू स्वप्न चित्र धरणीशाह प्रसन्न हो उठा। अनेक सहायक शिल्पकार देकर इस दिवा स्वप्न को सम्पूर्ण कला आवेगो के साथ प्रस्तर पर साकार करने के लिए उससे फिर आग्रह किया। बडी श्रद्धा भक्ति और लगन के साथ 'धरणा विहार' नामक चतुर्मुख आदिनाथ जिनालय की नीव डाली गयी और देयाक ने भी पत्थरो म कला का बेजोड नमूना उकेर कर उस वर्णनातीत स्वप्न को साकार करने का वचन दिया। धरणीशाह न सर्वश्रेष्ठ सगमरमर प्राप्त करने के लिए मकराना और मेवाडी को चुना। इन स्थाना से हल्के से सफेद रग का सगमरमर मगवाया गया। मेवाडी प्रस्तरो पर उसने अपनी कला का समस्त सौदय रच डाला। अपने श्रेष्ठ सहायक शिल्पियो के साथ, जिनकी सख्या पचास साठ के करीब थी, वह रात और दिन इस निर्माण काल मे एकनिष्ठ साधनारत होकर जुटा रहा।

यह मन्दिर पाली जिले मे आगे जाकर मेवाड की सीमा से लगा हुआ है जा फालना से बारह मील और सादडी से छह मील के लगभग दूर पडता है। चारा ओर से काले भूरे गिरिश्रृगो की अनुरागी बाहा ने इसे लपेट रखा है। इससे थाडी दूर कल कल बहती है एव गोरवर्णा नदी फिर है असीम हरियाली का बिखरा महकता सौदय इन सभी बिबित प्रतिबिबित वीथियो के बीच सूय की आभा म सामने झिलमिला रहा है स्वेत राजहस सा राणकपुर।

सुनते हैं कि जब इस मन्दिर का निर्माण हो रहा था, तब धरणीशाह की इच्छा थी कि कला की सर्वोच्च सौष्ठवता के साथ यह मन्दिर सात मजिल का बने, लेकिन कुछ ऐसे कारण बन गये कि इसका निर्माण काय केवल चार मजिला तक ही चला, फिर निर्माणकाल समाप्त करा दिया गया, लकिन आज भी, मैं देख रही हू कि इसकी साज सवार पर बडी सतक दृष्टि रखी जाती है। बारह महीने लगातार कोई न कोई काम चलता ही रहता है।

मैं इसके क्षेत्रफल के सम्बन्ध मे भी जानकारी प्राप्त करती हू। यह मन्दिर अनुमानत अडतालीस हजार वग फुट के घेरे मे बना हुआ है। मेवाडी और मकराना का बहुमूल्य सगमरमर घुडीदार बेला के गुच्छे मूर्तिया और बन्दनवारो से सज्जित द्वार चौबीस रगमण्डप एक सौ चौरासी भू गृह पिच्चासी शिखर और एक हजार चार सौ चौवालीस स्तम्भ हैं चारो दिशाओ मे प्रवेश हेतु बहुत ही कामदार विशाल द्वार है जहा पच्चीस कगूरेदार चौकियो से आबद्ध सीढियो द्वारा मन्दिर मे प्रवेश किया जाता है। हाथ म माला सिर पर पगडी और गले मे उत्तरीय पहने

धरणीशाह की बडी शानदार मूर्ति उन्नत रूप म सामने है। आदिनाथ त्रलोक्य दीपक मदिर के सभी द्वारो से संयुक्त एक एक बडा मदिर और है । चारो द्वारो के साथ जुड हुए। मदिर समुदाय मे कुल मिलाकर लगभग चौरासी देव कुलिकाए मठ और मढिया सभी इतनी हृदयग्राही मूर्तियो से, सर्पाकार बेला लताओ से मढे जडे हैं कि आश्चर्य होता है। बडा अचभा कि क्या यह सब मानवीय उगलियो द्वारा दुलभ कल्पना है ? धरती के विश्वकर्माओ ने भक्ति और कला के कसे अनूठे जोड बन्द बठाये हैं ? यद्यपि अचानक देखने पर एक और अमित आश्चय होता है कि स्तभो का अलकरण, इनकी कारीगरी ऐसी विचित्र है कि सब एक दूसरे स अलग थलग जान पडते हैं लेकिन गौर से पनी खोज करने पर सभी का डिजाइन, श्रृङ्गार और लास्य आकषण एक जसा ही मिलता है परन्तु फिर भी नजर चूकी कि मृग-जाल कई परिवतन अजीब से बदलाव कला का मायाजाल अनूठा है।

बडी भव्य शानदार गलरिया, प्रासाद पीठ, भूरे रग का बडा प्रस्तर, नागर-शली से अलकृत शिखर शीश हल्के श्वेत सगमरमर की अदभुत चिकनाई और चमक मध्य मडप सभाभवन प्रदक्षिणापथ चवरो की जाली विवर युक्त बारीक झालरें, द्वार खडो की चित्रकारी शुभ प्रतीको से मडित्र सौंदयशाली मूर्तिया छत्र मडोवर पर अनोखी कलाकृतिया जैन स्थापत्य शली की अनत गध गूज लिये हुये बडी ललित मोहक सगतराशी तभी तो दूर दराज तक से असख्य भक्त, कलावत चित्रकार शिल्पी और साहित्यकार इस देखने के लिये दौडे आते हैं।

एक मुनिश्री बताते हैं कि राणकपुर के इस मन्दिर प्रतिष्ठान मे धरणीशाह न चारो ओर निम त्रण भेजा। कुम्कुम पत्रिया परिणाम रहा है कि लगभग बावन पचपन बडे जनसघ शामिल हुए और पाच सौ छह सौ साधु मुनि पधारे।

मन्दिर क मध्य भाग म देखती हू चतुमुख देवकुलिका, जहा बडी मनोहारी मूर्तियाँ नारी सौ दय आभूषणो से श्रृ गारित अधिकतर नत्य मुद्राओ म है। विभिन्न ताल लय भगिमाओं वाली नतकिया इनके चारा ओर रग मडप बशी की तान छेडती नाचती हुई देह भगिमाए घु घरुओ से मदालस वातावरण पदा करती हुई कई पुतलियाँ बहुत सी नत्यागनाए स्तभो पर पशुओ, पक्षियो के चित्र फूलो की क्यारिया एक एक रेखा जीवित हाथी सिह और घोडा के बडे ठोस और सजीव रूप ।

दूसरी, तीसरी और चौथी मजिलों म जन तीथकरो की शात सौम्य और गम्भीर सु दर मूर्तिया व्यवस्थित हैं लेकिन यह भी सत्य है कि ध्यान से देखने पर सारी मूर्तियो पर छता क गोलाकार कटावो पर छना छज्जो की किगरिया पर और बारीक तराशी हुई सगमरमरी जालियो पर कहीं कहीं हिन्दू शिल्पधारा की स्था-पत्य कला का भी प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। साथ ही उस युग की भावना, जन पद उद्वेलन की झलक भी झांकती हुई दिखाई देती है अन्यथा जन विचार धारा म घुले गु थे इस मन्दिर की अनेका मूर्तिया के हाथा म ढाल तलवार का टकन

भला क्यो ? कई नेत्रो मे कुछ अकुलाहट की सी परछाई क्यो उकेरी हुई है ? शायद ये सब छुटपुट भाव परिवतन युग घम के पृष्ठो की छाया है ?

मूल गभ गृह म आदिनाथ प्रभु की मूर्ति है। जैन तीथ कला साहित्य सभी कुछ है। सब कुछ अतुलनीय और दशनीय। पवित्र त्रिवेणी रूप।

कहते है कि इस भव्य मन्दिर को बनवाने मे निन्यानवे लाख रुपये खच हुए, लेकिन प्रामाणिक तौर पर, क्या अन्दाज लगाया गया है ठीक ठीक नही कहा जा सकता। वसे निर्माणकाल और खच वाली बात चली तो बडी रोचक किंवदती सुनने को मिली—कि एक दिन धरणीशाह ने घी मे पडी मक्खी को निकाल कर हथेली पर रख लिया। फिर जूती पर किसी शिल्पी ने देख लिया। सबसे कह दी यह बात। सभी ने सोचा कि यह तो बडा कजूस है। कैसे इतना बडा जिनालय बनेगा ? परीक्षा लेने हेतु मुख्य शिल्पी ने कहा कि मन्दिर की नींव भरने के लिए सब धातुओ का प्रयोग होना चाहिए क्योंकि इतनी विशाल दीवारें छतें टिकेंगी नहीं। धरणीशाह ने सवधातुओ की ढेरिया लगा दी। शिल्पियों की बुद्धि हैरान ! अर्थ समझा कि मक्खी वाली घटना कृपणता नही थी बल्कि बुद्धिमत्ता की यथाथ परिभाषा था।

इस अन्तकथा को सुनकर सहज विश्वास हो जाता है कि वास्तव मे प्रकूत धनराशि खच हुई होगी और बीस बाईस वष भी अवश्य लगे होगे।

मुख्य मन्दिर के एकदम सामने दो जन मन्दिर और है। इनमे से एक शायद पाश्वनाथ का है। बाहरी पूरा भाग मोहक प्रतिमाओ से रचा बसा कामयुक्त युगल मूर्तिया मैथुन युग्म मूर्तिया रागात्मकता से भरपूर समझ म नही आया कि यहा यह राग शृंगार क्या ? भगवान महावीर के अनुयायी क्या पचा पाये होगे इन्हें ? स्वीकार कर ली होगी यह भावभूमि ? आत्मदशन के किस प्रमुख बिन्दु को दर्शाने के लिए इन मूर्तियो को कला के ऊचे शिखर तक माधुय दिया है ? इनका टकन किया ? समझ से परे लगा है यह अध्याय ऊहा पोह की स्थिति मे कला के अटूट भण्डार के बीच एक अनुत्तरित प्रश्न मन पर छा उठता है। शायद यहा भी भक्ति का कोई गहन दशन होगा।

लोकात्माश्री श्री राणी सती

भारत की हवा मे जाने कितनी अलौकिक दु स्साहसी और अदभुत घटनाए घटती रही हैं और अपने अमर हस्ताक्षर करके आन जान वाली पीढी को प्रेरणा बीज सौंपती रही हैं। कालातर मे ऐसी ही घटना प्रथाएँ बन गयी, और लोकजीवन मे आत्मसात होकर एक परम्परा का सूत्रपात करने लगी। इन्ही मे स एक प्रथा रही सती प्रथा। जाने कब से इसका आदिकाल रहा होगा। जन जीवन की एक जरूरी सी घटना लेकिन राजा राममोहन राय जसे ही इसके खिलाफ तूफानी विद्रोह लेकर सामने आये तब यह सामान्य सी लगनवाली घटना अचानक असामान्य हो उठी। फिर आये विलियम बैंटिक। राजा राममोहन राय की आवाज से प्रेरित होकर उन्होने इसकी जानकारी लेने क लिए जब प्रयास किया तब उनको बडी हैरानी हुई कि केवल 1828 ई० मे ही लगभग तीन सौ चार सौ विधवाए अग्नि की प्रज्वलित लपटो म होम हो गई। तडपकर उसन बना दिया एक कानून कि यदि वास्तव म अपने मत् विश्वास पति के प्रति असीम अनुराग स्वय ही इच्छा शक्ति के बल पर कोई विधवा सती चरण उठाती है वह विचारणीय शाय हो सकता है पर तु यदि उसे जबरदस्ती विवश करके चिता म झोका जायेगा तब यह जुम होगा। जुम भोक्ता दण्ड, कद और आर्थिक जुर्माने क लिए तयार रहेगा। कानून लागू हुआ, ताकि भविष्य म बिना मर्जी क कोई भी विधवा नारी इस अमानवीय कृत्य की शिकार न बनाई जा सके, परन्तु सती प्रथा रुकी कहा? दुबके चोरी छिटपुट रूप मे कही न कही इसके समाचार आते रहे। लोकजीवन हैरत और असमजस म पडा रहा कि इस क्रिया की सत् असत्' 'इच्छा अनिच्छा की कसौटी क्या हो? वास्तविक सती के पवित्र सत् की हम पूजा श्रद्धा कैसे करें?

आखिर व्यापक जन समूह की उत्सुक दृष्टि की तुला पर खरा खोटा सती कचन कसा जाने लगा। सतीत्व गरिमा स भरे, चिता के अगारो का लपलपाती लपटो को ये चरित्र पुष्प मालाओ की तरह हसते हुलसते जब धारण करन लगे तब वहा कानून, दड कद और आलोचनाए धराशायी हो उठीं। सती की जय जयकारा पूजा प्राथनाओ और आदर परिक्रमाओ स व स्थल पूत पूज्य हो उठे। सुहाग जाग, यहा कु कुम हल्दी चन्दन चर्चित भाल झुकाने लगे। मल क रूप म असख्य दानादिया की, मन की वाछित इच्छाए पूर्ण करने की, आशाओ म भरे मनौती

मागने वाले भक्त जनो की उन स्थला पर भीड लगने लगी। जाति धम, भाषा, रहन सहन, ऊ च नीच सभी बधन सीमाम्रो से मुक्त होकर केवल आदर भावना यहा पर नमित होने लगी। ऐसी सती नारिया माता देवी की अपार शक्ति के रूप मे मान्य होने लगी।

रग रगीला जौहर पराक्रमी और आन बान शान के लिए सुविख्यात राजस्थान इस रूप मे भी अग्रणी रहा है। न जाने कितनी लोकमा य सती गाथाए यहा वर्षों की समय सूचिकाम्रो पर टकित है। जहा वष भर मेले लगे रहते हैं। धूप दीप जलते हैं और हल्दी रोली सुते कच्चे सूत की मनोपरिक्रमाम्रो के फेरो के साथ श्रद्धा नारियल चढते हैं। घी दूध बतासे कलावे चदन सामग्री, सुहाग शृङ्गार और जोडे-पोशाक अचन सहित अर्पित होते हैं। ऐसा ही जीवट भरा सत् आत्मा मे प्रबल-शक्ति पाने की कामनाए निसृत होती है। सती थामले सती म दिर और सती टेकडी के रूप म ऐसे स्थान तीथस्थल देवस्थान बन जाते हैं।

राजस्थान का एसा ही एक स्थान है झुभुनू। सबसे अधिक सती स्थल और कथा कहानिया यहा के आसपास के वातावरण मे फली हुई हैं। पुरानी गाथाम्रो की चर्चाएँ प्रत्येक नयी गाथा के साथ घुलती मिलती रहती हैं। कोटडा की सती, जिसने अपने विवाह म दिये गये सुहाग पलग की बाई पाटी पायो से अपनी चिता का विमान बनवाया। सूरपुरा की सती कवर, जिसने अपनी ससुराल के पूरे परिवार को अपने पति की मृत्यु से एक दिन पहले ही अवगत करा दिया था और अवाक परिजना के सामन सती होने की तयारिया मे व्यस्त हो गई थी। यह भविष्यवाणी उसकी सत्य हुई और वह सती हुई। गोल्याणे तथा गोविंदपुरा सतिया, अनेको कथाम्रो की सती-लडिया गाव नदी पहाड टीबे ढाणी, खेडो के आसपास लिपटी गु थी इधर मिलेंगी परन्तु झुभुनू की राणी सती इन सभी मे अत्यधिक प्रख्यात, मान्य और श्रद्धा भक्ति से युक्त है। समस्त सती तीर्थों मे श्रेष्ठ सुप्रसिद्ध लोकजीवन मे पवित्र आस्था का प्रतीक। लोकधम का यह पुण्यवान लोकतीथ है। इसके साथ राणी सती की स्वाभिमानी, वीरतापूण तेजोमय गौरव गाथा जुडी हुई है, इसलिये लोगो के अत-मन मे सती माता का स्वरूप कल्याणकारी और समस्त विघ्न बाधाम्रो से रक्षा करने वाला है इनकी आत्मा का सद्गति सतोष देने वाला यह राणी सती का म दिर पुण्य धाम है। लोकधारणा है कि अगर महा पातकी भी इस सती के महिमा मडित तीथ के दशन कर ले तो उसके पाप कट जाते हैं और आत्मा शुद्ध होकर खरे कचन सी हो जाती है।

चौमू, रीगस, सीकर और फिर आता है झुभुनू का कस्बा। इससे कुछ पहले ही प्रसिद्ध राणी सती का म दिर है।

टूरिस्ट बस, कारें और जीपें खडी है। कोई न-कोई आयोजन दशन-वदन यहा चलता ही रहता है।

मैं वहा की सम्पूण जानकारी लेने और मदिर के दशन की जिज्ञासा अभिलाषा लिये अपने आपको उस परिवेश म लीन कर देती हू। मुझे पता लगता है कि इस मदिर की सवाधिक ख्याति का कारण है कि राणी सती नारायणी देवी के कुल मे ही बारह सतियाँ इस वक्त तक हो चुकी हैं। राणी सती का ही नाम नारायणी देवी था। यही मा शक्ति और दादी माँ के नाम से भी सम्बोधित की जाती हैं—गीता म भी जयजयकारो म भी।

भक्त दशनार्थियो (नर नारी) के ओठो पर सती महिमा गूँज रही है द्वार से ही—

'आज म्हारे आगणिय मे
राणी सतीजी आई जी,
राली माली सिर पे चूनड,
तारा खूब सजाई जी,
नाक मे नकबेसर साहे
माँग सिन्दूर लगाई जी
चदन मेहदी, केसर पायल,
त्रिशूल हाथ लिये आई जी,
झुझुनू माही आप बिराजो
राणी सती जी माई जी ।"

बडी विशाल मदिर की आकार सीमा है—पत्थर सगमरमर की बडी चित्रात्मक सती स्थल की छवि किसी शानदार राजमहल की तरह सुदर प्रस्तर कला से अलकृत सामने से बीच म छह सात मजिलें। दोना ओर छतरियो तिदरिया युक्त गुम्बद। शीष पर ध्वजाएँ सती पताकाएँ। दोनो ओर विशाल प्रकोष्ठ इन पर झुके नुकीले छज्जा के मेहराबो चौमुखे और गुम्बद कलश। दो ना मजिला के बाद बाजों की रेलिंग। तीन मजिला के बाद फिर दानो ओर छहमुखी गोलाकार तिदरियाँ और कील कलश गुम्बद। इस भ य मदिर परिवेश के बाहरी शिल्प सौंदय से दृष्टि हतप्रभ रह गयी है। बाहर ही एक तरफ देवी राणीसती पर पूजा चढावे की सामग्रियो से भरी दुकानें हैं। पूजा प्रसाद भण्डार है। चाय नाश्त मिठाइया की भी दुकानें हैं। शीतल पानी के मशीन ठेले खडे हैं। मोली मालाएँ और पुष्प सुगध सजे हुए हैं। मैं पूजा सामग्री लेकर भीतर जाने को तत्पर हाती हू।

सीढियाँ चौके पार करके आता है लम्बे आला युक्त ऊँचा मेहराबदार दरवाजा इधर उधर हैं साफ चिकने पत्थर की शीतल चौकियाँ। सामने ही विस्तृत खूबसूरत लम्बा चौडा सती स्थल का व्यापक भीतरी परिवश। विशाल बरामदे। मेहरावें आले गोख घण्टे झालरें ध्वजाएँ। प्रागण छाटे छोटे आँगन। गुलम्ब। सुन्दर स्वच्छ फश। चित्रा स सज्जित दीवारें। सपीलें कलात्मक स्तम्भ पत्तिया झाडियो की बन्दनवारें धूप दीप नवेद्य, चरण स्वास्तिक चिह्न थापे सतिये दृष्टि को मन को खीचने-बाँधने वाला भक्ति श्रद्धा और पूजा आरती का बडा आस्थावान

मनोहारी दृश्य स्वरूप। वर्षों से वक्त की हर आहट को शुभाशीष देने वाला मंदिर, भक्तों की कामनाएँ मानताएँ जहाँ पूर्ण होती हैं। जाने कितने सघन जंगल प्रांतर लांघता फांदता उमडकर आता रहता है जनसमूह का प्रबल प्रवाह। आकर साष्टांग प्रणत हो उठता है सती माँ के पावन चरणों में। गौरवमयी पुनीत स्मृति में ऐसी स्मृति जो गीतों का भजनों का, दैनिक प्रार्थनाओं का लोकगीत शैली का इतिहास अमर कथानक बन गयी है। धर्मप्राण और सामाजिक संस्कारी ग्रन्थ।

'राणी सती दादी मैया पलक उघाड
हम कदका खड्या पुकारे बेगी आवोजी—
मकराणे का मंदिर थारो सोहनो,
थारी ड्योढ्या री छवि न्यारी दरस—
दिखावो जी आरती उतारां थारी चाव सू —
सू कोई पेडा, श्रीफल मोदक भेंट चढावां जी ।'

जैसे ही हम सती स्थल की ओर बढते हैं कि सामने काले सफेद संगमरमर का बहुत सुंदर आंगन गलियारा है। दोनों ओर पत्थर जडे खम्भे। इन पर सती माँ की महिमा। हरे भरे पेड। पुष्पगुम्फित झूलती हिलोरती बेल पाखें चूडीदार श्वेत चौकियाँ इन पर संतरी पोशाक में बिरजिसधारी खडे हैं दोनों ओर पहरेदार। हाथों में बंदूक। लम्बे पतले स्तम्भ। लक्ष्मी श्री सरस्वती की सुंदर प्रतिमाएँ। बारीक फूलवत जाली का कलात्मक चौखटा। परियाँ। बीच में है कदंब छाँव तले सुरभि से पीठ टिकाये बंकिम मुद्रा में ब्रजकिशोर बाँके बिहारी। राधारानी। मुरली की गर्वित मुद्रा। बडा जीवंत वृत्तचित्र। ऊपर चौखट में खुदी फूलवदनवार। स्वास्तिक मंगलमय अंकन। सबसे ऊपर रेलिंग के बीच त्रिशूल धारिणी शक्ति माँ। दोनों ओर शक्तिपुंज सिंह। आभाचक्र और ध्वजा कील, थामनों पर विराजती साधिकाएँ।

वहाँ लटकते विशाल घण्टे की घनघनाहट से अजीब सी सिहरन व्याप्त हो उठती है। श्रृंगारित जीवित रूप सौंदर्य अग्नि के धधकते चटखते अंगारों में अगिणित रक्तिम गुलाबों में कहीं मुस्करा उठता है। केवडा चंदन बन महकने लगता है। केसर-चूर्ण सी भस्मी दिशाओं तक तरने लगती है। अंधकार में एक उल्का झिलमिलाती है। घर गाँव, वंश गोत्र और संस्कारों पर अमर वरदान बनकर छा जाती है। सुहाग टीका और भी अधिक दीप्त हो उठता है। कैसा विलक्षण प्रिय मिलन से मिलन! दुःख दर्द, पीडा जलन और जरा मृत्यु से मुक्त स्वतन्त्र स्वर्गीय स्वर्णिम-ज्योति से आलोकित सहसा राणी माँ की महिमा-वंदना चेतना लौटा देती है। सती स्थल एकदम आडम्बरहीन शुद्ध मान्दिर, पूजा चढावे की सामग्री से ही भाँपा जा सकता है कि यहाँ अमर कथा-स्थली है। प्रार्थना में कहानी नहीं, सत्य-कथा का गुंजन कानों में श्रुति ऋचाओं के वेद पुराण घोल रहा है। सत्य स्तुति के माध्यम से जैसे बीता हुआ घटनाचक्र सामने साकार हो उठता है।

'बाबुलघर नाराणी सजी मोत्या बिचली टिकली लाल वसल गात्र है जालीराम, ज्याक तनघन जिला रिशाल उणा सग हुई सगाई ए कोई ध्यावे कामण गाया सायणा सजी विप्र वेद को पाठ वर कन्या चवरी चढ्या स चुनरी के पल्ले गाठ क सजना न दई मिलाई ए जालीरामजी री पाल मे सजी घोडी एक सुजान तनघन योछावर हुया स शहजादे को ले लई जान क दुस्मन घात लगाई ए मुकलावो कर लौटिया सजी साथीडा रो सग टीबडिया री ओट सू जो कोई छिप बठयो भडचद क दुस्मन फौज बुलाई ए रणभूमि माँ कूदगा सजी सिर केसरिया पाग ज-दुर्गे ज ज जगदम्बे वीरा खेल्यो फाग वीरगति तनधन पाई ए सेवा म राणा खडयो सजी चिता चिणी निज हाथ दाऊ कर जोड़ू सीस नवाऊ जदुर्गे-जैमान क भस्मी सीस उठाई ए सहर-झुझुनू के बीड मे सजी घुडले पग दिया राप, सेवक दरवाजे उब्या खडयो निहारे थारी जोत आरती राणी सती री मगला गाई ए '

श्रद्धानत शीश इस महिमा गान पर झूमे जा रहे हैं। मैं इस अमर गाथा का अथ पूछती हू। अजीब बहादुरी सतीत्व आत्मशक्ति, क्षत्रिय धर्म समान भरी पूरी कहानी यहाँ प्रत्येक जनमानस का भिगो भिगो देती है।

राणी सती का विवाह सेठ जालीराम अग्रवाल के पुत्र तेजामय तनधनदास के साथ बडे ठाठ बाट क साथ सम्पन्न हुआ। कहा जाता है कि पूवजो क दिल्ली बस जाने पर भी सेठ जालीराम हिसार म रहकर अपना व्यापार कारोबार देखते थे। यहाँ का नवाब था झाडचन्द। इसने सेठजी को अपना दीवान बनाया इससे इस परिवार वश का मान सम्मान द्विगुणित हो गया। जनता म सेठजी आदर स्थान पा उठ। वसे भी सेठजी म वीरता, स्वाभिमान साहस और बुद्धिचातुय गजब का था। सिर कटा दें, मगर झुके नही। यह था उनका जीवन के प्रति सिद्धान्त। ऐसा ही था पुत्र तनधनदास। डोकवा के सेठ गुरसामलजी की पुत्री नारायणी बाई भी इसी प्रकार के गुण सिद्धान्त लिए आयी सौंदय, स्वाभिमान वीरता की प्रतीक। दोनो मीना मितवा एक दूसरे से सम्मोहित। एक प्राण, दो शरीर। वक्त आया गौने का (द्विरागमन)—इधर सेठजी म और नवाब म दिली कटुता के बीज अकुरित हो उठे। एक दूसरे की सूरत से भी परहेज। आँखो म बबूल उग आये। सेठजी के पास थी एक अमिसान दशनीय कीमती घोडी। इस पर सर करता था उनकी आँखो का तारा तनधन। मलयज के सुगधित मद मद झोंको सी इस घोडी की चर्चाएँ आस पास फल रही थी। घरो सरायो स लेकर रजवाडा तक। नवाब क शहजादे के कानो म रोज कई कई बार इन चचाओ का शहद टपकता था जो कलेजे म जाकर दुधारी तलवार की सी चोट करता था। नवाब का सिरचढा बेटा—ठन गयी जिद घोडी लेने की। लोभ लाभ लालच, खुशामदें धमकियाँ नवाब का ओर से नजर की गयी, लेकिन बेटे की प्यारी घोडी सेठजी भला क्या दन लगे? जिद्द हठीले तेवर बेटा के पिताओ की इज्जत की तराजू। फसला हो कस? बिचौलिया

की समझदारी मानकर दोनों पिताओं ने हालांकि अपने अपने बेटों को मनाने फुसलाने की कोशिश भी की, परन्तु हठ अगद के पांव की तरह अडिग। शहजादे ने एक बार घोड़ी चुराने की कोशिश भी की। घोड़ी भी स्वामी की चहेती। स्वामी के प्रति वफादार जोर से हिनहिना उठी—मनसूब की धज्जियां उड़ गयीं वह भागने ही वाला था कि घोड़ी के मालिक तनधनदास का नुकीला भाला हवा में सनसनाता हुआ आया और शहजादे के कलेजे का बेध लहू के समदर का आकार ले बैठा। शहजादे की मौत ने सेठजी को अपने पुत्र के प्रति आशंकित जो किया कि वह हिसार त्यागकर तत्काल झुंझुनू में आ गये। झुंझुनू का नवाब मन ही मन हिसार के नवाब से खार खाता था। बेटे की मौत, वह भी यों अकाल मृत्यु! नवाब प्रतिहिंसा से धधक उठा लेकिन दुश्मन अब दुश्मन की सीमा में जा चुका था। वह दांत पीसकर हाथ मलता रह गया। ऐसे ही दौर में वक्त आया था सेठ के पुत्र के मुकलावे (गौने) का। नवाब ने अपने जासूसों को पहले ही जर्रे जर्रे पर चिपका रखा था। यह गौने की खबर उसे मिली। षड्यन्त्र के जाल बुने जाने लगे। तय हुआ कि सशस्त्र भारी सेना का जमाव उन रास्तों में छिप जाये, जहाँ से सेठ पुत्र अपनी नववधू को लेकर लौटेगा।

आखिर लौटना ही था। घनेरे पेड़ों से गुथे गहन जंगली रास्ता के बीच नवाब की सेना उन पर टूट पड़ी। रक्त रंजित भयंकर युद्ध! अनेकों वीरपुंगव हताहत। सेठ पुत्र बड़े शौर्य दम से शत्रु सेना का संहार करके अपनी नवोढा की पालकी की रक्षा करने लगा। गाजर मूली की तरह उसकी असिधार सभी को काट रही थी कि एक शत्रु ने पेड़ के पीछे से निकलकर धोखे से पीठ की ओर आकर सिर गर्दन में खांडे का वार किया। तनधन वीरगति को प्राप्त हुआ। मुट्ठी भर शत्रु भाग छूटे। उधर पालकी के पर्दे की फांक से दो नेत्र प्रशंसा और ज्वाला बने अभी तक युद्ध दृश्य देख रहे थे। पति का मृत देखते ही शिव नेत्र हो गये। पर्दा चीरकर साक्षात् असुर संहारिणी चण्डिका बनकर नारायणी बाई प्रबल वेग से पति की तलवार लेकर उन अभागे शत्रुओं पर टूट पड़ी इक्का दुक्का खाई झाड़ी में गिर पड़कर शेष रहा होगा। सभी को मार कुचलकर रक्त भीगा खड्ग लेकर वह जब पति की देह तक लौटी, तब अपने उत्तरीय से मृत तनधन को हवा करता हुआ राणा जाति का एक गायक वहां शेष बचा हुआ उसे दिखाई दिया। उसने देखा कि जिस लाजभरी छुई मुई सी वधू कली को अभी अभी विदा कराकर लाये थे, वह क्षण भर बाद ही कैसी माँ दुर्गा माँ काली का रूप बन गयी! और अब निमिष भर में ही उसका चेहरा सम्पूर्ण व्यक्तित्व सतीत्व की आभा से उत्कीर्ण हो उठा। क्या दवी चमत्कार है यह! तभी उसके कानों में सुधावर्षण हुआ "मैं इसी स्थान पर पति के साथ सती होना चाहती हूं। चिता बनाओ। दायजे की समस्त वस्तुओं को एकत्रित करके मेरी गोद में पति को लिटा दो। प्रतीक्षा करना जब चिता शीतल हो जाये, तब भस्मी लेकर मेरे श्वसुर गृह की ओर प्रस्थान करना। ध्यान

रहे कि जिस घोडे पर बठकर तुम यह भस्मी लेकर जाओगे, उस घोडे का पाव जहा भी थमक्कर रुक जाये, वही इस भस्मी को रख देना मेरा स्मारक देवल उसी स्थान पर बनेगा। राणी सती के रूप मे वही पर मैं दीन दुखियो को, भक्तो का, आतप्राणियो को आशीर्वाद दूगी कुशल क्षेम सहित सभी का कल्याण करूगी '।

इस आदेश का पालन उस अतिम साक्षी रुप राणा न किया। जब वह पवित्र भस्मी लेकर चला तब उसका घोडा झुझुनू के पास इसी स्थान पर अचानक रुक गया। राणा ने भस्मी को पावन स्मति के रूप म यहा रखकर नारायणी बाई के पितृ और श्वसुर गृह को सारी सूचनाए दी। घटना क्रम का ब्यौरा दिया। तब बना यह अप्रतिम विशाल मदिर राणी सती का प्रसिद्ध देवल।

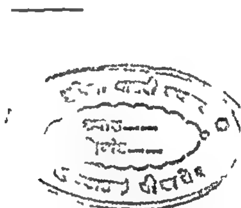
सती होने का पुण्यकाल वि स तरह सौ बावन मागशीष कृष्णा नवमी दिन मगलवार का मिलता है, लेकिन मेला जुडता है भादो म। मैं इस विरोधाभास पर जब आश्चय व्यक्त करती हू तब बताया जाता है कि यह मास सतियो की पूजा के लिए बहुत उत्तम और धार्मिक विधान के अतगत उपयुक्त माना गया है। चू कि राणी सती सभी सतियो की सिरमौर मानी गयी है इसलिये विशेष पूजन विधान की तिथि पुण्य का ध्यान म रखकर उनकी स्मति म यह मेला भाद्र कृष्णा अमावस्या के दिन लगता है। बातचीत के माध्यम से यह तथ्य भी सामने आया, जो अधिक साथक और युक्तिसगत प्रतीत हुआ कि राणी सती की ससुराल म जब मत आत्माओ के प्रति धार्मिक सस्कार, दान पुण्य और हवन पूजा आयोजन आरम्भ हुए थे तब उस परिवार म ये धार्मिक आयाजन मृत आत्माआ के सम्मान श्रद्धा म बहुत समय तक चले थे। दूसरा कारण यह भी रहा कि राणी सती के श्वसुर सेठ जालीराम के वश परिवार की तेरहवी अतिम सती गूजरी इसी भाद्र कृष्णा अमावस्या को हुई, इसीलिये सभी तेरह सतिया की आदर श्रद्धा भरी भाव भीनी पूजा सामूहिक रूप म इसी दिन सम्पन्न की जाती है।

मैं अब तक व्यस्त थी राणी सती क कथानक के मोती माणक चुनन म। जस ही मरी झोली इन बहुमूल्य जवाहराता से भर गयी, तब इस भव्य विशाल मदिर का कोना कोना फिर देखती हू। कदम कदम पर अकित प्रशसा के अर्पित सुमन प्राथनाओ की ब दनवारें आस्थाओं से छलछलाते कलश यश-कीर्ति की उडती फहराती पताकाए उत्तग जीवट क ऐतिहासिक धार्मिक मत्र श्लोक लोक-जीवन म टकित विश्वास क थापे स्वस्तिक चिन्ह भक्ता पुजारियो क उतावले पावो की पदचापा की पुनीत छुअन के भित्तिचित्र और अधर अधर पर स्तुति वचन।

अनको धमशालाए यहा भक्त यात्रीगणो क लिए बनी हुई हैं। कौन जाने स यद्यपि प्रतिदिन ही यात्रीगण धार्मिक मान्यताए आस्थाए लेकर आते हैं, लेकिन मेल क दिना म तो इस लाक तीथ राणी सती क देवल पर असख्य धमप्राण भक्तों की भीड का सागर उमडता है। इतनी अधिक और बडी धमशालाए, बरामद, चबूतरे

भी कम पड जाते हैं । गध चूरण की सुवासों से और प्रार्थनाओं के समवेत स्वरों से यह इलाका भर उठता है । न जाने कितने श्रद्धालु जन मुक्त गुप्त दान देते रहते हैं । प्रचुर मात्रा मे आती रहती है यह धनराशि, ताकि इस मन्दिर का रख रखाव, साज सज्जा, बाहरी भीतरी सौन्दय सुषमा अधिक से अधिक चित्ताकर्षक होती रहे । इस सती देवल की गौरव गरिमा दिनदूनी बढती रहे, दीप्त होती रहे और सती की दिव्य आत्म ज्योति इसी प्रकार दिग दिगत तक गू जती रहे मेले की मानता शोभा यो ही धम ध्वजा बन लहराती रहे ।

'आई बडी मावस सती दादी भादव को मेलो लग रहयो माता थारो झुंझुनू जी लाल रग रो चू दडी सती के मन भाई जी चन्दा सूरज तारा चिमक अपने हाथ बनाई जामें लागा साचा माल झुंझुनू नगरी जा के देखो कैसो है कमाल देखकर भक्ता ने राणी सती मुसकाई माई थारी जोत सवाई ए—''



एक चमत्कारिक सिद्धपीठ :
श्री मतावीर जी

"नम नाके द्राली मुकुटमणिभाजालजटिलम
ससत्पान्पम्मोजद्वयमिह यदीय तनुभृता
भजज्वालाशान्त्यै प्रभवति जल वा स्मतमपि
महावीर स्वामी नयनपथगामी भवतु मे

धूल धूसरित पथरीले पहाडा क क्षेत्र विस्मय से फल जाते हैं ये ग्राज कसी ग्रलौकिक प्राथना मे लिपटी सूरजिया भोर के प्रकाशित छद झरे हैं। किस मगलमय भविष्य के सकेत मे दिशाए नमित होकर स्वय साक्षात् प्राथनाए बनी हुई हैं ? कस ग्रस्फुट से ग्रनगू ज मन्त्र ? किसकी सारगभित वाणी कर रही है एक एक ग्रक्षर का ग्रथ ? यह कसा ग्राह्वान है विकल विरल सा ? ग्राग्रा, देखो, नयन पथ स कौन भीतर गहर ग्र तमन म कण कण के हृदय तल म उतरता जा रहा है। इन्द्र मणि की ग्राभा से उदभासित शीश किरीट देवगण घाती है जिसके युगल कमल पद की विष्णु ग्राभा का जिसक चरणा की वायु सरित गति करती है ग्रखिल सष्टि के दुख-ताप का हरण जिनके ध्यान मात्र स मन म शाति ग्रौर ग्रनहद नाद की सलिला जागृत होती है ऐसे भगवन स्वामी महावीर ग्राये पवता क नम्र सूयमुखी के पुष्पा की चन्दन खचित हथेलियो से उत्कीण हुए जा रहे हैं। ग्राज की प्रात कालीन उषा ग्रारती का यह कसा ग्रनूठा शखनाद है ?

तभी हुग्रा किरणा का नयादित पदापण। नीबुग्राई धूप के चटकील रगा तले दूर तक फला जगल चाक उठा। किरन कलौ की सुनहली केशराशि से झरन लगी सूयलोक की गुनगुनी गध गू ज उठी हवा की लय पर पत्तो की भार प्रभाती फूलो की सुकुमारिता पर तुरन्त बिछन गये मोरपाखी छाया क चिकने ग्राचल। देखते ही देखते पूरा मैदान, सार खत खलिहान धूप क शाश्रमहन हो उठ।

कल कल बहती गम्भीर नदी क पारदर्शी दपण म उषा की मानल छवि बिबायित हो उठी। समय नौका के खुलते उडत वासती पाल पत्र पत्र भरत मजरी-रप, वृक्षा की सुगधित मनवाली साखा की लुभावनी मुस्कानें नीम चमली के जूडा की चपई महक। कुए-नालावा की पलका म ग्रलसाय सपना की ग्रामीली सजीली छुअन कनेर, कर ग्रौर हरवेरी की नटें गुलझान-सवारत ग्रामीण ग्राचल क नटखट भवरे। नवमल्लिका से हुमन मिलन पात नान पक्षिया क ग्राकाशी पाखिने,



वगराई ग्रमराई के ग्रागन मे कोपलो लताग्रो के वेल बूटेदार किशमिशी-ग्राचल, गुच्छ गुच्छ पलाशो के धवधवाते सुख सुख फूल, कसा तो ग्रदभुत प्रभाती सौदय ? पवती चाटियो घाटिया मे बिछे फले गेरू-खडिया से लिपे पुते, रगाली मढे गाव के घरौंदे, पुखराजी पोखर के फिरोजी पानी से निकलती हुई सद्यस्नाता गाय भसो के मनस्वी रूप ।

कोयल की कुहुक के साथ तभी कही बहने लगती है वसी की मादक कल्याणी धुन । जगल की एक एक पगडण्डी सुबह की कुसुम पराग केसर-सी मदिर मदिर मलयजी खुशबू से भीग भीग उठती है । गाव के छप्परा स उठने लगता है मन्न की गध लपेट ऊना कासनी धुग्रा ग्रौर उधर एक टीले पर गायो के झुड को चरागाह मे छोडकर ग्रा बठता है एक चरवाहा युवक गले म चादी की गडेली, कानो मे मुरकिया ग्रौर सिर पर केशरी पाग । माटी का यह भगवत् पुन ग्रलगोझ पर एक सनातनी लोकगीत की धुन निकालने लगता है । लोकधुन के साथ साथ ग्रचानक कोई ग्रदृश्य छाया धीमे धीमे ग्रलापने लगती है —

'मगलमय मगलकरण
वीतराग विज्ञान
नमो ताहि जाते भये
ग्ररह तादि महान "

ग्रपूर्ण ग्रानन्द का ग्रावेग ग्रलगोजा गिर जाता है । उसी समय सामने एक ग्रलौकिक चमत्कार ! गायो के झुड मे से निकलकर श्वेत श्यामा कजरी गाय हरकी सी दौडती है ग्रौर सामने वाले ऊचे ढलवा टीले पर चढकर एक स्थान पर खडी हो जाती है । उसके गोराग स्तनो से स्वच्छ दूध के झरन निसत हा रहे हैं । सारा दूध उस स्थान की माटी मे समाता जा रहा है । गाय के नेना मे ग्रसीम सन्तोष लहरा रहा है । स्तन खाली हो जाते हैं । गाय के शात धीर कदम फिर से गो झुड की ग्रोर लौट जाते हैं । चरवाहे की समूची काया जड होकर रह जाती है । जगल भी जसे स्तब्ध एक वशीकरण म जसे हर सास मुग्ध ग्रौर विस्मित यह क्या लीला रही प्रभू ? चरवाहे की वाणी मूक ग्रौर मन ग्रसख्य जिज्ञासाग्रो का शकित केन्द्र मन ता जाने कितने दिनो से चोर शकालु हो रहा था ! कारण भी तो स्पष्ट था कि हर सध्या केवल इसी भूरी कजरी के स्तन रिक्त मिलते थे । सबसे ग्रच्छी स्वस्थ गाय ढेरो दूध फिर यह क्या ! सारा दूध जाता कहा है ? कोई प्रेत भूत बाधा ? किसी की नजर टाटका की पैनी मार ? कोई ग्रसाध्य रोग ? कुछ जहर मोहरा धतूरा का प्रकोप ? ग्राखिर क्या ? इसलिए ग्राज दृष्टि से पहर निरीक्षण किया ग्रौर यह विलक्षण चमत्कार देखा । फिर तो एक दो क्यो कई दिन यही ग्रपूर्व क्रम देखा । ठीक उसी टीले पर उसी ठौर पर ! क्या यह ?

अनबूझ पहेली तो सुलझ गयी, लेकिन इसी टीले पर दुग्ध झरित क्या होता है ? इन धूल चट्टानी पर्तों के नीचे कौन सा रहस्य है ? उसका मन बेकाबू होने लगा। एक दिन चुपचाप अटोव वह फावडा कस्सी लेकर उसी स्थान को खोदने लगता है। बहुत नीचे पाताल से जसे कोई गम्भीर आवाज आती है— कौन मानव पुत्र हो तुम भाई ?' मैं ? मैं तो एक चमकार हू । 'चमकार ? गाय चराने का फिर कैसा काय, मानव ?' जाति से चमकार हैं हम लोग परन्तु मेरा परिवार पीढ़िया से खेती करता आ रहा है। पशुपालन और दूध दही का व्यापार भी। इसीलिए चरवाहा हू । मेरी गाय का दूध प्रतिदिन इसी स्थान पर क्यो ढलता है ? गाय स्वय अपने दूध का समपण यही क्यो करती है, यह देखना चाहता हू ।' तब— भाई जरा सावधानी से फावडा चलाओ, अवश्य जिज्ञासा शात करो, क्या पता, इसी मे तुम्हारा कल्याण निहित हो ?"

चमकार चरवाहे की धमनिया म रक्त प्रवाह रुक सा जाता है। यह कसे अन-होने आवरण खुल रहे हैं ? वह आहिस्ता आहिस्ता खुदाई करने लगा, तभी उसकी कुदाल किसी ठोस वस्तु से टकरायी। मन म आह्-सी उपजी। कुदाली फेंककर उगलिया की पोरो से मिट्टी हटाने लगा। यह क्या ! एक मूर्ति का सिर दिखाई दिया। अब तो उसका शरीर उत्साह वेग से भर उठा। जल्दी जल्दी मिट्टी की परत-परत हटने लगी एक सर्वांग सुदर परिपूर्ण मूर्ति टीले की गोल वेदी मे सामने थी बहुत ही भव्य और उत्कृष्ट ! उस चरवाहे की टकटकी बध गयी। दोना नेत्रा से परमानन्दाश्रु की अविरल धाराए बह रही थी। बेसुध तन और सम्मोहित मन बडी विचित्र अनुभूति कौतूहल कसी अनुपम उपलब्धि ! मूर्ति के नेत्रा की कैसी चुम्बकीय आभा ? उसे लगा, मानो उसके जन्म जन्मातरा के सारे कल्मष धुल गये हैं। इस पवित्र दृष्टि से उसका पूरा जीवन तिरोहित हो उठा है। उसके हृदय से श्रद्धा भक्ति का झरना फूट पडा, अहा ! कैसा कृताथ जीवन है कि उसके हाथा से इस भू गर्भ से भगवान स्वय प्रकट हुए हैं ! उसकी भावना और वाणी का कायाकल्प हो गया। सरस्वती झरने लगी। आखें वीतरागी सासारिक विकृत सुप्त अलौकिक दिव्य उजास भर उठा उसके आसपास विदेह होकर स्वर्गिक सुरा म आत्म लीन हो उठा—

"कनकस्वर्णाभासोऽ प्यपगततनुर्नाननियहा
विचित्रात्माप्येका नृपतिवर सिद्धार्थतनय
अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरा गाद्भुत
गति
महावीर स्वामी महावीर स्वामी
मन्मनि स्वामी ऽऽ

एक विगत इतिहास दृश्य पर दृश्य अनोखा कथानक कथानक का दिव्य भव्य नायक युगो की यवनिका उठ रही है— एक दरबार प्रस्तुत हो रहा है समस्त का

प्रातर ढाई हजार वष पूव के परिवेश मे आकर टिक जाते है। बिहार प्रदेश की वशाली नगरी। माता त्रिशला की गोद मे एक महापुरुष का जन्म। लिच्छवी गणराज्य का राजकुमार। कौन जानता था कि राज्य का यह उत्तराधिकारी राज भवन की सपदा, ऐश्वय वभव और सिंहासन मुकुट आभूषणो के लिए नहीं जन्मा है, वरन अज्ञान के अन्धकार मे आकण्ठ लिप्त ससार को अपने तप, त्याग और उन्नत ज्ञान से आलोकित करके आत्मकल्याण का माग प्रशस्त करने के लिए उसका अवतरण हुआ है तप्त कनक आभा से युक्त सौन्दयशाली देह शीघ्र ही विदेह हो जायेगी राजगृह त्याग कर जो अखिल सृष्टि का ज्ञान गृह बन जायेगा जिसकी अद्भुत गति श्री-सुषमा सम्पन्न होकर चारो लोको मे छा उठेगी परम आलौकिक सन्मति स्वामी महावीर भगवान होकर सत्य के रक्षक के रूप मे यह बालक अमर होगा, कौन जानता था ?

चरवाहे का रूप, उसके द्वारा किया गया यह काय, मूर्ति का प्रकट होना, यह सारी बातें पख फलाकर उडी आस पास फैली और भीड की भीड उमड पडी उस अनोखी घटना को देखने जानने के लिए। भूले बिसरे रास्ते, एकात गल राहे, ककरीली पथरीली पगडडिया मानवी पदचापो से छा गयी। मेला जुड गया। रात दिन केवल दशन और चर्चाए। जो भी आता मन्त्रमुग्ध होकर उस गरिमामय मूर्ति के चुम्बकीय नेत्रो मे डूब जाता। भक्ति विह्वल होकर शान्ति प्रदान करने वाली प्रतिमा के समक्ष सब कुछ भूल जाता। चर्चाआ का विस्तार सीमाए लाघकर असीमित हो उठा सवत्र व्यापी।

अत्यन्त चमत्कारिक ढग स टीले से प्राप्त हुई प्रतिमा के दशन करने के लिए आये बसवा ग्राम (जयपुर) के निवासी दिगम्बर जन खण्डेलवाल सरावगी श्री अमरचन्दजी बिलाला। प्रतिमा के दशन करके और स्वय प्रभु प्रकट हुए, यह सोचकर इतन प्रभावित हुए कि उसी समय एक विशाल और सुन्दर मन्दिर बनवाने का सकल्प किया। सोचा, क्यो न एक जिनालय बनवाकर भगवान को उसमे विराजमान किया जाये। बस, वह अमित श्रद्धा उत्साह के साथ इस पुनीत काय म सलग्न हो गये। कुछ समय बाद बहुत सुन्दर कलात्मक मन्दिर तयार हो गया।

अब समय आया मूर्ति प्रतिष्ठान का। लेकिन फिर चमत्कार! लाख कोशिशो विभिन्न प्रयासो के बाद भी मूर्ति अपने स्थान से टस स मस तक नही हुई। सभी हैरान चकित! चितन मनन करने पर सोचा गया कि जिसकी श्रम साधना से इसका प्रादुर्भाव हुआ शायद उसी के कर स्पश से यह पावन अनुष्ठान भी सम्पादित होगा? उसी चरवाहे से इस सहयोग की हार्दिक कामना की गयी आदर सम्मान से उसे आमन्त्रित किया गया और सचमुच उसके स्पश को पाते ही मूर्ति अपने स्थान से उठ गयी। मन्दिर मे मूर्ति का प्रतिष्ठापित किया गया और मूर्ति वाले स्थान पर बडी खूबसूरत छतरी का निर्माण कराया गया, इसके भीतर

अनबूझ पहेली तो सुलझ गयी, लेकिन इसी टीले पर दुग्ध भरित क्या होता है ? इन धूल चट्टानी पर्तों के नीचे कौन सा रहस्य है ? उसका मन बेकाबू होने लगा। एक दिन चुपचाप अटोर वह फावड़ा कस्सी लेकर उसी स्थान को खोदने लगता है। बहुत नीचे पाताल से जसे कोई गम्भीर आवाज आती है— कौन मानव पुत्र हो तुम भाई ? मैं ? मैं तो एक चमकार हू। 'चमकार ? गाय चराने का फिर कसा काम, मानव ?" जाति स चमकार हैं हम लोग, पर तु मेरा परिवार पीढ़ियो से खेती करता आ रहा है। पशुपालन और दूध दही का व्यापार भी। इसीलिए चरवाहा हू। मेरी गाय का दूध प्रतिदिन इसी स्थान पर क्या ढलता है ? गाय स्वय अपने दूध का समपण यही क्यो करती है, यह देखना चाहता हू।' तब— भाई जरा सावधानी से फावड़ा चलाओ, अवश्य जिज्ञासा शात करो, क्या पता इसी मे तुम्हारा कल्याण निहित हो ?"

चमकार चरवाहे की धमनिया म रक्त प्रवाह रुक सा जाता है। यह कस अन-होने आवरण खुल रहे हैं ? वह आहिस्ता आहिस्ता खुदाई करने लगा, तभी उसकी कुदाल किसी ठोस वस्तु से टकरायी। मन म आह सी उपजी। कुदाली फेंककर उ गलियो की पोरो से मिट्टी हटाने लगा। यह क्या ! एक मूर्ति का सिर दिखाई दिया। अब तो उसका शरीर उत्साह वेग से भर उठा। जल्दी जल्दी मिट्टी की परत-परत हटने लगी एक सर्वांग सु दर परिपूर्ण मूर्ति टीले की गोल मेंदी मे सामने थी बहुत ही *भव्य और उत्कृष्ट ! उस चरवाहे की टकटकी बध गयी। दोनो नेत्रो* से परमान दाश्रु की अविरल धाराए बह रही थी। बेसुध तन और सम्मोहित मन बड़ी विचित्र अनुभूति कौतूहल कसी अनुपम उपलब्धि ! मूर्ति के नेत्रो की कसी चु बकीय आभा ? उसे लगा, मानो उसके ज म ज मातरो के सारे कल्मष धुल गये हैं। इस पवित्र दृष्टि से उसका पूरा जीवन तिरोहित हो उठा है। उसके हृ य से श्रद्धा भक्ति का झरना फूट पड़ा, अहा ! कसा कृताथ जीवन है कि उसके हाथो से इस भू गभ से भगवान स्वय प्रकट हुए हैं ! उसकी भावना और वाणी का कायाकल्प हो गया। सरस्वती झरने लगी। आखे वीतरागी सासारिक चि ह लुप्त अलौकिक दि य उजास भर उठा उसके आसपास विदेह होकर स्वर्गिक सुरा म आत्म लीन हो उठा—

'कनत्स्वर्णाभासोऽ प्यपगततनुर्ज्ञाननिवहो
विचित्रात्माप्येको नृपतिवर सिद्धार्थतनय
अज मापि श्रीमान् विगतभवरागोऽद्भुत
गति
महावीर स्वामी महावीर स्वामी
स मति स्वामी ऽऽ

एक विगत इतिहास दृश्य पर दृश्य अनोखा कथानक कथानक का दिव्य भव्य नायक युगो की यवनिकाए उठ रही हैं— एक दशकाल प्रस्तुत हो रहा है समस्त वन

अंतर ढाई हजार वर्ष पूर्व के परिवेश में आकर टिक जाते हैं। बिहार प्रदेश की वैशाली नगरी। माता त्रिशला की गोद में एक महापुरुष का जन्म। लिच्छवी गणराज्य का राजकुमार। कौन जानता था कि राज्य का यह उत्तराधिकारी राज भवन की सम्पदा, ऐश्वर्य वैभव और सिंहासन मुकुट आभूषणों के लिए नहीं जन्मा है, वरन अज्ञान के अन्धकार में आकण्ठ लिप्त संसार को अपने तप, त्याग और उन्नत ज्ञान से आलोकित करके आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करने के लिए उसका अवतरण हुआ है तप्त कनक आभा से युक्त सौन्दर्यशाली देह शीघ्र ही विदेह हो जायेगी राजगृह त्याग कर जो अखिल सृष्टि का ज्ञान गृह बन जायेगा जिसकी अद्भुत गति श्री सुषमा सम्पन्न होकर चारों लोकों में छा उठेगी परम आलौकिक सन्मति स्वामी महावीर भगवान होकर सत्य के रक्षक के रूप में यह बालक अमर होगा कौन जानता था ?

चरवाहे का रूप, उसके द्वारा किया गया यह कार्य, मूर्ति का प्रकट होना यह सारी बातें पंख फैलाकर उड़ीं आस पास फैली और भीड़ की भीड़ उमड़ पड़ी उस अनोखी घटना को देखने जानने के लिए। भूले बिसरे रास्ते, एकांत गल राहें, कंकरीली पथरीली पगडंडियां मानवी पदचापों से छा गयीं। मेला जुड़ गया। रात दिन केवल दर्शन और चर्चाएं। जो भी आता मन्त्रमुग्ध होकर उस गरिमामय मूर्ति के चुम्बकीय नेत्रों में डूब जाता। भक्ति विह्वल होकर शान्ति प्रदान करने वाली प्रतिमा के समक्ष सब कुछ भूल जाता। चर्चाओं का विस्तार सीमाएं लांघकर असीमित हो उठा सर्वत्र व्यापी।

अत्यन्त चमत्कारिक ढंग से टीले से प्राप्त हुई प्रतिमा के दर्शन करने के लिए आये बसवा ग्राम (जयपुर) के निवासी दिगम्बर जैन खण्डेलवाल सरावगी श्री अमरचन्दजी बिलाला। प्रतिमा के दर्शन करके और स्वयं प्रभु प्रकट हुए, यह सोचकर इतने प्रभावित हुए कि उसी समय एक विशाल और सुन्दर मन्दिर बनवाने का संकल्प किया। सोचा, क्यों न एक जिनालय बनवाकर भगवान को उसमें विराजमान किया जाये। बस, वह अमित श्रद्धा उत्साह के साथ इस पुनीत कार्य में संलग्न हो गये। कुछ समय बाद बहुत सुन्दर कलात्मक मन्दिर तैयार हो गया।

अब समय आया मूर्ति प्रतिष्ठान का। लेकिन फिर चमत्कार ! लाख कोशिशों विभिन्न प्रयासों के बाद भी मूर्ति अपने स्थान से टस से मस तक नहीं हुई। सभी हैरान, चकित ! चिंतन मनन करने पर सोचा गया कि जिसकी श्रम साधना से इसका प्रादुर्भाव हुआ शायद उसी के कर स्पर्श से यह पावन अनुष्ठान भी सम्पादित होगा ? उसी चरवाहे से इस सहयोग की हार्दिक कामना की गयी आदर सम्मान से उसे आमन्त्रित किया गया और सचमुच उसके स्पर्श को पाते ही मूर्ति अपने स्थान से उठ गयी। मन्दिर में मूर्ति को प्रतिष्ठापित किया गया और मूर्ति वाले स्थान पर बड़ी खूबसूरत छतरी का निर्माण कराया गया इसके भीतर

चरण इसीलिए इस छतरी का चरण छतरी कहते हैं। चारों ओर महमहकरता हुआ सुरम्य-उद्यान। अनकानेक कामनाएं लेकर भक्त जनों की भीड़ और कानों में भगवान महावीर के सद् वचनों का बूंद बूंद टपकता अमृत। श्रद्धा भक्ति की पावन धाराओं में स्निग्ध हुआ उमगित मन परम आनन्ददायी प्रवचन राजचिह्नों से मण्डित शूरवीर राजकुमार तीस वर्ष की यौवन कांचन उम्र, धीर गम्भीर ओज से दीप्त मुखमण्डल देश में फैली हिंसा का ताण्डव नहीं झेल पाये। राज पाट का व्यामोह ऐश्वर्य का आकर्षण त्यागकर वन प्रस्थान कर ज्ञान पथिक हो गये। वस्त्र-आभूषणों का ही मोह क्यों ? इन्हें भी पृथक कर दिया और दिगम्बर मुनि बन गये। बारह वर्ष की कठिन तपस्या, कठोर आराधना तप के पश्चात् हुई 'केवल ज्ञान' की प्राप्ति वे सर्वज्ञ और सर्वदृष्टि हो गये। अनेक स्थानों प्रदेशों और नगरों में परिभ्रमण किया। धर्म के उपदेश जो चिन्तन के आधार थे दिये। विचार में अनेकांत आचार में अहिंसा वाणी में स्याद्वाद और समाज में अपरिग्रह।

भगवान महावीर स्वामी आत्मा का अस्तित्व स्वतन्त्र मानते थे। उनकी मान्यतानुसार भव्य जीवनसमताभावपूर्वक सुखी जीवनयापन करे। इस प्रकार प्रत्येक भक्त इन्द्रियजित मानव सम्यक दर्शन सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चरित्र से परमात्म पद की प्राप्ति कर सकता है। गूंजने लगे नित पावन वाणी के ये शब्द स्तोत्र।

दिगम्बर जैन समाज का यह मन्दिर प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र हो उठा। कालान्तर में यह चांदनपुर गांव इसी प्रसिद्ध तीर्थस्थान के कारण श्री महावीरजी के नाम से प्रसिद्ध हो गया। यहां पर न केवल राजस्थान के बल्कि पूरे भारतवर्ष के धर्मप्रेमी ज्ञान जिज्ञासु आते हैं। हमेशा लाखों जैन यात्री और जैनेतर दर्शनार्थियों का आगमन बना रहता है। आकर्षण का असीम केन्द्रस्थल परम दिगम्बर प्रतिमा के दर्शन कर सभी कृतकृत्य।

यह पूजा स्थल राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले में है। तहसील हिण्डौन। रेल और बस दोनों मार्गों से जुड़ा हुआ। श्री महावीरजी रेलवे स्टेशन से छह किलोमीटर दूर गम्भीर नदी के हरे भरे तट पर स्थित है यह सर्वाधिक लोकप्रिय तीर्थ। चांदनपुर वाले बाबा का चतुर्दिक यश लिये यहां की धर्म ध्वजाएं दूर से ही दिखाई देने लगती हैं।

मंगल भगवान वीरो मंगल गौतमो गणी
मंगल कुन्द कुन्दाद्यो जैन धर्मोस्तु मंगल "

ज्योंही दर्शन क्षेत्र निकट आता है कि यात्रियों में आनन्द प्रसन्नता का स्फुरण होने लगता है। मन में पुण्यवती भावनाओं का मेला सा लग उठता है। मन्दिर के तीन उन्नत शिखर। हवा में यशोगान फहराती धर्म ध्वजाएं। मीलों दूर से दिन हो या रात्रि दूर से ही मन्दिर की शोभा विकीर्ण होती दिखाई पड़ती है। इस क्षेत्र

पर पहुचते ही कटले के विशाल उत्तरमुखी सिंहद्वार से मंदिर का प्रवेश। इसी के ऊपर विशाल नगाड़ा खाना मध्य मे मंदिर। इसके चारो ओर दो मन्जिलों वाली प्राचीन, अत्याधुनिक आराम देह स्वच्छ धर्मशालाए। इन्ही को 'कटला' के नाम से जाना जा सकता है। बायी ओर एक ऊचा चबूतरा यह मुख्य द्वार के सामने है। इसके ऊपर है बहुत सुन्दर कलात्मक और जाली का कटावदार 'मानस्तम्भ'

मंदिर के मुख्य द्वार पर सगमरमर की तीन छतरिया और हैं। इन्ही के ऊपर दोनो ओर सगमरमर की डिजायनदार खुली छत। मंदिर के सामने बड़ा प्रवेश द्वार, जिसके भीतर मंदिर का विशाल चौक। महामण्डप मे जाने के लिये बड़े खूबसूरत सात अष्टाचक्री द्वार इनम से पाच द्वारो के ऊपर खड्गासन प्रतिमाए स्थापित हैं। सामने ही तीन दर की बडी वेदी पर कत्थई वर्ण की महावीर स्वामी की मूर्ति विराजमान है। इसके बायी ओर श्याम और दायी ओर श्वेत (भूरे) रगो की तीर्थकर प्रतिमाए हैं। कत्थई रग की मूर्ति पर बडी शांति छटा व्याप्त रहती है।

इस वेदी के बायी ओर मुडने पर एक वेदी और दिखाई पडती है जहा श्वेतवर्णी महावीर की पद्मासनी मुद्रा आसीन है। पादपीठ पर सिंहलाछन है। यह वेदी एक ही दर की है। यहा दो तीन सीढियो के बाद गर्भगृह आता है। इसके बाह्य तोरण पर लगभग छह इच की एक पद्मासनी प्रतिमा और है। द्वार के दोनो कलात्मक पक्षो पर दण्डधर बने हुए हैं इनके ऊपर खड्गासन तीर्थकर प्रतिमा। गर्भगृह मे प्रथम वेदी फिर तीन दरो की जिसमे पाषाण तथा धातु की विभिन्न आकार प्रकार की अनेको मूर्तिया विराजमान हैं इससे आगे तीन फुट की भगवान शान्तिनाथ की पद्मासीन वेदी है। पादपीठ पर हिरण का लाछन चिन्ह

अब आया है वह स्थान जहा के दर्शन का लाखो आतुर आखें झुक झुक पडती हैं। मुख्य वेदी-स्थल तीन मेहराबी दर और बीचो बीच विराजमान है भू गर्भ से प्राप्त भगवान महावीर की अतिशय सम्पन्न प्रतिमा मूगावर्ण की शोभा-युक्त मूर्ति। गुप्तोत्तर काल की शिल्प योजना बद्ध आकारो से शिल्प मण्डित ठोस ग्रेनाइट की प्रतिमा न होकर रवादार बलुए पाषाण की है। जगह जगह पर घिसकर झरकर काफी जीर्ण हो चुकी है। मन मे सकडो ऊहापोह क्या पता किसी अति प्राचीन मंदिर की शिल्पकला की यह प्रतीक हो? दब गया होगा किसी प्रलय झझा म जमीन के नीचे! या शायद, मुस्लिम काल मे नष्ट न हो जाये इस भय से यहा किसी युग के धर्मशील हाथो ने अतल मिट्टी की गहराइयो मे दबा छिपा दिया हो! जो भी कुछ रहा हो, बहुत ही प्रभावशाली, प्रेरणामयी और मनोहारी है यह मूगावर्णी पद्मासना प्रतिमा। इसके दोनो ओर हल्के काले रग की चित्तीदार प्रतिमाए और हैं। इस मूगावर्णी मूर्ति के आगे घी के दीपक जलाये जाते हैं। श्रद्धालु भक्तजन छत्र चढाकर, यही बैठकर मनौती मागते हैं।

मूल नायक के परिक्रमा स्थल से आगे बढते ही श्वेतवर्णी भगवान स्वामी की मूर्ति है एक दर की वेदी छत्र के नीचे अ य तीथकरो की प्रतिमाए हैं। आगे भगवान कु थुनाथ की मूर्ति इसकी चरण चौकी पर बकरे का चि ह है दाना ओर की पाषाण मूर्तिया देखने मे अत्यधिक प्राचीन लगती हैं। आगे और बहुत सी धातु की मूर्तिया सभी कलात्मक दृष्टि से बेजोड हैं।

यहा द्वार से निकलते ही पहले की भाँति ही तीथकरो की पद्मासनी मूर्तिया मिलती हैं और दायी बायी ओर कत्थई वण की खड्गासीन प्रतिमाए हैं। नीचे चवरधारी यक्षी बनी हुई हैं। बाहर वाली बडी वेदी के एक ओर की वेदी म पद्मावतीजी की मूर्ति आसीन है दूसरी ओर क्षेत्रपाल। भक्त लोगो मे इसकी बहुत मान्यता है। अटूट विश्वास है कि महावीरजी की प्रतिमा और क्षेत्र पर जो भी विकास गौरव और दिशा दिशा म धम-कीर्ति छाई हुई है वह सब इ ही क्षेत्रपाल की देन है। मागने वाले यहा खूब गाते नाचते और सुगन्ध अगरबत्तिया जलाते हैं।

म दिर के बाहर परिक्रमा पथ है। भक्त जन तीन पाच से लेकर एक सौ आठ परिक्रमा तक करते हैं। दीवारो पर स्तम्भो पर मकराना सगमरमर की कलाकृतिया है। अत्यधिक कलात्मक। लगभग सोलह पौराणिक दृश्यो का अकन है। बडा ही अपूव। पाषाण पर कला का उत्कृष्ट सम वय म दिर के ऊपर तीन विशाल शिखरो मे भी इसी मनभावनी कला को देखा जा सकता है। यही नीचे की ओर महावीर दिगम्बर क्षेत्र का कार्यालय और दूसरी ओर सरस्वती भवन, भडार गृह, पूजन प्रक्षालन हेतु स्नानघर पूजन सामग्री धोने और स्वच्छ करन का चौर स्थान तथा अ य व्यवस्थाए हैं। सारा वातावरण पावनता शुचिता का धाम प्रतीक म दिर द्वारो से स्वरध्वनित हो रहे हैं—

'यत्र स्याद्वाद सिद्धा तो यत्र वीरो
दिगम्बर
तत्र श्री विजयो भूति ध्रु वान दो ध्रु वादर '

कटले के दक्षिणी द्वार को जा पीछे की ओर है इसे मोरी दरवाजा कहते हैं, बडी चहल पहल से भरी जगह है। सामने नदी तट तक बडा खूबसूरत बगीचा है। तरह तरह के फूल, हरसिंगारी खुशबू इसमे भगवान महावीर निर्वाणोत्सव, वष म 33 फुट ऊ चा प्रस्तर शिल्प का बहुमूल्य नमूना एक कीर्तिस्तम्भ तयार किया जा रहा है इसका निर्माण मकराने के प्रसिद्ध सगमरमर से हो रहा है लगभग पूणता की ओर है यह।

पूर्वांचल की ओर चरण चि ह छतरी है। इसी स्थान पर उत्खनन द्वारा इस अलौकिक चमत्कारिक मूर्ति की प्राप्ति हुई थी। सुना है कि जिस ग्वाले ने इसे खोजा और श्रमपूवक प्राप्त किया उसी के वशधर आज भी, तबसे लेकर अब तक इन चरणो के ऊपर चढाये हुए चढावे की सामग्री का स्वय लेते है। यह परम्परा सतत् बनी हुई है।

कही से भी क्यो न देखें, मन्दिर के पुनीत तीनो शिखर परिलक्षित होते हैं। श्रद्धा, ज्ञान और चरित्र के सत्य प्रतीक। सारा कटला ही जसे एक तपोस्थली हो। बडी मानसिक शांति। शिखर की चतुर्दिश प्रतिमाए जसे अहिंसा प्रेम सहिष्णुता और सहअस्तित्व का जयघोष हो ?

'यदीयावाग्गगा विविधनय कल्लाल विमला
बृहज्ज्ञानाम्भोभिजगति जनता या स्नपयति
इदानीमप्येषा बुधजनमराल परिचिता
महावीर स्वामी ऽऽ "

कलकल मधुरा वाणी गगा की उत्ताल तरगें जिनमे सागोपाग भीगते भक्त जनो के कमल दल नयन महाज्ञान तट पर विचरते मोक्ष प्राप्ति हेतु आकुल हृदय प्रार्थना मे विहसते विमल बुद्धि के श्वेताग हस। अनन्त है महावीर स्वामी की अमर गाथा

तन मन प्राण को आरोग्य बनाने वाली स्वच्छन्द वायु के मन्द मधु स्पर्श आधि व्याधि के हरणकर्त्ता जनियो के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान का यह स्थान अपने आपमे असीम शांतिदायक क्रोध, लोभ मोह, क्षोभ और ईर्ष्या के नागपाशो से मुक्ति देने वाला

महामोहतक प्रशमन पराकस्मिक भिषड निरापेक्षो बधुविदित
महिमा मगलकर शरण्य साधूना भवभयमृतामुत्तम गुणी '

—महामोह, आतक व्याधि रोग भय को दूर करने वाले महावीर धन्वतरी। मगलकारी विश्वबधुत्व के कर्णधार भक्तजनो को शरण देनेवाले सर्वद्रष्टा भगवान तभी तो चारो ओर मगल ही मगल ध्वनिया व्याप्त

सवाई मानसिह हाइव, जयपुर स्थित महावीर भवन के मन्त्री श्री कपूर-च दजी पाटनी से मिलती हू और श्री महावीरजी के विकास तथा इसकी परपरागत शलियो के विषय मे कुछ जिज्ञासाए व्यक्त करती हू। उन्होने सभी जानकारिया देने म बहुत प्रसन्नता व्यक्त की है। बताया कि—'हमारा स्टाफ यहा और श्रीमहावीरजी मे करीब 175 व्यक्तियो का है। प्रति वर्ष भगवान महावीर की जयन्ती पर यहा बडा विशाल मेला लगता है। चत्रशुक्ला (सुदी) ग्यारह से बैसाख वदी एक तक। वसाख बदी एक का कटले स भगवान महावीर की रथ यात्रा का वृहद् जुलूस निकलता है। गम्भीर नदी मे कलशाभिषेक होते हैं। इस अवसर पर जन (दिगम्बर) यात्रियो के अतिरिक्त मीणा, गूजर जाटव तथा अन्य धर्मावलबी भी बहुत भारी सख्या मे शामिल होते हैं। ढाई तीन लाख व्यक्तियो का अपार समूह। सभी महावीर क दर्शनो के मतवाले किसी के लिए कोई बन्धन नहीं, प्रत्येक जाति धर्म का स्वागत है।

किसी आवश्यक कार्य हेतु श्री पाटनीजी थोड़ी देर के लिए चले जाते हैं और अन्य प्रकार की सम्पूर्ण जानकारी देने के लिए श्री महावीरजी भवन के अध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द्रजी खिन्दूका मुझे उस कक्ष में ले जाते हैं, जहां भगवान महावीरजी की रथ यात्रा और मेले से सम्बन्धित चित्र लगे हुए हैं। वह बताते हैं

"मेले का वर्णन इसलिए भी आवश्यक है कि मन्दिर के निर्माण के समय से ही यह परम्परा रही कि इसकी सुरक्षा का प्रबन्ध सदैव से राज्य सरकार द्वारा होता रहा है। जिस ग्वाले के द्वारा मूर्ति निकाली गयी थी उस परिवार का आज भी बहुत सम्मान है। वार्षिक मेले पर जब रथ यात्रा प्रारम्भ होती है तब इसी परिवार के मुखिया को रथ में हाथ लगाना पड़ता है। सारा परिवार उपस्थित रहता है। मन्दिर की ओर से इन्हें शुभ नारियल भेंट किया जाता है, तब रथ निकलता है।

एक परम्परा का निर्वाह और होता है कि पहले स्टेट के जमाने में राज्य घराने के प्रतिनिधि की हैसियत से इस इलाके का नाजिम यात्रा जुलूस के रथ का सारथी बनता था। आज भी एस० डी० एम० इस रथ का सचालन स्वयं बैठ कर, यहां की पारम्परिक पगड़ी पहन कर करते हैं। पहले स्वयं भेंट चढ़ाते हैं फिर मन्दिर का पुजारी इन्हें साफा भेंट करता है। पहले हिण्डौन के नाजिम की करौली के राजा जैसी शान थी। इसमें सभी धर्मों के लोग शामिल होते हैं भावनात्मक एकता का रूप है यह। ऊंच नीच भाव का यहाँ कोई स्थान नहीं है शुरू से ही। रथ के साथ मीना लोग खूब गाते बजाते चलते हैं। गम्भीर नदी के तट पर जब कलशाभिषेक होता है सभी बैठे रहते हैं लेकिन जब रथ वापस लौटता है तब मीना नहीं आते। उस पार के गूजर ही आते हैं, वरना तो झगड़ा हो जाये। सुनते हैं कि पहले तो तलवारें तक खिंच जाती थी। इस अवसर पर कनक दण्डवत देखते ही बनती है। श्रद्धालु लोग मीलों से जाने कहां कहां से इस भीषण गर्मी में जमीन में लेट लेट कर साष्टांग प्रणाम करते हुए मन्दिर तक आते हैं पत्नी साथ साथ अपने पल्लू से (आंचल) झुक झुक कर उसके चरण छूकर माथे से लगाती हुई पीछे चलती है। मीलों तक यही सफर घुटने कोहनी छिल जाते हैं पर [redacted] आस्था का प्रश्न रहा न यह तो!

गांववालों की श्रद्धा का यह हाल है कि गाय भैंस का पहला ब्यावन मतलब दूध महावीरजी के चरण पर चढ़ाया जाता है तब काम में लिया जाता है। विवाह के बाद कोई भी जाति का हो जोड़े से आकर पहले मन्दिर में आशीर्वाद लेते हैं तब घर की देहरी पूजते हैं। हां, होली के तीसरे दिन मन्दिर में आकर होली खेलता है पूरा गांव। आसपास के लोग पहले देहरी पर गुलाल रंग समर्पित फिर खेल होली का। बाहर चौक में नारी पुरुष दोनों मिलकर खेलते हैं। ब्रज की लठामार होली का दृश्य उपस्थित हो जाता है। यह क्षेत्र भी तो इसी कृष्णभूमि में

शामिल है न ! बाद मे प्रबन्धक कमेटी की ओर से सभी को प्रसाद और गुड दिया जाता है।

भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव दीपावली पर हजारो की सख्या मे दिगम्बर जैन यात्री निर्वाण लाडू (लड्डू) चढाने के लिए इस तीर्थ पर एकत्रित होते हैं। इसके अतिरिक्त दशहरा होली, आय अष्टानिकाओं पर भी इस क्षेत्र पर निर्वाण लडडू चढाने यात्री लोग दूर दूर से आते हैं। पूजन रथ यात्रा, अभिषेक लडडू आदि सभी उत्सव समारोह दिगम्बर मा यता के अनुसार ही होते हैं। यहा के समस्त मन्दिरो और धमशालाओ का निर्माण भी इसी समाज के द्वारा हुआ है।

जब मन्दिर बनाया गया तब जयपुर राज्य की ओर से भी एक गाव मन्दिर की सेवा पूजा के लिए अर्पित किया गया था। यही वतमान मे श्री महावीरजी हैं। इस क्षेत्र के प्रादुर्भाव का काम सोलहवी सत्रहवी शताब्दी के लगभग माना जाता है। इसके अलावा पहले राज्य सरकार द्वारा राहदारी (चकपास्ट) के चबूतरा से इस मन्दिर का कुछ टके भेंट के लिए रोज बधे हुए थे। अब तो राज्य द्वारा दिया गया गाँव सरकार ने ले लिया है। वार्षिक सरकारी सहायता बधी हुई है। यह स्थान आमेर गद्दी केमूल सघ अम्नाय के दिगम्बर जन भटटारको का केन्द्र रहा। इन भट्टारको का तत्कालीन राजाओ बादशाहो पर पर्याप्त प्रभाव रहा। बडा सम्मान रहा। इसीलिए इन्हे सम्मान का सूचक चँवर और मोरछल आदि ताजीम दी जाती थी। इस क्षेत्र का प्रबन्ध शुरू स ही दिगम्बर जन समाज (जयपुर), इसकी पचायते और भट्टारको द्वारा ही होता रहा है। इन भट्टारको की नियुक्ति जयपुर की जन पचायत ही करती थी।

इस क्षेत्र पर जो भी वभव है, वह सारे भारत के दिगम्बर जैन व धुओ की श्रद्धा का प्रतीक है। बहुत विकास हुआ है। चहुँमुखी विकास। भविष्य म कई बडी योजनाओ के प्रति भी प्रयत्नशील ताकि स्थानीय जनता का अधिक से अधिक सुख सुविधाए, चिकित्सा शिक्षा, डाक्टरी सहायता इजीनियरो का सहयोग मिल सके।

हा इस क्षेत्र मे जल व्यवस्था का समुचित प्रब ध किया गया है। इजन फिट किये गये हैं। पाइप लाइनें एक लाख गलन की पावर की दो विशाल टकिया हैं। प्रकाश के लिए शक्तिशाली जनरेटस। आधुनिक सुविधाओ से युक्त ठहरने के लिए स्थान उद्यान फव्वारे। भूमि को समतल करके गाववालो को योजनाबद्ध तरीके स बसाया है। सुसज्जित हरे भरे खूबसूरत बगीचे। धम सस्कृति का प्रचुर प्रचार और प्रसार। सस्कृत, प्राकृत, अपभ्र श, हिन्दी, तमिल आदि भाषाओ के प्रति प्राचीन ग्रथो पर शोधकाय होता है। प्रकाशन प्रसार और प्रचार बराबर जारी। शोध अनुसधान के काम यही हैं कि जो प्राचीन हस्त लिखित सस्कृत अपभ्र श मे लाखो की सख्या मे राजस्थान जैन मन्दिरों मे . .

की पाण्डुलिपिया फली बिखरी पडी हैं, उन्हें सुनियोजित ढग से सूचीबद्ध करके सुरक्षित रखना। दुलभ ग्र थो की माइक्रो फिल्म तयार करने की भी योजना है।

किसी अनुपम तथा सवश्रेष्ठ जन सघ पर यह कमेटी पाच हजार का महावीर पुरस्कार देती है। असमथ विकलाग, शोधार्थी एव होनहार छात्रा को पच्चीस हजार की स्कालरशिप दी जाती है तथा 25000) रुपये के लगभग विधवाओ, असहायो अनाथो वृद्धो और नेत्रहीनो के लिए खच होता है। चू कि यह विकलाग वष है, इसलिए यह निणय लिया गया है कि जिला सवाई माधोपुर म जिन विकलागो के बनावटी पैर या अ य अग लगाने हैं इनका सभी तरह का भार कमेटी वहन करेगी अब भी कर रही है। अभी हाल म ही जो विकराल बाढ का सामना इस नगर और आसपास के गांवो तथा भारतवष भर म जहा भी किया गया है इसके लिए चीफमिनिस्टर फण्ड मे पच्चीस हजार रु दिये गये हैं।

सध्या की गुलाबी आभा मे मत्रो की प्राथना गुज रु चारो ओर फैल रही है—वही पूजा, वही महावीर भगवान का शाति श्लोक जो आते समय सुना था उसी को जाते समय फिर सुन रही हू

यदिये चत ये मुकुर इव भावाश्चिदचित
सम भाति ध्रौव्यव्ययजनिलसन्तोऽ त रहित
जगत्साक्षी माग प्रकटनपरो भानुरिव यो
महावीर स्वामी नयन पथगामी भवतु मे
अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयो काम सुभट
कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन विजित
स्फुरन्नित्यानन्द प्रशम पद राज्याय स जिन
महावीर स्वामी नयनपथगामी भवतु मे

—जगत के अध्यक्ष विधाता सूरज की तरह राह दिखाने वाले भगवान चित अचित सभी का दपण की तरह उजास देनेवाले प्रभु त्रिभुवनजयी मुक्ति सुख जगज्जाल से छुडाकर सुख देने वाले शाति सागर महिमा के आगार महावीर स्वामी आपको शत शत प्रणाम

डोग के जलमहल

राजस्थान के नाम में ही एक जादू है। यहा की धरती का एक एक कण पराक्रमी उच्छ्वासो से सुवासित है—ग्रान बान ग्रौर शान का स्वाभिमानी शक्ति बीज, जहा पालने म लेटे शिशु के कानो म उकेरा जाता रहा कि जन्म भूमि ग्रौर स्वाभिमान पर ग्रांच नही ग्राने पाये, चाहे मृत्यु का ग्रालिगन क्या न करना पडे रसावतार सूर्यमल्ल मिश्रण की वीररसपूर्ण वाणी इस भूमि की हवा मे तरती है—

'इला न देणी ग्रापणी, हालरिया हुलराय,
पूत सिखावे पालणें मरण बडाई माय '

राजस्थान प्रदेश एक ऐसा विशाल ग्राईना है जिसमे रोमाचकारी बलिदान विलक्षण पराक्रम, धधकते जौहर विस्मयकारी स्वामिभक्ति ग्रौर गौरवशाली देश भक्ति के चित्र बिबायित हैं जभी कठारा धरती वसी ही त्याग सघष की ग्रटूट कहा निया जाने कितने ग्रमर लोक गीत ग्रौर लोक कथाग्रो के प्रामाणिक सूत्र जितने शूरवीर यहा के वीर रहे उतने ही सास्कृतिक एव साहित्यिक ग्रभिरुचियो के ग्राश्रय दाता भी रहे। दुग, किले गढ परकोटे छतरिया बुजिया, मदिर बावडिया इनके द्वारा निर्मित स्थापत्यकला के बेजोड नमूनो को प्रस्तुत कर रहे हैं। भित्तिचित्रो के माध्यम से कलात्मक रुचि का ग्रदाज लगता है। बहियो, फरमानो, शिलालेखो, प्रस्तर-स्तम्भो, राज पत्रो रुक्को ग्रौर मुद्राग्रो से इनके युग सत्यापित हैं। इतना विशद काल इतिहास कि वतमान युग की न जिज्ञासा का ग्रत है न मन की तृप्ति का प्रश्न।

रग बिरगी यहा की सस्कृति केसरिया पगडी ग्रौर कसूबी दृष्टिवाला प्रात। एक ग्रार नदी नाले पोखर हैं, तो दूसरी ग्रोर रेत का ग्रगाध समुद्र बारीक मलमल की चुन्नटो सी लहराती बालू सुनहरी ग्राभा से दमकती पृथ्वी प्रकृति का कडियल रूप भी सुरक्षित ढाल रहा है काली, भूरी परत दर परत चट्टानें दुगम घाटिया पथरीले पहाड, खुरदरे दर्रे, कटीले झाड पेड इनमे बिखरे दुग किले ग्रौर चौकिया रणबाकुरो, मर्यादित नर पु गवो की प्रशस्तियो का इतिहास इस धरती की धरो हर रहा है। मुगलो की विशाल म यशक्ति से स्वय की ग्रौर जनजीवन की सस्कृति की रक्षा करना कला साहित्य का विकास करना, पानी ग्रन्न के ग्रभाव मे परिस्थितिया

से जूझना यहाँ के जीवट का खेल रहा है। एक ओर राजपूतो की करारी सांसा से बुने हुए जयपुर जोधपुर, उदयपुर, अलवर, बाँसवाड़ा, प्रतापगढ़ जसलमेर, डूंगरपुर तो दूसरी ओर जाटो के पराक्रमी वभव मे गुथे हुए हस्ताक्षरो से युक्त भरतपुर, धौलपुर करौली इनसे जुडे कामा, बयाना वर, रूपवास कुम्हर, वरठा, बाडी और डीग ।

भरतपुर से लगभग सैंतीस किलोमीटर उत्तर पश्चिम की ओर स्थित है डीग पहले आता है सुदृढ़ किला । जिसकी लाखा-बुज दूर से ही आकाश मे उनन शीश उठाये विगत के अद्वितीय युग का स्मरण दिलाती है बडा विशाल किला लाखा बुज पर रखी बहुत भारी सगीन तोप फिर आते हैं अपन आप म अनोखे डीग के जल महल।

डीग भरतपुर के रियासती शासको सिनसिनवारों की राजधानी रह चुका है प्राचीन राजधानी उस समय के राजाओ की प्रिय मनोरजन स्थली शांतिपूर्ण विश्राम गृह यहा के दशनीय स्थल, सामरिक दृष्टि से मजबूत कलेवर से गठित किला तथा जल महलो की जितनी प्रसिद्धि रही, उतना ही अठारहवी शताब्दी मे उत्तरी भारत का यह सर्वोच्च शक्तिशाली केन्द्र रहा व्यापार का प्रमुख स्थान रहा शक्ति सौन्दय और कला की छाप यहाँ फली हुई है समतल भूमि पर भीमकाय किला, विशाल तोपें सम्भाले बुज खण्ड चारो ओर रक्षाथ मरहले जहाँ से शत्रु पर पनी नजर रहती थी और व्यापार सभ्यता सस्कृति और समाज की सुरक्षा की जाती थी।

डीग का नाम भारतीय इतिहास मे यशपूण रहा है। प्राचीन नाम इसका दीघपुर था। इसका उल्लेख पुराणो म भी है। यह जाट शासक बदन सिंह की राजधानी रहा, उन्होने ही स० 1807 मे इन भव्य जल महलो की नीव डाली। इसके पास ही जनूथर गाँव है, इसका उल्लेख भी रामायण मे किया गया है। एक गाँव और है परमदरा जिसे पहले परमाद्र कहते थे। बताया गया कि कृष्ण के परम मित्र बालसखा सुदामा की जन्मभूमि है यह गाँव इसीलिए धार्मिक दृष्टि से और पौराणिक गाथा से जुडा होने के कारण यह स्थान प्रसिद्ध भी है और श्रद्धा-स्थल भी जिन गुरु से दोनो मित्रो न ज्ञान अर्जित किया उन गुरू सदीपन ऋषि का आश्रम स्थान भी पास मे ही है। श्री कामेश्वर का पुण्य मन्दिर भौमासुर की गुफा, भोजन थाली महादेव की मूर्ति पाच पाण्डवो का मन्दिर और चरण पहाडी डीग के आसपास फल अनुपम स्थान हैं। भक्ति, श्रद्धा, कला और सुन्दरता के बीच डीग के जलमहल रजनीगधा से महकते हैं और सूरजमुखी से खिले खिले प्रतीत होते हैं। स्थापत्य कला की अनुपम सामग्री यहा उपलब्ध होती है। इसके पास ही बने चौरासी खम्भे इतनी कलाकृतियो से सम्पन्न हैं कि उनकी अनोखी बनावट को देख-कर आज के वज्ञानिक चकित हैं। उनके लिए वे एक अनुत्तरित पहेली बने हुए हैं।

चन्द्रमा और बिन्दारानी के मन्दिर तथा गंगा का पावन श्री मन्दिर पत्थर के काम क सवश्रेष्ठ नमूने हैं। ऐसे मनोहारी, शात और प्रकृति के वैभव से सपन्न वातावरण के मध्य जाट शासको ने डीग के महलो को मन प्राण से सवारा और दुलराया था।

एक बहुत बडा कलात्मक तालाब चारो ओर गहरी शीतल छाया से आच्छादित बगीचा सघन लताएँ पेड विभिन्न प्रकार के रग बिरगे फूल और उनके किनारे बने डीग के प्रख्यात जल महल जिन्हे आगे चलकर इतिहास प्रसिद्ध महाराजा सूरजमल ने अपनी कलात्मक अभिरुचि के अनुसार और भी अधिक विस्तार दिया। आकर्षक भवनो का निर्माण कराया, मुक्त हस्त से जहा दूर दूर स आये शिल्पियो ने कला का विराट वैभव टकित किया, इतनी श्री सम्पदा रगो की और चित्रो की खुदाई के काम की उकेरी गई है कि मन और दृष्टि किसी चुम्बकीय आकर्षण से बध जाती है।

डीग के बहुचर्चित जलमहलो मे गोपाल भवन, हरिदेव भवन नन्द भवन, केशव भवन श्रावण भादो ऋतुकालीन आवास गृह बहुत सुन्दर हैं। उत्कृष्ट शिल्प सौन्दर्य विशाल विस्तार और इनके चारो हरियाली से लदे फदे सुरम्य उद्यान मुगल शैली पर आधारित इन उद्यानो की सज्जा काट छाट फूलो गुलमो विभिन्न आकारो के वृक्षो पौधो मखमली घास के गलियारो कलात्मक ईंटो की किनारियो से घिरी क्यारियां, गमलो म सजे छुईमुई गुलदस्ते ये सब पयटको की दृष्टि को अपने आकर्षण म बाध लेते हैं। अकूत धनराशि द्वारा निर्मित है यह जल-महलो का ससार मेरी जिज्ञासा को जानकर वहा जानकारी कक्ष क एक कार्यकर्ता बताते हैं कि जब इन भवनो की साज सज्जा और अधिक विस्तार का विचार जाट शासक महाराजा सूरजमल के मन मे आया तब निर्माण और कला सज्जा के लिए बहुत सारी धनराशि लखनऊ के तत्कालीन नवाब गाजीउद्दीन ने उन्हे यह दी महाराजा का मित्र था। यह धनराशि सूरजमल महाराज न गाजीउद्दीन के शत्रु मराठो से मुक्त करायी थी।

बातें करते हुए मैं उसी भवन मे आती हू, जहा हस्तलिखित ग्रन्थो का बहुमूल्य और दुर्लभ बृहद् सग्रह है। सुन्दर लकडी के काम की विशाल आलमारीज सन्दूक शैल्फ ऊपर नीचे के लम्बे चौडे गलरीनुमा गहरे कोष्ठक-चौपडे इन ग्रन्थो स भरे हुए हैं। यही कारण है कि डीग का हिन्दी पुस्तकालय साहित्यिक अभिरुचि रखन वाले पयटको के लिए जिज्ञासा और आकर्षण पैदा करने वाला रहता है।

सबसे प्रमुख और भव्य भवन गोपाल भवन है। ढेरो कमरे गोख गोखी गोल मेहराबें बाजें गैलरियाँ राजशाही सिंहासनो बरामदे हर कमरे से लगी घुमावदार सीढियाँ इतनी सीढ़िया चारो ओर बिखरी हैं कि जहा से भी उतरें वही कमरा फिर सीढिया और कमरा कोई गिनती नही किधर स आये हैं!

कहा जाकर रुकेंगे ! आदि अन्त कहा है ? भटकते रहिये साथी खो गया है ढूढ़ते रहिये । घण्टा आवाजें वही गुजती रहगी रास्तो का ओर छोर नही—पता लगा कि यहा जबरदस्त भूल भुलया हैं—खूबसूरत पतली सीढ़िया सकरे जीने काली लकडी की कलात्मक खुदाई की किवाडें कीमती साकलें इतनी बारीक जालिया का कटाव जसे जालीदार कपडा तान रखा हो ! इन्ही से छन छन कर आता है जादुई मरमरी प्रकाश और शीतल जल की सुगधित छुअन देती रुक रुक कर आती शर्मीली सी हवा विभिन्न रगो के शीशो म जडे रोशनदानो से इन्द्रधनुषी हाशिये चारो ओर कटे बिखरे रहते हैं, इनसे और भी अधिक नयनाभिराम हो जाता है वातावरण ।

गोपाल भवन मे ज्यो ही प्रवेश करते हैं नीचे की मजिल मे प्राचीन डिजाइन के राजाशाही फर्नीचर, पीतल की मूर्तिया, सोने चादी की मीनाकारी और पच्ची-कारी की बेजोड मूर्तिया, बतन और खिलौने गुलदान शीशे का बडा मोहक कटवक का सामान शाही कुर्सिया विशाल मेजें और तरह-तरह के बडे बडे झाड फानूस हैं । दीवारो पर बहुमूल्य पेंटिंग्ज राजस्थानी राजपूत शैली के भित्तिचित्र बडी सुन्दर चित्र शली की छटा ।

हिन्दू शली और मुगल शैली का मिला जुला सम्पन्न कला सौन्दय सारे कक्ष अलग अलग सज्जा से सज्जित हैं । युद्ध, शिकार, दरबार, समारोह और यात्राओ की दीवारो पर विशाल पेंटिंग्ज लगी हुई हैं । शासको के तलचित्र प्रत्येक कक्ष मे मिलते हैं ।

ऊपर की दूसरी मजिल मे उच्च कोटि की बढईगीरी की तराशी कला का फर्नीचर, पास ही देशी विश्राम शैली मोटे मोटे गद्दे-मसनद झालरदार गद्दिया बगल तकिये लम्बे गुलगले गावतकिये । बीच बीच म चौकिया तश्तरिया जडाऊ रकाबिया हुक्के पीकदान दरवाजो पर झीने चुनटदार पर्दे सारा सामान बडी हिफाजत से रखा गया है— गद्दियो के कपडे दरक रहे हैं । बताया गया है कि यह उसी समय से दशनीय स्थल के रूप मे सजोकर रखा गया है । इससे ऊपर के कक्ष मे अतिथि भोजन व्यवस्था का स्थल देखा बडी नूतन शली से निर्मित घोडे की पूछ मानो मोडकर जमीन पर बिछा दी हो ! इतना बडा घेरा कि पचास साठ व्यक्ति एक साथ बठकर खा लें पी लें । सगमरमर का बडा सुदर खाने का देशी ढग ।

इस भवन की सबसे बडी आश्चयजनक विशेषता यह है कि सामने से एक मजिल का भवन नजर आता है । साइड स इसे देखें तो दो मजिलें स्पष्ट दिखाई देती हैं और जब पीछे जाकर इसका अवलोकन किया जाता है तब चार मजिलें अपनी स्थापत्यकला का अनूठा रूप प्रस्तुत करती हैं । इन मजिलो का प्रतिबिंब जब तालाब म गिरता है, उस समय जल मे मछली सी तरती कापती ये जाली द्वार गोख कगूरो से मढी गठी मजिलो की परछाइया चित्त को बौरा डालती हैं । कहा

जाता है कि इस तालाब के भीतर भी अंडरग्राउण्ड मंजिलें, मेहराबें और छतें सौंदर्य और माधुर्य की जीवन्त प्रतीक हैं। शाही स्वागत कक्ष की अपनी ही छटा है। भोजन के काम में आने वाली हर वस्तु सर्वश्रेष्ठ पीछे दीवार की ओर मेहराबदार तख्त गजब के पाये और हत्थे जड़ावदार काम रेशमी चंवर छतरी इतना बड़ा और आकर्षक, मानो शाहजहां का दीवान आम, दीवाने खास हो! इन सबका प्रतिबिम्ब पड़ता है गोपाल सागर में, जो भवन के पश्चिमी भाग को और भी मनोरम बना देता है।

यहीं देखा है काले और श्वेत संगमरमर का चमचमाता सिंहासन इसे दिल्ली के शाही महलों से लूटकर लाया गया था—इस भवन की गजब की वास्तुकला देखकर उस युग के शिल्पकारों की प्रशंसा से मन प्रसन्न हो उठता है—साथ ही अचंभा भी कि इतना बारीक संगमरमर का काम, सर्वोच्च चित्रकला और लकड़ी की बारीक कुराई का काम करने वाले कितने श्रेष्ठ शिल्पकार होंगे! इतनी शीतलता! जैसे बर्फ में जमा हुआ भवन हो क्योंकि चारों ओर ठण्डी हवाएं हमेशा जल में डूबी इस भवन की पिछली मंजिलें पूरा भवन ग्रेसैंस्टोन का बना हुआ है। इस भवन के ठीक सामने ऊंचे चबूतरे पर उत्तम वास्तुकला का साक्षात उदाहरण प्रस्तुत करता हुआ बड़ा सुंदर कलापूर्ण झूला है। मुगल झूला इसे भी महाराजा जवाहरसिंह दिल्ली से जीत कर लाये थे जिसे मुगल फिर ले ही नहीं सके।

सावन-भादों के जलमहलों की बनावट बड़ी विचित्र दुहरी तिहरी छतों का निर्माण चपटी-गोल ढलवां छत एक एक इन्च पर फव्वारे सभी का सेटिंग छतों और दीवारों के भीतर मकड़ी के जालों सा फैला हुआ तांबे की पाइप लाइन्स से जुड़े हुए लम्बे चौड़े बरामदे जड़ाऊ आभूषणों से स्तम्भ और दीवारों के मेहराब खुली हुई बारीक झिझरियों वाली बारहदरियां लहराती गैलरियां जब इन फव्वारों को खोल दिया जाता है तब पोली दीवारों और छतों की परतों में पानी की असंख्य धाराएँ भीतर ही भीतर दौड़ने लगती हैं—लगता है मानो बादल गरज रहे हैं जल के टकराने से बड़ी कर्णप्रिय ध्वनि विस्तारित हो उठती है जैसे उन विशाल भवनों में कोई अदृश्य शक्ति अपनी जादूभरी उंगलियों में जल तरंग बजा रही हो! उत्सवों समारोहों और मेलों के अवसर पर यह मुग्धकारी आभास देखा जा सकता है शासकों के हारे थके तन मन यहां अपने धन ज्ञान-गुण-कौशल से मौसम को अपनी मुट्ठी में जीतकर विश्राम करते थे।

वर्षा के फूलों का पूरा पूरा मधुवन इन प्राचीरों और छतों की भीतरी सतहों में प्रस्फुटित हो रहा है। धन्य हैं उस युग की स्थापत्यकला और इसके जन्मदाता शिल्पी यहीं से नजर आ रही है झूला ए-संगमरमर पर अंकित फारसी व अरबी की काव्यपूर्ण पंक्तियां साहस, शक्ति और सौंदर्य का एक समूचा काल पलकों में उतर आता है जल के कितने प्यारे अव्यक्त सावन भादों के इन महलों की कितनी मधुर कजरियां और सामने

कला का गव समेटे भूला लावण्यमय सगम सभी ओर बाहर भीतर फव्वार ही फव्वारे और भवनो को अपनी मलयजी बाहो म घरे कलात्मक उद्यान।

फिर है सूरज भवन मकराना (नागौर जिला) के कीमती सगमरमर स निर्मित बीच बीच मे प्राशकलर के मारबल की मीनाकारी मानो कीमती जेवर म बहुमूल्य नग जडे हो! बडी अनोखी कटाई और पच्चीकारी ऐसे सुदर कटिंग के डिजाइन महीन जालिया के झरोखे, जसे ताजमहल म दृष्टिगत होते हैं आधुनिक साज सज्जा ने पुरानी कलात्मकता के बीच आकर इसम और भी चार चाद लगा दिये है। यह आजकल डाक बगला क रूप म इस्तमाल होता है पूरा वातावरण यहा रूमानियत म डूबा हुआ है। किशन भवन की अपनी ही निराली शान है इसकी छतें भी श्रावण भादो के महला जसी तहदार है पानी के भयानक दानवी टैंक इधर उधर खडे है जिनम हजार टन पानी रिजव रहता था रात और दिन बला की गाडिया यह जल ढोती भरती रहती थी और ये आसमानी गुलाबी फव्वारे स्वग धरती पर उतार रहते थे। जल का जो मनोहारी स्वर पदा होता है इन्हें देखकर इनकी बनावट की बातें सुनकर और फव्वारा के जल सचालन की टेकनीक मालूम करके बुद्धि हैरान हो जाती है कल्पना से बाहर की बात लगती है पुख्ताकाम गजब की ईमानदारी से किया गया काम सबधातुओ का प्रयोग एकदम यूनिक चीज ऐसा चमत्कारिक फव्वारा का प्रयाग पूरे भारत म कही देखने को नही मिलेगा बताया गया है कि इतना बेजोड पुख्ता काम है टोटियों के ऐसे जोड जुडे हुए हैं कि यदि कही टूट फूट हो जाती है तो वह उसी ढग से कोई ठीक कर ही नही सकता।

सूरज भवन के पास ही जनाने महल है डयोढी रणवास इन्हे हरदेव भवन कहते हैं आरेंज कलर की मेहराबो और बडी सुदर बेल पत्तिया की कटावदार बदनवारो स सजे रचे हैं तीनो तरफ से जालिया बारहदरियो से घिरी बडी प्यारी इमारत है जितने नाजुक पाव यहा टहलते होंगे वसी ही मोहक छवि इस भवन की है। किशन भवन क पीछे और ईस्टन टैंक के पास मखमली दूब की हीरक मजूषा म यह नगीना रखा हुआ है। दो कम्पाउन्डस 'म बडा सुन्दर भवन है राजा बदनसिंह द्वारा निर्मित।

चौरस मैदान मे नवलखा हार से सजे हैं ये डीग के जल महल स्थापत्यकला के ऐसे अनुपम नमूने कि सभी एक दूसरे से बनावट म अलग अलग किसी का मेल किसी की तुलना किसी से नही किसी स्टेट के पास ऐसा प्रस्तर कला का भण्डार नही होगा शायद! चारो ओर प्यारे सुहाने बाग बगीचे हजारो फव्वारे विशाल बुर्ज बडे कगूरों टरेस राजस्थानी और मुगल शैली की बारहदरिया गुम्बद लगभग सात सौ आठ सौ फुट म फले ये जल महल।

अष्टकोण की शक्ल का नद भवन केशो भवन इसे दगल का अखाडा भी कहते हैं राजा महाराजाओ का फुरसत का क्रीडा स्थल पहलवानी कुश्तिया

हुआ करती थी गुज की कुश्तिया जो भी विजयी होता उसे सोने की हत्थी और चादी की गुज इनाम म बख्शी जाती थी इस भवन मे कही कही मुगल स्टाइल छाप है गुबद जालिया स्तम्भ मेहराबो के कटाव बडे नुकीले और सुदर है। द्वार छज्जो म डबल कगूरे और पत्थर सगमूसा की तराशी झालरें हैं चारो ओर राजाओ ग्रहलदारो के बैठने की शानदार दीवाए जहा से वे लोग दगल कुश्तिया देखते थे। यहाँ जो पिलर हैं उनकी खुदाई और फूल पत्तियो मूर्तियो की उकेरन बडी ही लुभावनी है—दो कुण्ड राधा कुण्ड और कृष्ण कुण्ड जब रगीन फव्वारे छोडे जाते थे तब कहते हैं कि पल पल म लाख लाख रगीन पारदर्शिया बिखर जाती थी मेले समारोहो म आज भी यही जादुई आमन्त्रण दृष्टियो को खीचता है कृष्ण भवन की शोभा की क्या तुलना ? सुन रही हू कि यहा महाराजा का दरबार लगता था महाराजा सूरजमलजी और उनके बहादुर पुत्र महाराजा जवाहरसिंहजी यहा रहते थे आगे चलकर गद्दी लेने के पश्चात् महाराजा जवाहरसिंहजी भरतपुर के अजेय दुग लोहगढ म चले गये, लेकिन इस भवन की सज्जा, भव्यता मे कोई कमी नही आयी।

आज आधुनिक वातावरण की छुअन हैं—प्रदशनिया कला दीर्घाओ की प्रदर्शनिया सकडो दुकानें, तम्बू दगल कुश्तिया काव्य गोष्ठिया विस्मित कर देने वाले करतब यहा इन दिनो अपने अपने कमाल दिखाते हैं आस पास के गाव नगर उमड आते हैं चार हजार से छ हजार तक यात्री गण चौरासी कोस की पदल यात्रा करने वाले गुसाइयो की यह वन परिक्रमा होती है—सभी मदिर मठो की गद्दिया आती हैं ब्रज भूमि की सारी की सारी गद्दिया सूय मदिर और चन्द्रमा मदिर के महतो की गद्दिया जब आती हैं तब लगता है कि राजा महाराजाओ की माना शाही सवारिया हों पूरे लवाज मे ठाट बाट, हाथी घोडे और रथ बताया गया है कि चन्द्रमा मदिर के महत भरतपुर राज्य के धम गुरु रहे शासको का सरक्षण इन महतो को मिलता रहा प्रकूत धन वभव और जमीन इन लोगो के पास मदिरो की सेवा और रख रखाव के लिए मिली हुई है और भी हजारो बाबा साधु लोगो की वन यात्रा गोवधन, गोकुल, जतीपुरा आदि ब्रज विस्तार की यह यात्रा जवाहर प्रदशनी का प्रमुख आकषण है। इस आयोजन पर दो हजार फव्वारो का पारदर्शी प्रदशन चलता है चार-पाँच दिन तक जब गुसाइयो की गद्दिया विश्राम करती हैं क्योकि डीग मे इन चौरासी कोस की परिक्रमा करने वालो का अतिम पडाव होता है आमोद प्रमोद की स्थली इन जलमहलो की सुखद वायु से ये लोग अपनी थकान को दूर करते हैं—फव्वारो की कुल्फियो और पीतल की कलात्मक सुराहियो से जब ये बौछारें छुटती हैं तब लगता है कि जसे रगीन पोटलिया तालाबो म घोल दी हैं।

प्रहरियो की तरह खडे विशाल जल टैंक छ सात लाख गलन पानी अपने भीतर समाये हुए दिल्ली से जीता काले बहुमूल्य पत्थर का सिंहासन और

हनुमानजी की विशाल सिंदूर मूर्ति इस समय दूसराप्राकयण रखती है इस समारोह म। बाद मे आधुनिक उपकरणो ॥ सज्जित अतिथि विश्राम गृह और टलीफान एक्सचेंज देखकर बाहर के उद्यानो से घुमावदार पगडडिया पार करके गापाल भवन के पीछ उस स्थान पर आ जाती हूँ, जहाँ महल की छवि तालाब की लहरियो म मछलिया सी तर रही है लाजवाब दृश्य जलाशय के नीले कनवास पर बडा खूबसूरत एक छाया चित्र वास्तव मे डीग के जल भवन तत्कालीन शासका की काव्यात्मक साहित्यिक, चित्रात्मक शैली सौ दर्यानुभूति स ओतप्रोत अभिरुचि के प्रतीक है। साथ ही उस काल के कलाकारो, शिल्पियो कारीगरा और इन्जीनियरो की बहुमुखी प्रतिभा के जीव त प्रमाण सहित उदाहरण हैं इतिहास के शौय पराक्रम, शासन व्यवस्था के और चिन्तन के बीच बीच मे कला सौ दय पृष्ठ फव्वारो के आभूषण पहने डीग सुन्दरी जल की तलहटी से लेकर सतह तक फैला जल महलो का अपना सौन्दय और वभव जल-पोत मे खिले तरह तरह के कमल सोचती हूँ कि कहाँ म आता होगा इतना जल ? कैसे बनी होगी ये भव्य इमारतें ? कहाँ से इकट्ठे हुए होगे इतने मजदूर ? कसे होगे वे हुनर के मालिक कलाकार ? किस प्रकार, किन किन साधनो के द्वारा धन आया होगा ? राज-खजाने की सम्पदा का स्रोत क्या है ? सभी का उत्तर आधा-अधूरा एक ही दिमाग म आ रहा है कि रयत प्रजा का पसीना जमकर स्वण चट्टानें बनाता रहा शायद । देह श्रम पिघलकर महला के मोमिये ढाचे बनाता रहा, जिस पर ऐश्वय की हास विलासपूण परतें चढती गयीं, तभी ता प्रत्येक किले-दुग महल की नीव मन को दर्दीला सा बना देता है सुगधित झकोरो के बीच गम-सी सास भी दृष्टि को तपा देती ह।

सुरम्य हर्ष-गिरि

राजस्थान की पहचान विविध रगो मे रची बसी है। यहा की सस्कृति म त्याग, तप और बलिदान चन्दन गध की तरह सुरभित रहता है एक एक ऐतिहासिक स्थलों, गढ कोट किलो मे उत्कृष्ट कला बिम्बित होती है और यहा जन-जीवन मे सैकडो कथा कहानियो का स्पश गुम्फित हुआ मिलता है। वष भर लोक-गीतो और लोक नृत्यो पर पव त्याहारो, मेलो आयोजनो की सौरभमय गू ज थिरकती तैरती रहती है। शक्ति और कला का अद्भुत सयाग, आन बान शान के अप्रतिम उदाहरणो से भरा हुआ है यह प्रान्त

इसी राजस्थान म प्रसिद्ध स्थल है हषगिरी। विभिन्न प्रस्तर शलियो की सर्वोच्च कलात्मक खण्डित मूर्तिया का विशाल भण्डार समेटे हुए पवत। इतिहास और जनश्रुतियों के हस्ताक्षरो से युक्त इस स्थल का देखन के लिए देशी विदेशी सलानियो बुद्धिजीवियो, इतिहासकारो, पुरातत्व विभाग के अधिकारियो और धार्मिक भावनाओ से सलग्न व्यक्तियो की भीड आकर्षित होती रहती है। सुन्दर और कलात्मक शिव का मन्दिर उत्कृष्ट मूर्तियो का महत्वपूर्ण खजाना और बहिन भाइ की अनुपम कहानी का परिचायक यह हष गिरि वास्तव म दखने आने वालो के मन के तारा को हष से झकृत कर डालता है। इतनी बहुयामी प्रशसा, महत्वपूर्ण वर्णन सुनने क बाद मेरा हृदय भी वहा जाकर यह सब कुछ देखन का आतुर हा उठा है।

इतिहासकार श्री वमा जी, नवलगढ के कुवर सग्राम सिह जी और मैं इस अनुपम पवत के सौन्दय को देखने चल पडे है गाडी जसे ही सीकर जाकर रुकी और आगे जाने के माग की हम लोग जानकारी लेने के लिए उत्सुक हुए, तब पता लगा कि यही से पवत की बेढब चढाई शुरू हो जाती है, जो आगे चलते चलते कठिन और खतरनाक हा उठती है। कार से जाने का प्रश्न ही नही उठता। जीप अथवा जोगा ही जा सकता है। सभी के सामने चि तन का घेरा बन गया। जाना तो जरूरी है। कार को सीकर म ही छोडना पडेगा। जीप मिल जाये कोई यह एकदम नामुमकिन है। फिर ? फिर तो जोगा ही लेना पडेगा ऐसा, जिसका चालक कुशल हो। ड्राईविंग मे चुस्त होशियार। एक घण्ट की दौड धूप के बाद यह सब कुछ मिल गया। पूरे दिन पवत वास होगा इसलिए हम जिज्ञासा तथा

खाद्य पदार्थों के साथ हर्ष पवत की उपत्यकाओं की ओर उन्मुख हो गये। यह स्थान सीकर से लगभग तेरह चौदह किलोमीटर दूर है। पहले आता है हरस नाम का गाव फिर हर्ष पवत।

दृश्य बड़े ही मनोरम होते जा रहे थे। मौसम बडा खूबसूरत हवा म बला की मदहोशी। पवतीय वातावरण और भी रहस्यमय सा होता जा रहा था। प्रत्येक मोड मन मे खतरा और उत्सुकता जगा रहा था। जितनी अधिक ऊँचाई आती जा रही थी उतनी ही गहरी हरी भरी उपत्यकाएँ मन दृष्टि को बाध डाल रही थी। खेतो नालो के पार उन्मुक्त भाव से 'रेवासा खारडा —एक विस्तृत तालाब हाथ पात्र फैलाये अधमुदी आखो से हर्ष पवत की विशालता को निहार रहा था। रलावता झील वही पर राव शेखाजी की छतरी जिन्होने शेखावाटी बसाया चारो ओर प्रकृति के उत्सव तत्व बिखरे पडे हैं। गले मे लिपट रही थी अरावली पवत की धूसर श्रेणिया श्रद्धा नमन और प्रशसा के विनीत भाव पवत की विराट महिमा के समक्ष हृदय म बार बार उठ रह थे।

पक्के खुर्रे से चढाई और भी दुरूह हो गयी थी। चोरखाकी पर आते आते हर्ष का वृहद् रूप मोहने लगा था। गोमण्टी नामक स्थान से कठिन चढाई कम होने लगी और करीब एक-डेढ मील तक सीधी सपाट जमीन आ गई थी। इसी समतल भूमि पर चलते हुए हमको हर्ष पवत की खण्डित मूर्तिया का बिखरा हुआ वभव नजर आने लगा था। जीगा अचानक एक स्थान पर रुक गया। आगे अब नही जायेगा। पदल जाना होगा। चारो ओर पत्थर ही पत्थर ऊँचे-नीचे ककरीले रास्ते पवत की चोटी पर कितना विशाल चौरस स्थान! तीव्र गामी हवा के टहोकत हँसते झौंके ऊपर झुका निमल नीला आसमान जरी गोट सी चमकती चिलकती गहरी पीली धूप सब कुछ सुहावना और प्रलोभनीय।

सुनहरी गोट की आकाशी ध्वजा उडाता शिव का प्रसिद्ध ऐतिहासिक मन्दिर। वातावरण मे शुचिता की सुगन्ध कभी कितना भव्य पुनीत रहा होगा यह मन्दिर! मेरी कल्पना के रोमिल पख खुलन लगे थे कितना कलात्मक देवता का आवास! भगवान शकर का पवित्र स्थल मुख्य मन्दिर के सामने ही आगन मे बहुत ही भव्य श्वेत पत्थर की विशाल नन्दीश्वर की प्रतिमा श्रद्धा पूजा स ओत प्रोत यहा का प्रत्येक कण और सकेत मैं अवसाद भरे मन से ध्वस्त देवालय की ओर मुड जाता हूँ ओह! यहा पर प्रस्तरकला का श्रेष्ठतम खजाना अपलक दृष्टि से जाने किस ओर निहार रहा है! पवत के अन्तिम छोर पर यह देवस्थान है। खण्डहर हुआ रूप ही जब इतना अपूव सम्मोहनकारी है, तब अपने युग म इसका क्या स्वरूप रहा होगा? कसे कुलिष, निदयी अमानवीय हृदय के रहे होगे वे कठोर आक्रमणकारी, जिन्होन जातीय धम की जहरीली घृणा के कारण दारुण प्रहारो से देव ज्योति म उत्कीर्ण इस देवालय को खण्ड खण्ड नष्ट किया होगा? मन गहर तक उदासी म डूब गया था।

ऊपर वाले श्वेत शिव मंदिर से उतरकर मैं दसवी सदी पुराने चौमुखा शिव लिंग ध्वस्त मन्दिर के सामने आ जाती हूँ। चारो ओर बहुमूल्य प्रस्तरकला स उकेरे गये पत्थर छिन्न भिन्न मूर्तिया से अष्टकोण घेरा बना लिया गया है। टूटे कलात्मक स्तम्भो को खडा करके गोलाई बनायी है। ऊपर बडी बडी भारी शिलाएँ चौकोर-लम्बे टुकडो से छत छा गी है और तारा ■ बधा लिपटा शिवलिंग दरवाजा, इसके मजबूत खूबसूरत किवाड और चित्रित चौसटे वही पुरानी शली के हैं। शिवलिंग के ऊपर पीतल की चार छल्ला कडियो से युक्त साकला पर टिका है पीतल का कलश, जिसमे से बूँद बूँद पानी शिवलिंग पर टपक रहा है।

इस प्राचीन मंदिर के बाहर जगमोहन प्रकोष्ठ जितनी भी दुलभ मूर्तिया कुछ साबुत बची, अथवा थोडी छिन्न भिन्न हुई, उन्हे फश से लेकर छत तक ठसाठम जमा रखा है। भारत मे विभिन्न मन्दिरो मे जितनी मूर्तिकला के रूप हो सकते हैं सभी यहा दृष्टिगोचर हो रहे थे एक से एक बढकर स्तम्भो पर दीपक जालिया,कमल पुष्प फूलो बेला पत्तियो कगूरो की लाजवाब खुदाई कुराई सत्रह प्रकार की नृत्य मुद्राओ की लास्य भगिमाएँ--सुमन आच्छादित कोमल शाखाओ-सी नर्तकिया की लचग देह लताओ के भ्रमर झुकाव। श्रृंगाररती मोहिनी नायिका चवरधारिणी परिचारिकायें लम्ब भरा चुम्बित केशो का मुग्ध विन्यास जूडे मे कमल की झालर का सिंगार कगण म उलझा उत्तरीय मख मुद्रा विष्णु रूप धारण किये अनुरागलिप्सा विष्णुप्रिया लक्ष्मी पुष्प डाली लिय भावमयी तरुणी दपण' मे निहारती रूप गर्विता कही पर खण्डित, कही हाथ परन्तु भाव भगिमाओ म अनोखा आकर्षण वाद्य, नृत्य श्रृंगार रति सम्मोहन सगीत प्रिय विहार, हास्य लास्य मानिनी, मुग्धा रतिप्रिया एकान्त किलोल क्षणो की अनगिनत उच्चकोटि की कला की प्रतीक सैकडा मूर्तिया। चारा ओर रूप श्रृंगार का इन्द्रजाल।

मैं देखती हू कि ताजा दूध और सब्जी फल लेकर कुछ लोग उस भीषण चढाई को पार करके आ रहे हैं। उन लोगो ने भी मुझको देख लिया है। किसी स पूछा भी है। मेरा प्रयोजन जानकर परिचयात्मक दृष्टि लिये वे लोग मेरे पास आकर खडे हो गये हैं। पता लगा है कि वे भी यहाँ के देवालय के पुजारी हैं। नाम है श्री लादूराम जी श्री राधेश्याम जी इतनी विकट चढाई पर यह खाद्य सामग्री कसे ला सके हैं? मेरा आश्चय उनके चेहरो पर सुखद तुष्टि का आलेप उत्पन्न कर देता है "यह तो जी कुछ भी नही है हमको तो प्रत्येक आवश्यक वस्तु इन्ही टेढे मेढे और पहाडी चढाई के मार्गों से लानी होती है। अनाज दूध दही, सब्जी लकडियाँ सभी कुछ हरस गाँव से लाते हैं। क्या जी! इस गाव की आबादी? यही होगी करीब डेढ दो हजार" मैं पहाड की सबसे ऊँची चोटी पर खडी हू। यहा से गाव की छटा ऐसी लगती है मानो हरी छींटदार मखमल पर छोटे बडे मोती बिखरे पडे हो! नीला स्वच्छ आकाश एकदम सिर पर झुका झका लग रहा है। हम लोग बातें करते करते मूर्तियो की भंगिमा को देखते पूछते और

बताते हुए जल के टाको से नीचे उतरकर दूसरे चौरस पवतीय स्थल पर आ निकलते हैं। यहाँ पर भी इधर उधर ढेरो अलकृत मूर्तिया कौनो मे एकत्र देखकर हैरान रह जाती हूँ। पक्तिबद्ध मूर्तियो का अप्रतिम सौदय छिटका पडा है। साधुओ क साधना चौक महात्माओ की गहरी गुफाए हनुमानजी की भव्य मूर्तिया और एक नीचे द्वारवाली लम्बी गुफा जिसकी दीवारा पर जीवन्त आकारो वाली पृथुल पुष्ट मूर्तिया भूत पिशाच ताल बेताल भूतनी प्रेतनी वाद्य यत्रो के साथ नृत्य गायन की मुद्राओ म उत्कीर्ण अचम्भे की बात यह कि सभी मूर्तिया नग्न हैं! बाल ब्रह्मचारी श्रेष्ठतम चरित्र और स्वभाव वाले हनुमानजी के चारो तरफ ऐसा उन्मुक्त उल्लास? गुफाओ बाबाओ के सिद्धि स्थल समाधिया, तापसी स्थल सभी जगह प्रस्तर कला के आश्चयजनक नमूने दृष्टिगोचर हो रहे हैं नन्दराम बाबा की समाधि पर सिर नत हो जाता है। यही है कार्तिक स्वामी की प्रसिद्ध मूर्ति हैरत से बुद्धि सन्न सी रह जाती है। तीन हजार फुट ऊचा हप पवत अपनी गोद म प्रस्तर कला का कितना दुलभ खजाना छुपाये वठा है! इसी की देह पर चदन लेप से चर्चित भक्ति फूल ये मन्दिर जब दुष्ट दारुण प्रहारो से चूर चूर किये गये होगे, तब से लेकर आज तक यहकितनी मूक वेदना अपनी पलाको मे भरे हुये हैं! इतिहास का कितना सजीव पृष्ठ है यह। भला बिना देखे कौन जानता होगा? किसे विश्वास होगा इसके वास्तुकला भण्डार पर?

राधेश्यामजी मेरी तन्द्रा फिर तोडते हैं 'ये देख रही हैं न भयानक गहरी घाटिया। इनमे जरक बहुत मिलते है। भेड़िये तेंदुए से भी खतरनाक खेतो-खनिहाना मे नुकसान करते हैं—भेड बकरिया को फाडकर खा जाते हैं। औरतें काम करने या लकडिया बीनन जब जाती है तब बडी सतर्क रहती हैं इनस अब यह बात ता सच है कि जितनी खूबसूरती है हप पहाड मे और नीचे जीण माता पर उतना ही विकट यहा का जगल और इधर की चढाई है।"

मैं साधुओ की समाधिया गुफाओ का चक्कर लगाती हुई ऊपर वाले समतल चबूतर पर आ जाती हू। उन्मुक्त हवा के झोके और दृष्टि सीमा तक फले गाव नदी खेत मन को विमोहित किये डाल रहे हैं। सारे चौकोर चबूतरे पर बडी बडी पत्थर की कलात्मक चौकिया बनी हुई है। यहा पर भी लास्यपूर्ण लवग सौ दयमय मूर्तियो की कतारें लगी हुई हैं इतनी चौकिया कगूरो वाली यहा कसे? मेरी उत्सुकता व्यग्र हो उठी है।

लादूराम जी बताते हैं— ओहो! ये चौकियाँ नही हैं? यही तो चौरासी मन्दिर थे पहले यहाँ पर चौरासी हाथ ऊँची प्लिथ पर य मन्दिर बने हुए थे। चौबीसो घण्टे यहा पर सवा मन घी के दीपक प्रज्ज्वलित रहते थे—कोसा तक इनके विशाल घण्टो की ध्वनि गूँजा करती थी। पूरे भारत म मन्दिरो की निर्माण कला

का निचोड़ इन मन्दिरों में समाहित था बेजोड़ बेमिसाल। इसी प्रसिद्धि पर औरंगजेब ने इन्हें टुकड़े टुकड़े करके नष्ट कर दिया था। गायें वध की गयी इनके प्रांगणों में और उनके लहू से देवताओं की पवित्र मूर्तियाँ और भरतजी की प्रतिमा को भ्रष्ट किया यहाँ तक कि भरतजी का उठाकर कुण्ड में फेंक दिया, लेकिन थोड़े दिन बाद यही मूर्ति फिर प्रकट हो गयी। ये असंख्य मूर्तियाँ इन्हीं चौरासी मन्दिरों के समूह की हैं। यह देखिये, उत्तम वास्तु शिल्प के अलभ्य नमूने '

सलेटी भूरे, सिंदूरिया रंग की अलंकृत मूर्तियाँ अनूठी देहयष्टि कई स्तम्भ कंगूरेदार मेहराबें, वन्दनवारें एक ही पत्थर में पूर्ण मूर्ति-कलश फूल सप, शिकार, वन्य पशु पक्षी, शेर का आखेट नौका विहार, मोर आदि की सुन्दर सुडौल आकृतियां दीवारों पर अप्सराओं की नृत्य भंगिमाएँ खिलौनों से खिलाती शिशु माता की छवि, चवर डुलाती शृंगार प्रिया, वाद्य संगीत में लीन मुग्ध घोड़े-हाथी की सवारी रथ पालकी सूर्य-रथ, युगल मिथुन-क्रियारत, लेकिन सभी कहीं न कहीं टूटी, झरी, तड़की इतना अम्बार कि एक के ऊपर एक ठस ठस चिनी हुई।

एक तिरछे कोने में नन्दी, फूल, चक्र सिंह, मीनाक्षी मुखी परियां टोडे, अण्डाकार बारीक खुदाई की छतों के टुकड़े चूड़ीदार थम्भ स्तम्भ मालाओं की सज्जा, एकदम सजीव अतुलनात्मक एक पूरा ऐसा स्तम्भ जिसमें ढोलक मृदंग, ढोल वीणा संतूर आदि वाद्य बजाते हुए नर्तकों की टोलियां हाव भाव नृत्य के साथ टंकित हैं विभिन्न शैलियों की शिल्पकला सभी सौ दयवती छवियां

इन्हीं का अवलोकन करती आश्चर्य में डूबी हुई आसमान चुम्बित शिखर वाले महादेव मन्दिर के पास फिर आ जाती हूँ—तीन हजार फुट की ऊँचाई से गांव खेत, सड़कें, नदी नाले बच्चों के जैसे खिलौने लग रहे हैं। पुजारी जी बता रहे हैं— सामने रहा खोरी गांव उधर है मड़ावरा वह रहा सीकर रोड दूर दिखाई देता सावली हास्पिटल, इसके बीच हरे भरे पेड़ मदान, धरती को आलिंगन में कसे क्षितिज गुनगुनाती पहाड़ियां हँसता अरावली इस रेखा में इधर ममक भी बनाया जाता है।

मन बावला हुआ जा रहा है। जैसे कोई हीरे जवाहरात जड़े आभूषणों को बेदर्दी से तोड़कर जमीन पर गिराये। इसी प्रकार एक एक इंच पर जड़ाऊ पत्थरों के टुकड़े इतिहास की टीसभरी दास्तान बोलते हुए से लग रहे हैं नदियां, दरारों में दर्द पिरोये हाथी के अवशेष खण्डित शिवलिंग काले पत्थर के गणेश सभी में अतीत की पीड़ा

हूप गांव के युवकों की अन्य अनुभवी व्यक्तियों की कुछ टोलियां आकर हमारे वार्तालाप में शरीक हो जाती हैं हूप पर्वत और नीचे बसे जीणमाता के अत्यधिक

प्रसिद्ध धार्मिक स्थल की कहानी सुनाने लगते हैं। यह कहानी यहा के जनमानस की प्रेरणा है लोकगाथा है गीता मे पुरी हुई तुलसी ग्र थ है। इतिहास लुप्तप्राय हो गया है, लेकिन यही कहानी प्राण प्राण म अमर है युवको के लिए दृढव्रत की परिचायक और कवारी सधवाओ के लिए मगलकारी वरदान है

मैं हृप पवत की चाटी पर खडी लगभग तीन साढे तीन किलोमीटर की दूरी पर पीत पताका फहराते हुए प्रसिद्ध जीणमाता के मन्दिर की ओर देखती हू जीण और हृप की कथा सभी वातावरण को गम्भीर बना देती है वही कथा, जो जन जन की सासो मे आस्था भक्ति और अभिमान को पीयूष वर्षा करती रहती है बडी रोचक कथा सुनाते हैं पुजारी जी भाई बहन की यह अमर कहानी

देखिये जी पुराण पर जायें तो जीणमाता को इसके वणन के अनुसार देवी जयन्ती माना है, इसी म आगे के आलेखो मे इसे भ्रामरी देवी भी माना है। जीण माता के मन्दिर म भी कई शिलालेख आपको मिलेंगे, जो इस शक्तिपीठ का प्रामाणिक सकेत देते है लोकगीतो पर अगर ध्यान दें तब हरस भाई और जीण के लम्बे मधुर गीत हरेक ओठ पर बसे मिलेंगे दोनो भाई बहन की कहानी यह है कि ये दानो सगे बहन भाई थे। घाघू इनका गाव था। हरस था बडा छोटा बहन थी जीण। चूंकि माता का देहान्त हो चुका था, इसलिए छोटी बहन का भाई ने बडे लाड प्यार से पाला था बडे होने पर भाई का विवाह हुआ घर मे नयी भावज आयी, लेकिन भाई के हृदय का वात्सल्य जीण के प्रति पहले जसा ही छलकता रहा एक दिन ननद भावज पानी भरकर लोटी रास्ते मे भावज ने कहा कि देखें हरस किसक सिर से पहल पानी का पात्र उतारेगा? जिसके पात्र को पहले उतारेगा, उसी को वह सबसे ज्यादा प्यार करता होगा? बहन बोली, देख लेना भौजाई जीत मेरी होगी घर पहुची दोनो विधि का विधान कि हरस ने पत्नी के सिर पर से पहले जल का कलश उतारा फिर बहन की सहायता के लिए मुडा भौजाइ न ननद को तीखे व्यग्य मे लिपटे ताने जो दिय कि जीण खिन्नमना होकर बाहर निकल गयी और जगल मे तपस्या करने लगी भाई ने बहन को घर लौटा लाने के लिए बहुत मनुहार चेष्टाएँ की लेकिन वह फिर नही लौटी। हरस को भी घर गृहस्थी असार ससार से घृणा हो गयी और वह भी पवत पर चढकर घोर तपस्या म लीन हो गया तभी से पवत का नाम हृप पवत और थोडी दूर जीण माता का मन्दिर भक्ति से पूजा जा रहा है। इतिहास जब इस सवेदनशील कथा क साथ और जुडा हुआ मिलता है, तब मानवीय मनोविज्ञान अधिक अभिभूत हो उठता है। तभी तो ध्वस्त मन्दिरो का एक एक प्रस्तर खण्ड, बिखरी शिलाएँ सजा कर सवार कर रखी है। जीण माता भी इस हृप पवत की रक्षा करती है जब इन चौरासी मन्दिरो का नष्ट करने के लिए बादशाह की फौज आयी तब जीण माता की ओर से अनगिनत भवरो का दल उस पर टूट

पडा फौज मे भगदड मच गयी सिपाहियो ने देवी को भेंट चढाकर उसका कोप शान्त किया और अपने प्राण बचाये तभी से लगातार चतुर्दशी को हृष पर्वत पर भैरुजी का बहुत बडा मेला लगता है और जीण माता के मन्दिर मे भक्तो के मन की मुरादें पूरी होती हैं ”

हर्ष गिरि से उतरते हुए मेरे मन में भी जीण माता के दर्शन की लालसा एकाएक जन्म ले उठती है। जब इतनी नजदीक वह देवी है, जो काम काज की व्यस्तता मे पिसे हुए मानव हृदय मे विश्वास और आस्था की अमरबेल फलाती है इस आपाधापी से भरे स्वार्थी वातावरण से बाहर निकालकर जी कुछ क्षणो के लिए पारिजात पुष्पो की सी सुगन्ध से मन प्राण हरे कर देती है क्या हम उस अनिर्वचनीय दर्शन लाभ से अछूते रहेंगे ? नही, हम शक्तिमयी मा को अवश्य प्रणाम करेंगे।

हमने अपना जोगा हृष की बहन जीण की तपोभूमि की ओर सहृष घुमवा दिया है। सुरम्य वनश्री, पहाडिया, ऊँचे नीचे पथरीले कहीं सपाट रास्तो को पार करते हुए हम रेवासा गाव दक्षिण की ओर बसे इस देवस्थान पर पहुचे। चारा ओर जलधाराएँ, घाटिया और अडावला गिरिमालाएँ नील सघन शीतल पेडा की कचपचिया छाया स आच्छादित उपत्यकाएँ।

मैं सीढिया, चौक कमरे बरामदे और बारहदरी को देखती हुई ऊपर मन्दिर म बठे हुए बडे पुजारी जी से बातें करती हू दीप जल रहे है बडा धुंआ हो रहा है। देवी की मूर्ति दिखाई नही पड रही इस धूम्रपर्तों म काफी देर म दृष्टि उस वातावरण की अभ्यस्त हा पाती है तब भीतर जाकर देवी के चरण स्पर्श करती हू। अन्य कई पुजारी लोग आ गये हैं, चारा ओर सन्ध्या पूजा आरती की तयारी चल रही।

पूरे मन्दिर मे पत्थर की प्रतिमाएँ खुदा हुई हैं। छता दीवारा, स्तम्भा पर तान्त्रिको, वाममार्गियो साधनारत भिक्षुओं और बौद्धा की मूर्तिया उत्कीर्ण हैं बलि दान का भी इंगित है। शायद मास मद्य का भी प्रयाग चलता होगा। सभी पूजा अर्चन करने वाले पुजारी वर्ग ब्राह्मण और क्षत्रिय हैं पाराशर और चौहान गोत्र वाले मेरे पूछने पर कि वेतन आय के क्या साधन हैं ? एक पुजारी जी मरे हाथो म फूल प्रसाद देत हुए बताते हैं कि— इस मन्दिर की जो भी आय चढावा है, उसी का सभी में हिस्सा बाट दिया जाता है।' 'क्या हृष और जीण की जो अनुरंजित लोककथा है, वह सत्य है ?' मैं अपनी जिज्ञासा व्यक्त करती हू सभी पुजारी लोग हस पडते हैं—बडे पुजारी जी भाव विभोर हो उठते हैं—'बहन ! य शिलालेख, इनके सुप्त इतिहास, पुराण काल यह सब तो होता है एक अलग वर्ग के लिए जो समय विशेष को ओतप्रोत करता है लेकिन एक वर्ग विशाल ऐसा होता है जहा मन की तृप्ति साधना विश्वास, दैनिक जीवन के लिए प्रेरणा उदाहरण

श्रौर दु ख सुख बाटने वाला श्राख्यान चाहिये ठीक है न ! यह लोककथा ही सच्चे श्रर्थों मे उस जीए माता के मन्दिर की प्राए है रौनक है अनवरत् श्रचना है गीता मे कथाश्रो म यह जीवित रहती है हर क्षए कई कहानिया हैं सवमा य है हरस भाई श्रौर जीए बहन की लोकगाथा आप तो हप पवत से लौटी हैं वहा सुनी ही होगी यह कहानी ! बालक, वृद्ध, महिलाएँ बहु बेटियां बौरायी हुई इसी कथा रज्जू पर ही तो दौड दौडकर आती हैं भारतीय जनमानस ऐसी ही कथाश्रो के श्रास्था सेतु पर चढकर आत्मलीन होता है कि नही ! हप गिरि के नीलकण्ठ वहा की श्रनुपम खण्डित प्रस्तर कला जहा इतिहास के पन्ने दर पन्ने खोलती है वही जीए-माता लोककथा के माध्यम से हरेक मन श्रतल श्र तस की गहराई म श्रद्धा भक्ति का श्रमृत घोलती है ' हम एक बार श्रौर प्रकृति की गोद म तरगित हप जीए को प्रएाम करके लौट पडते हैं।

रहस्यमय अजेय दुर्ग : लोहागढ

राजस्थान, इसकी सरहदें, यहा के निवासियो का अपना विशिष्ट स्वभाव और इनके परम्परागत सस्कार विश्वविख्यात हैं। इस जमीन का मिजाज है क्षण क्षण जागता स्वाभिमान, जो शत्रु के सामने घुटने टेकना और युद्ध मे पीठ मोडना नहीं जानता और इस धरती का बेटा! कौन है इसके बराबर देशभक्त? स्वतन्त्रता के प्रहरी और अपनी बात क लिए प्राण उत्सग करन वाले असख्य वीरा की रोमाचक गाथाए। रोगटे खडे कर देन वाले पराक्रम साहस से गु थे बुने जान कितने ही चरित्र! त्याग, बलिदान और जौहर अपने धम, अपनी सस्कृति सभ्यता और कला की रक्षा के लिए इस वीर भूमि के वीर सपूतो ने समय-समय पर अमर काय किये हैं। इतिहास को सौंपे हैं, सम्मानित पृष्ठ स्वतन्त्रता के परवानो के अमिट चित्र। जाने कितने राजपत्रो मुहरो शिलालेखो, फरमानो और भित्ति-चित्रो के आधार पर हम इन शूरवीरो की साहस कथाए जान पाते हैं। फिर भी, क्या पूरी तृप्ति हो पाती है? जिज्ञासा और भी प्रबल वेग से क्या अगली खोज के लिए उत्सुक नही हो उठती? यहा का हर कण, जाने कितने युग, कितने सूय बिम्ब अपनी मुट्ठी मे दबाये जो बठा है।

ऐसा ही है राजस्थान का पूर्वी सिहद्वार भरतपुर। यहा का अजेय दुग लोहागढ" अप्रतिम विजय का द्योतक आकाश की ओर मस्तक उठाये एक ऐसा गर्वोन्नत किला, जिसने मुगलो से लोहा लिया, लेकिन अपनी स्वतन्त्र ध्वजा पर आच नही आन दी। अग्रेजो ने लाख प्रयत्न किये पर इसे जीत नहीं पाये यह योही हसता मुस्कराता रहा। आजादी क दीवानो की रक्षा करता, शरण देता रहा। शत्रु इसे छू नही पाया। आजादी के उल्लास स्वर हवाओ म लहराते रहे।

'दुग भरतपुर अडिग जिमि हिमगिरि की चट्टान
सूरजमल के तेज को, अब लौं करत बखान।"

इसी अजेय दुग की ओर मैं जा रहा हू। श्री सुरेश च द्र कोठारी, जिनकी सात पीढिया इस गढ मे कोठारी पद पर रही मेरे साथ हैं। कार दौडी जा रही है इतिहास मे अपूव पृष्ठ जोडने वाले भरतपुर दुग की ओर। वतमान को ढक कर अतीत पूरे वेग से उभर आया है। हर कण तिनका अकुला उठा है कुछ कहने को आतुर। शायद यही तो वे रास्ते, पगडण्डिया और घनी घाटिया रही होगी जहा से मुगलो के फरमान लौटे होगे, पराजित सेना टीसे होगे। यही कही अग्रेजो क घोडो की टापें गू जी होगी।

कानो के पर्दों से टकरा रही हैं अबूभी सी आवाजें हँसी व्यग्य, कराहटें क्रोध भरी हुकारें हाथी घोडो की घायल चीत्कारें तोप बन्दूको की दहला देने वाली गजना। एक के बाद एक तवारीख के पन्ने फडफडा रहे हैं। जसे कोई नेपथ्य मे पुकार रहा हो । इधर आओ देखो स्वाभिमान किसे कहते हैं ? [इसकी कैसे रक्षा होती है ? लहू से नहाये हुए वीरो का युद्ध शृङ्गार कसा होता है ? आओ, सुनो, अजेय दुग लोहागढ की मिट्टी क्या कहती है ? एक मीठी सी गध का आभास रत्न-जडित पायलो की रुनझुन मेहदी रचे सुहाग-चूडा सज्जित हाथो के मजरित आभूषण तिलक करतो मुस्कानें गव से दीप्त आगे बढत हुए च दनिया भाल पति पुत्र, भाई और पिता तलवारो की मूठ पर कसी शक्तिशाली हथेलियाँ यवनिका बदलती है। मुगल सेना सिर धुन रही है अब्दाली की हिम्मत पस्त है और वह एक गौराग चेहरा ! पसीने गद मे लिपटा नीली आँखो म पराजय का असीम दद हाथ मलता हुआ हताश व्यक्तित्व मैली पाशाक पर ताजे घाव होठो पर चटखती प्यास। यही है शायद लाड लेक! पाँच बार भयकर आक्रमण के बाद भी दुग को खरोच तक न दे सका। पराजित होता रहा और दुग ! कभी युद्ध कभी सगीत नृत्य, फिर युद्ध और विजय प्राप्त करता हुआ अडिग खडा रहा। ध्वजा यो ही इठलाती-लहराती रही। वीर पुगवो के नेत्रो मे स्वाभिमान के गुलाबी कमल खिलते रहे और युग इतिहास पर बार बार अपने हस्ताक्षर करते रहे।

योही भूले क्षण और सोये पात्र जाग रहे हैं कि दिन का सूरज रात मे खो जाता है। बडी प्यारी दूधिया चाँदनी ठण्डी सिहराती हवा। कार श्री चिरजीलाल पोद्दार की कोठी के सामने रुकती है। नगरपालिका के भूतपूव प्रध्यक्ष हैं प्रसिद्ध समाजसेवी और राजपरिवार के सलाहकार। भीतर हाल मे और भी कई प्रतिष्ठित सज्जन हैं। सबको पहले से सूचना होने के कारण हम लागो की प्रतीक्षा थी। सभी प्रसन्न हैं और अपने भरतपुर दुग की जानकारी देने को व्यग्र गर्वित।

श्री सुरेशचन्द्र कोठारी की इस यात्रा म प्रमुख भूमिका रही है। इन्ही के माध्यम से यहाँ के प्रमुख परिचय प्राप्त किये हैं और हिन्दी साहित्य समिति स ऐतिहासिक जानकारियाँ ली हैं। इन्ही के निवास स्थान पर हम ठहरते हैं। जो लोहागढ रात भर सपनो म आँख मिचौनी खेलता रहा सुबह वही हमारी कल्पना को वास्तविक आधार देने के लिए व्यग्र करने लगा। आखिर हम उस दुग की ओर चल देत हैं जो अपने आप मे एक मिसाल और भारत के लिए अभिमान है। श्री पोद्दार साहब श्री मोहनलाल मधुकर (हिन्दी साहित्य समिति के मन्त्री) श्री गोपेश शरण 'आतुर' (कवि) और कोठारी जी साथ हैं। मन फिर खामोश होकर कहीं खो जाता है। मिट्टी के विशाल घेरे का डण्डा (दीवार) शुरू हो गया है। हम रुक गय हैं या कोई दबा स्वर रोक रहा है कितना बडा, कितने दृश्या का साक्ष । अपनी देह पर बारूद के गोलो क फफोले लिए हुए। श्री गोपेश जी का स्वर लहरा उठता है। इस स्वर मे यह 'डडा' स्वय मुखर हो उठा है।

"जब लोड लेक के गोरो के खट्टे मैंने कर दिये दात,
सीने मे समा गयी मेरे, भीषण गोला की तीव्र पात।"

मैं देख रहा हू तराशे हुए पत्थरो का बेजोड किला कलात्मक चुम्बकीय आकर्षण बहादुर वीरो की शक्ति और विजय का जगमगाता हुआ सूय पुज स्वाभिमान के स्वर्णाक्षरो से स्वचित अमर ऐतिहासिक आलेख, उत्तर भारत के गौरव का एक अखण्ड अटल कीर्ति स्तम्भ शत्रुओ की बुद्धि को उसके प्रयासो को असमजस मे डालने वाली अद्भुत भूलभुलैया नर सहार करने वाले और दूसरो की आँखो मे काटे की तरह चुभने कसकने वाला यह पत्थर, मिट्टी और चून का बना लौह-वज्र पवत आज भी ऊँचा भाल किये अपने पराक्रमी स्वामियो की गौरव गाथाएँ सुनाने के लिए अडिग खडा है।

"गर तुम्हें फुर्सत जरा सी हो इधर आओ तनिक बैठो पास।
सुनाऊँ दास्ता तुमको, आज भी जो जज्ब दिल मे है "

इतिहास उगली पकडे घुमा रहा है। पत्थरो पर खुदे कथानक पर्दों स बाहर आ रहे हैं। देखिए नही मिलेगा ऐसा गढ। किसी न किसी किले पर कभी न कभी एक से अधिक विजेताओ ने अपनी ध्वजाओ का फहराया है लेकिन सदव एक ही पताका फहराने का गव और गौरव इसी दुग लोहागढ को है। किले दुग महल और गढी अधिकतर पहाडो घने जगलो दुगम घाटियो और ऊबड खाबड पहाडियो पर बने मिलेंगे। मगर ऐसी जगह पर बना किला, जहाँ दूर पास से पानी सिमट कर एक प्याले कटोरे का आकार ग्रहण कर ले और जहाँ पर स्थित किला दूर से तो क्या पास से भी दिखाई न देता हो यही लोहागढ का है किला

वसे तो कहावत है कि 'गढ तो चित्तौड गढ और सब गढया है लकिन यह किला अद्वितीय है। चित्तौड का किला ऊँचे पहाड पर है जबकि यह दुग समतल खुले मैदान मे खडा है। और मैदान मे सीना तानकर शत्रु को चुनौती देना कोई सरल काम नही। फिर चित्तौड का गढ विशाल पवत पर भी अजेय न रहा और यह किला नीचे खडा रहकर भी उन सारे शत्रुओ को पछाडता रहा जि होने इसकी ओर देखा। क्या मुगल क्या अग्रेज, और हाँ क्या क्रूरतम अहमदशाह अब्दाली इस गढ की पताका का रग जरा सा भी मैला नही हुआ।

श्री निरजनसिंह जी (सीनियर आई० ए० एस०) रह इनके पूवज राजा हमीरसिंह जी पिछोर राज के शासक थे जो अब (जिला गिद ग्वालियर मध्यप्रदेश-मे स्थित हैं) के अनुसार जिस स्थान पर आज यह अनुपम किला विद्यमान है वहाँ भरतपुर तहसील के लुहिया गाँव के रुस्तम नाम के सोगरीया जाट के पुत्र खेमकरन सागरीया ने सन् 1708 मे एक मिट्टी की गढी का निर्माण कराया था। सामने चार बुर्जो से सज्जित एक पक्की गढी भी बनवायी, जो आज भी चौबुर्जा के नाम से विख्यात है।

भरतपुर राज्य के पूवज नरेशो ने अपने को क्षत्रिय और भगवान श्रीकृष्ण का वशज तथा जाति से जादो भट्टी माना है। यदुवशी सिद्धपाल को अपना पूवज मानते हैं। इसी वश के पराक्रमी और बडे साहसी राजा हुए बालच द गाव-सिनसिनी। इनकी प्रसिद्धि से ही भरतपुर राज्य के वशज अपने को 'सिनसिनवार' जाट कहने लगे। इसी पीढी मे हुए दो-जीवट और प्रतापी भाई—सूरद (सिज्जी) और बिरद (विज्जी)। फिर आये इतिहास प्रसिद्ध राव बदनसिंह महाराजा सूरजमल महाराजा जवाहरसिंह। पीढिया चलती रही। एक से एक बढकर देशभक्त इसम आते रहे, आजादी के लिए जूझते रहे महाराजा बलव तसिंह, महाराजा जसव त-सिंह, महाराजा रामसिंह। 1900 मे आये महाराजा बजेन्द्रसिंह। इस प्रकार भरतपुर राज्य क अतिम महाराजा (अब भूतपूव) बजेन्द्रसिंह जी 145 वीं पीढी पर राजा रहे।

महाराजा बदनसिंह के पश्चात् (राज्यकाल 33 वप) राजकुमार सूरजमल का राज्याभिषेक डीग के न द भवन मे सम्पन्न हुआ, तभी से वे राज्य विस्तार मे जुट गये। आगरा मथुरा अलवर, धौलपुर हाथरस, अलीगढ, एटा, बुल दशहर, मैनपुरी फरुखनगर मेवात, रेवाडी गुडगाँव आदि इलाके इनके राज्य मे शामिल थे। सन 1733 म खेमकरन सोगरीया से भरतपुर की गढी जीतकर इसी को एक दीघ, पक्के मजबूत और सुरक्षात्मक किले के रूप मे बदल दिया।

यह सुदृढ दुग आठ वप म बना। किले की सुरक्षा के साथ साथ यहाँ के जन-जीवन की सुरक्षा पर भी पूरा ध्यान दिया। धार्मिक विचारधारा पुरुषोत्तम राम के भाई भरत के प्रति आस्था इसलिए इस नवनिमित नगर का नाम भरतपुर रखा गया। श्रीराम के भाई श्रीलक्ष्मणजी के मन्दिर की स्थापना की। प्रजाजन म मर्यादा न्यायप्रियता, पराक्रम और प्रण निभाने की भावना को सदव हरा रखने के लिए श्रीराम नाम का उच्चारण अभिवादन के तौर पर परम्परा के रूप म कायम किया, जो आज भी राम राम साहब' के स्नेह सम्बोधन मे मिलता है। महाराजा सूरजमल की महत्त्वाकाक्षाओ और दूरदर्शिता का प्रमाण है यह लोहागढ पुरानी गढी का चौबुर्जा आज भी शेष है। इसे आधुनिक रूप देकर सूरजमल पाक बना दिया गया है।

मैं किले की बुर्जों प्राचीरो मेहराबो स्तम्भ और फश देखकर हैरान हू। उस समय की अनोखी निर्माण कला! इतनी ठोस वास्तुकला का बेजोड उदाहरण! कैसे होते शत्रु के हौसले भला यहाँ कामयाब? श्री गोपालप्रसाद मुद्गल बताते हैं—
यह जब बनाया गया तब पुरानी गढी का पूरा मलवा काम मे लाया गया चूना इतना चिकना पीसा और ऐसी खूबी से पत्थरो म जमाया कि इसे कुदाली या अन्य औजारो स टाचना तक दूभर है। यह देखिए, किले की दीवारो के आसार (चौडाई)! दो ट्रक साथ-साथ निकल जायें। इस अजेय दुग का निर्माण कौडियो की मजदूरी स हुआ है।'

दुर्ग के राजवंश की राई रत्ती जानकारी रखने वाले श्री निरंजनसिंह जी के अनुसार—"महाराजा सूरजमल ने यह किला जानबूझकर इस जगह बनवाया देखिए यह स्थान रूपारेल और बाणगंगा नदियों के संगम पर है। वैसे इधर बारहमासी बहने वाली कोई नदी नहीं है। केवल चार नदियाँ—बाणगंगा, गंभीर काकुन्द और रूपारेल इस जिले में बहती हैं। वर्षा ऋतु में इनका वेग भीषण और बाद में सूख जाती हैं लेकिन दूर दूर तक फैली इनकी धाराएँ मिट्टी को इतनी उर्वरा बना देती हैं कि भरतपुर के किसानों के लिए वरदान और निवासियों के जीवन के लिए स्वर्ग बाणगंगा के पानी को मोती झील बंध में रोका जाता है। भरतपुर के उत्तर में डेढ़ कि० मी० की दूरी पर स्थित है यह मोती झील। इसी के किनारे पर विशाल खूबसूरत कोठी और बाग है। इसमें भू० पू० महाराजा बृजेन्द्रसिंह के कनिष्ठ भ्राता राजा मानसिंह जी रहते हैं जो आजादी के बाद से अब तक बराबर विधानसभा के सदस्य रहे हैं।

रूपारेल के पानी को पहले अजान बंध और फिर अटल बाँध में भरा गया, ताकि नगरवासियों को कुओं से मीठा पानी मिल सके यही पानी चारों ओर बनी पक्की नहर में पहुंचा दिया जाता रहा जो नहाने धोने-तरने के काम आता रहा। यह अटल बंध आज भी जीवनदान दे रहा है। उस समय यही मोती झील बंध भरतपुर राज्य के किले और नगर की बाहरी आक्रमण से सुरक्षा का आवरण देता था एक प्रकार का अभेद्य कवच। किले की रक्षा इसकी सदैव विजय इसी के कारण रही। इसकी विचित्र भौगोलिक स्थिति, विलक्षण बनावट के साथ ही महाराजा सूरजमल की देशभक्ति संस्कृति की रक्षा करने की भावना और राज्य की समस्त जनता का तन मन धन से सहज सहयोग का संकल्प इसे अपराजेय बनाये रहा।

कितना विशाल दुर्ग ! और यह रहा अष्टधातु का प्रसिद्ध विशाल दरवाजा ऐसे ही दूसरी ओर भी एक और दरवाजा लेकिन इस अष्टधातु वाले दरवाजे की क्या तुलना ? ऊँचा दृढ़ कितनी मोटी साँकलें ! कैसे कलात्मक कुन्दे ! नुकीली कीलें, सुन्दर कलात्मक बनावट। वर्णन मिला कि 1764 में जब महाराजा जवाहर-सिंह ने दिल्ली पर चढ़ाई की तब वहा के लाल किले में यह दरवाजा लगा हुआ था। मुगल बादशाह ने चित्तौड़गढ़ किले से उतार कर इसे दिल्ली के किले में लगवा लिया था। यह दर्द रणबांकुरे वीरों के कलेजे को मथता रहता था। इसलिए दिल्ली से इसे जीता एक और विशाल दरवाजा मुगलों का लिया और इस किले में लगा दिया। दो ही दरवाजे हैं यहाँ। फिर उत्तरी अष्टधातु का द्वार, कितने अभिमान का प्रतीक ! दूसरा दरवाजा दक्षिण की ओर चौबुर्जा के सामने है। दुर्ग में आठ बुर्ज हैं जिस पर भारी तोपें रखी गयी थीं। इन बुर्जों का बड़ा सामरिक महत्व रहा। जवाहर बुर्ज विशाल तोप लिए महाराजा जवाहरसिंह की लाडली बुर्ज। यहीं बैठकर रण चिंतन होता था उनका। यहीं से दिल्ली के लिए कूच की तयारी

की थी और इसी ऐतिहासिक बुज से एक दो नही, बल्कि पाच बार अंग्रेजी सेना का मुँह की खानी पडी थी। इसके अतिरिक्त खान बरम खा बुज, सिनसिनी बुज, मैंसावाली बुज, गोकला बुज, कालिका बुज बागरवाली बुज और नवलसिंह बुज।

किले की विशाल प्राचीरें नहर, खाई और चारो ओर फला मिट्टी का डण्डा ऐसा प्रतीत होता है, मानो आज भी नगर को अपने सीन से लगाये बैठा है। सतक दृष्टि की तरह उठी हुई तोपें मुझे बताया जाता है कि किले की दीवार 18 29 मीटर ऊँची और 9 14 मीटर चोडी है और इसके चारा तरफ है ढाइ कि मी लम्बी नहर। महाराजा सूरजमल का उपनाम था—'सुजानसिंह, इसलिए सभी इसे आज तक 'सुजान गगा" के रूप म जानते हैं। इसका महत्व? महत्व इसका बहुत है। इस नहर के घाटो पर बने कुँओ का ही पानी मीठा है, अ यथा आसपास के अ य कुँआ का पानी बेकार, खारा है। इसकी चौडाई 45–60 मीटर है और गहराई 13–14 मीटर। नहर के एक किनारे पर किले की ऊँची दीवार और दूसरी ओर पक्की दीवार (परकोटा) है। इसे 'ठण्डी सडक कहते हैं। इसके चारो ओर गोलाकार रूप मे भरतपुर शहर बसा हुआ है। फिर है पूरे किले और शहर की छत्रछाया बनी आश्चयजनक मिट्टी की विराट दीवार (डण्डा) यह लगभग 18 मीटर ऊँची 9 मीटर चोडी और निचाई पर आकर 61 मीटर चोडी है। इसमे दस दरवाजे इस प्रकार से बने हैं कि लाख चष्टा करने पर भी बाहर से किसी को दिखाई नही देते। इसी दीघकाल दीवार (सफील) पर रथ मे बठकर अथवा घोडे पर महाराजा जवाहरसिंह अपने राज्य, अपनी प्रजा का अवलोकन किया करत थे। दुग का ध्वज अजेय रहा है इसका पूरा श्रेय इसी मिट्टी के परकोटे को है। छिपने के रास्ते दिखाई न दने वाल दरवाज, भुलभुलया की तरह इसके गलियार, छोटी बडी ढकी तोपें फिर इसकी सबसे बडी विशेषता यह है कि जब शत्रुओ की तोपें मुह से आग के गोल उगलती थी ता व गम गोल इस मिट्टी के परकोटे मे धसकर ऐसे ठण्डे हो जात थे जसे समुद्र म बुझ गय हा (आज भी बच्चे, बडे कितने ही गोले बडी गेंद की तरह निकाल लेते हैं। अवलोकनाथ कुछ को म्यूजियम म भी रखा गया है।) शत्रु झुझला कर तज ऊँचो मार करता, तो सारे गोले शहर और दुग के ऊपर से निकलकर खाई या नहर म जा पडत। किला हसता चिढाता रहता।

यह देखकर मैं हैरान रह जाती हू कि किल क चारा आर जो सक्यू लर राड है उसकी ऊँचाई एक या दा मजिले मकाना की ऊँचाई के बराबर है। इतने नीचे बसाया गया था यह नगर और किशारी महल (महाराजा जवाहर सिंह की माता), महल खास (दादीजी का महल) और मोती महल कोई भी ता ताप गोला के घेरे मे नहीं आता था। शत्रु हारता नही तो क्या होता! बेचारे सिर धुन कर रह जात थे। जवाहर बुज के पास खूब मिटटी म दबे गोले निकल कर अंग्रेजा क विफल आक्रमणा की याद ताजा करत हैं। इस बुज क साथ किवदती जुडी हुई है

कि यहा से दिल्ली दिखाई देती थी, यही खड़े होकर महाराजा जवाहरसिंह जब भी प्रात मूँछें मरोडकर ताव देते थे, तब यह सकेत होता था कि दिल्ली सावधान ! धौसा बिगुल के साथ लोहागढ़ का शेर चलने को तयार है

ऐसे ही युद्धो और आसपास की चढाइयो मे उनकी एक आँख पर असर आ गया था और उन्हे कम दिखाई देता था। वे एक पैर से लगडाते थे। उन्होने जब दिल्ली फतह करने चित्तौडगढ वाला अष्टधातु द्वार लौटा लाने की प्रतिज्ञा की, तब दिल्ली मे त्राहि त्राहि मच गयी थी।

"लूटा खूब दक्खिन को, दबायो दौर जपुर को
छोडी डेढ चादर जलायो नग्न जाया को
तोडा दरवाजा फील हूल के हठीले भूप
आयो साफ जीत कर न लायो खौफ काहू को
दिल्ली नगरे, डग मगरे, पुकारें लोग हाय हाय
लोहा लगडे का याको गजब खुदाई को "

और यह है लम्बी चौडी खाई। इस खाई का यह अन्दाज कि जब चाहे इस पक्की मोरियो से भर दें और खाली कर दें। वसे यह 10–12 मीटर चौडी ऊँची 8 किलोमीटर लम्बी जो "गिर्द सडक' है, इसके बाहर जो खुली विस्तृत भूमि है उसे भी जब चाहे तब जल प्लावित किया जा सकता था फिर ! फिर क्या ? उस दिमाग को दाद दीजिए, जिसने ऐसे कमाल का निर्माण और भौगोलिक दृष्टि से श्रेष्ठ स्थल का चुनाव किया। तभी तो सारे हमले नाकामयाब होते रहे कसा भी प्रचण्ड आक्रमण क्या न हो, उस समय पराक्रमी योद्धा मोती झील के बाध के पानी से डण्डे (दीवार) की खाई को लबालब भर देते थे और यही पानी गिर्द की पक्की सड़क के चारो ओर फला दिया जाता था। इसी पानी की शक्ति के बल पर किले और नगर की सुरक्षा होती थी। इसी प्रयोग, युद्ध नीति व शौर्य के कारण जनरल लेक को गोरी सेनाओ को पाच बार पराजय की धूल सिर पर डालनी पडी थी, और तो और घुड़सवार अहमदशाह अब्दाली भी इससे दूर रहा। मथुरा तक वह आ गया था तब उसने सुनी लोहागढ की रचना की बात। हाथ पाव मार भी, परन्तु उसकी क्या चलती ? आखिर उसके मुँह से निकला—'या अल्लाह ! मराठा को कब्जे मे करना सम्भव है, किन्तु सूरजमल के विकट दुर्ग को अपने अधिकार मे लेना मुश्किल है।' उसके खदेडे हुए मारे गये लोगो के परिवार जनो को इस दुर्ग ने शरण दी। जिस अब्दाली से हिन्दुस्तान थर्राता था उससे सूरजमल ने झगडा मोल लेना मजूर किया, लेकिन शरण देने का धर्म नही छोडा। किले म गोला बारूद, भाले बर्छे बदूकें तलवारें अनाज वस्त्र इतनी प्रचुर मात्रा मे रहते थे कि युद्ध के समय पूरा ध्यान केवल सुरक्षा और विजय पर रहता था।

जो भी कुछ यहा कदम कदम पर मैं सुन रही हू वही इतिहास के पन्नो पर अमिट अक्षरो मे लिखा जा चुका है। स्पष्ट है कि भारत मे जब अग्रेजो की सरकार

सभी किला, गढा और दुर्गों को फतह करके उन पर अपने झण्डे फहरा रही थी, तब भी उनकी आख की किरकिरी बना हुआ था यह भरतपुर का किला एक भयानक सिरदद और एक इन्द्रधनुषी प्रलोभन। इसे अपन अधीन करने की एक भयानक जिद्द और इसी जिद्द म सन 1805 मे अग्रेज सरकार की फौजो ने जनरल लॉड लेक के नेतृत्व म प्रसिद्ध डीग के किले से चलकर भरतपुर के किले पर हमला करने क विचार से जोर शोर के साथ कूच किया। 3 जनवरी को 75वीं ब्रिटिश रेजीमे ट की सना भी आ मिली। नगर के दक्षिण पश्चिम भाग मे फले हुए बाग म उसने पडाव डाला जहा उसन तयारिया की। इधर किले के योद्धा अपनी तैयारी कर रह थे, जन जन एकजुट हो उठा था। पूरे मसूबे के साथ अग्रेजी सना बढी। 9 जनवरी को किले पर पहला हमला हुआ। किले मे रसद बारूद और हाथियो का समुचित प्रब ध था। मेजर जनरल डोडेस ब्रिटिश सेना का सचालन कर रहा था। दीवार ढाने के लिए छह ऊँचे और दो छाटे मिटटी के टीले बनाये गये। भारी आक्रमण था। दो दिन तक लगातार तोपें, ब दूकें गरजती रही। भरतपुर के वीर बडी दिलेरी और पराक्रम के साथ दनादन चलती तोपा को तिनके की तरह रद्द कर रहे थे। दीवारो, कच्चे पक्के परकोटो, बुर्जों पर कोई प्रभाव नही। लेफ्टिनेन्ट रिपन—हैरान। इस दुग के आदमी लोहे के बने हुए हैं या पत्थर की चटटाने हैं? इनकी कमान के 240 सनिक परेशान। तोपें भारी से भारी गोले दागती और वह आग का भयानक पिण्ड कच्चे डण्डे मे जाकर ठप्प। सारी आग ठण्डी। सेनापति मेजर हाक्स पागल सा हो उठा। लेफ्टिने ट कनल मेटलैड का तोपखाना थक गया। तोपचियो का कलेजा टूट गया। परिणाम यह रहा कि इस पहले हमले म लगभग 800 गोरे सिपाही और बहुत स अफसरा ने अपनी जान गवा दी।

इस हमल के असफल हाने का कारण था कि गोर सिपाही दूर दूर तक फल पानी के दलदल म फस जात थे। कुछ डण्डे तक आने के लिए नावा म आते, लकडी के लट्ठो पर तर कर अथवा घोडे पानी मे धम्ल चलाकर तब डण्डे पर लगीं तापें हे भून डालती थी। बर्छी भाला तलवारो के तीखे प्रहारो से वहीं ढेर हो जाते। कुछ आग बढते भी तो बदूकचिया की गोलिया के शिकार बन जात। आखिर तीना सेनापतिया ने मिलकर हमला करन की सलाह की इसका पता लोहागढ के वीरो को जब पटा ता फिर चन और आराम कहा? धुँआधार गोला गोलियो की वषा ने अग्रेजो का दुखी कर दिया। रात के घेरे म ही युद्ध। एक तो गाढा धकार फिर खाई कीचड और दलदल। सेना के पाव उखड गय। किले के वीर उन्ह पीछे धकेलते ही रहे इस बार भी बहुत क्षति हुई। कई अफसर काम आये। लाड लेक जान गये कि इन जुझारुओ को जीतना किला लेना हमी खेल नही। वह और अधिक उत्साह से आक्रमण की तयारी म जुट गया। भरतपुर के वीरो ने भी बडी बडी तोपा की व्यवस्था करली। अब हार जीत का नहीं,

बल्कि मान-सम्मान का प्रश्न था। फिर लाड पिछली करारी पराजय की भूझल उतारेगा। रणचण्डी की रगभूमि का विराट आयोजन होने लगा दानो ओर से। जहा कही भी दीवारो या डण्डे मे दरारें आ गयी थी, तुरत उनकी मरम्मत की गयी। भूखे शेर सा लाड लेक टूट पडा। चार दिन तक पूरी ताकत से जूझता रहा। तोपो के अग्नि पिण्ड प्रलय का दृश्य उपस्थित कर रहे थे, लेकिन किले से कोई गोला नही। पूरी खामोशी। अग्रेजी फौज से एक देशी सिपाही तोडा गया। किले के मार्गों की उसे गलत जानकारिया दी उसने यह भेद तुरत लाड को दिया कि भय की कोई बात नही। खाई ज्यादा गहरी और चौडी नही है दीवारें भी ऊँची नही हैं। अग्रेज प्रसन्न, उस व्यक्ति को इनाम दिया। कप्तान लिडसे 470 सनिको के साथ शेर की माद मे उतरा ही था कि पहले हमले की बौछार म ही लगडा होकर चित्त। नयी कुमुक आयी। पता लगा कि रास्ते पुल सीढिया और जल का नाप गलत बताया गया था। खाई तो बडी गहरी है टप टप टप गिरने लगे गोरे। अट्ठारह वरिष्ठ सेनाधिकारी खत्म। जो अधमरे भागने की कोशिश म थे उन पर पिंडारी वीरो ने धावा बोल दिया। एकदम कुचल गये।

बची फौजो को समेट कर तीसरी बार विशेष चेष्टा की गयी। हारी हुई सेना को उत्साहित करने के लिए लाड लेक ने ओजपूर्ण भाषण दिया। मनोबल ऊँचा करन के लिए घोषणाए जारी की गयी कष्ट असीमित थे। रसद नही, पानी का भयानक सकट 2000 बैलो पर रसद कुमुक लायी जा रही थी इसके अब धक थे कप्तान वेल्स। इसे चार तोपो के घेरे मे बीच म ही घेर लिया गया। वेल्स महोदय मार झेल नही सके। रसद लूट ली गयी। लॉर्ड की मदद के लिए जनरल स्मिथ के नेतत्व म एक ब्रिगेड फौज भी आयी, लेकिन किले की सुरक्षा म लगे वीर सनिको ने अग्रेज फौज के पाव जमने नही दिये। 18–20 अफसरो की आहुति देकर शत्रु पीछे हटने लगा। अग्रेजो न अपने डेरे से खाई तक जो सुरग बनायी थी उसे भी दुग वीरो ने बारूद से उडा दिया। इतनी घमासान लडाई लेकिन दुग जीत माना टेढी खीर। लेफ्टिनेट डेन ने सेना को आगे धकेलने का बहुत प्रयत्न किया लेकिन सेना इतनी हतोत्साहित और भयभीत थी कि उनके बार बार आडर देने पर भी, पत्थर के बुत की तरह खडी रही। खाई पार करना तो दूर, किनार तक भी कोई नही गया। आखिर बौखला कर यह पराजय भी इन लोगो का पीनी पडी।

'बाम्बे ट्रूप्स' की एक डिवीजन फौज बुलायी गयी और चौथी बार अग्रेज फौजो ने दुग पर बहुत बडा आक्रमण किया। इस बार भी 894 अग्रेज काम आये। कामयाबी हासिल होने का भला क्या प्रश्न ? फिर पाचवा भयानक हमला। किले के वीरो ने भी कमर कस ली थी कि प्राण चले जायें लेकिन झण्डा अग्रेजो का नही फहरायेगा। लाखों शिव नेत्र खुल गये थे। साहस स्वय सहस्रबाहु हो उठा था। आजादी का एक जुनून चढ गया था। शक्ति कुशल सचालन, बुद्धि कौशल

और लगन । सभी पराकाष्ठा पर थे । इसीलिए पाँचवें हमले का उत्तर गोरी फौजो पर प्रलय बनकर टूटा । केवल दो घटो मे 1000 सिपाही मिट्टी चाट समाधि ले गये । बहुत से अफसरो की वलि चढ गयी । 3203 अंग्रेज सिपाही मारे गये । सारे हमले बेकार सिद्ध हुए ।

अब लार्ड लेक के पास न तो शक्ति बची थी न साहस न गोला बारूद और न रसद पानी बीमार जख्मी और निराशा से लोगो की सख्या का अम्बार लगा हुआ था । आखिर इन सबको लाद भर कर वह भागा और डीग के पास एक सुरक्षित स्थान पर डेरा डालकर बैठ गया । बडा लज्जित अपमानित और कुठित । उसका पराक्रम और होसला पस्त कर डाला इस अजेय दुग ने । उसके सर्वोच्च और योग्यतम व्यक्तित्व की धूल उड गयी । इन नाकामयाब हमला के कारण, कलकत्ता और मद्रास स लाय गये तोपखान ध्वस्त हो गये । भरतपुर की नहर खाई शत्रु क शवो से पट गयी । भय इतना छा गया कि लोहागढ दुग क नाम से बुखार ! कलकत्ता मे हाहाकार मच गया । इगलैंड से व्यग्य उलाहना फटकारो की झडी लग गयी । एक ही पागलपन कि कस विजय करें भरतपुर क किले को ?

हुई मसल मशहूर विश्व मे आठ फिरगी नौ गोरा,
लडे किले की दीवारा पर खडे जाट के दो छोरा ।'

वास्तव मे इस गढ न अपना लोहागढ नाम अमर कर दिया । अंग्रेजो का सपना–चूर चूरकर डाला और वियोगी हरि को कहना पडा—

'यही भरतपुर दुग है दुजय दीह भयकार
जह जटटन के छोहरे दिये सुभटट पछार ।'

बाद म तग आकर लॉड लेक को तत्कालीन महाराजा रणजीतसिंह से सुलह करनी पडी । मोती झील की ओर से स्वर उभरता है कि यदि उस समय सिंधिया और भौंसलो की थोडी मदद और मिल जाती तो हिदुस्तान मे अग्रजो का तिनके बराबर भी सपना ठहर नही सकता था । खर यह गढ तो अपना मस्तक आकाश म ही उठाये रहा ।

1947 मे जब भारत आजाद हुआ तब उत्तरी भारत के राजपूताना प्रदश के 18 देशी रजवाडो मे स यह पहला था जिसने अलवर धोलपुर और करौली नरेशो के साथ मिलकर सयुक्त मत्स्य सघ राज्य की स्थापना म योगदान दिया और यह किला गणराज्य' की निधि बन गया ।

श्री एन० वी० गाडगील जब भरतपुर आये तब महाराजा बृजेन्द्रसिंह ने उन्हे दोपहर क भोजन पर आमत्रित किया । इस दौरान भरतपुर के इतिहास और अजेय दुग पर बातचीत चल पडी । श्री गाडगील के मुँह से एक प्रश्न अनायास निकल पडा— महाराजा साहब ! क्या मैं जान सकता हू कि वास्तव म भरतपुर कब

परास्त हुआ ?' अपने सिगार की राख झाड़ते हुए मुस्कराकर राजा ने उत्तर दिया, उन्नीस सौ सैंतालीस मे।' यह उत्तर सुनकर और बृजेन्द्रसिंह की आँखो म स्वाभिमान की तेज कौंध देखकर गाडगील साहब स्तम्भित रह गये।

इसके पश्चात् मुझे ऐतिहासिक स्थान फूलबाडी दिखाया जाता है। बताया गया कि महाराजा यही पर दशहरा होली अपने दरबारियो के साथ मनाते थे। उन दिनो इसी स्थान पर खास दरबार लगते। पास मे ही है दिल्ली दरवाजा। कहते हैं कि महाराजा जवाहरसिंह ने दिल्ली की लडाई जीत कर खून से भरा हुआ अपना खाडा (तलवार) यही आकर अपनी माता किशोरी जी को दिखाकर धोया था। तभी तो होते हैं होली दशहरा यहाँ पर! आज भी परम्परा का निर्वाह। किशोरी महल मे अब कन्या डिग्री कालेज है समय ने करवट ली है। पायलो की झकार के स्थान पर सरस्वती की वीणा का गुजन होता है। अपने कई ऐतिहासिक मन्दिरो बगीचा और सग्रहालय के कारण आज भी यह दुग देशी विदेशी लोगो का आकषण के द्र बना हुआ है।

भरतपुर और इसके अजेय दुग से विदा लेने का समय आ गया है। शूरवीरो की शौय गाथाओ को इस गर्वोन्नत किले का यहाँ की हर आवाज आहट और पत्थरो की धडकनो को मैं आदर से प्रणाम करके लौट रही हू। राजघराना पाद्दार साहब बहुमूल्य पुस्तकीय सामग्री जुटाने वाले पुस्तकालयाध्यक्ष सभी सहयोगी बन्धुओ के स्नेह, मान दशन सभी के प्रति आभारी-सी। एक अपनत्व भरा मोह-सा पाले हुए किले से उतर कर अष्टधातु द्वार पर मत्रमुग्ध दृष्टि डालकर चल दी हू। जहाँ हृदय शान अभिमान से भर उठा है, वही एक फाँस सी पीडा भी मथे डाल रही है। जब इतना इस जमीन को देखा—कहा है, तब यह भी दद लिखना-कहना चाहूगी कि इस ऐतिहासिक किले की अपने ही लोगो की ओर से कुछ अवहेलना भी दिखाई दी है मुझे। जिन दीवारो को, डडे को तोप के गोले नही दाग सके, जो जवाहर बुज पाँच बार विजय का सेहरा पहना चुकी, वही मली हो रही है। दीवारें अधिक बुढा उठी हैं। नहर की दीवारें खिसक रही हैं। कहीं कहीं घाट टूट रहे हैं।

सबसे अधिक दु ख और लज्जा की बात तो यह महसूस हुई कि निर्माण कला के बेजोड नमूने 'मिट्टी का डडा' को जगह जगह से तोडकर मनमाने ढग से बेतरतीब कच्चे पक्के मकान लोगो ने बना लिये हैं। इसके बलिदानों के प्रति यह कसी श्रद्धाजलि है ? मुझे ऐसा अहसास हुआ कि जैसे व्याकुल नेत्रो की विवश दृष्टि अपने ही लोगो के सामने बेचारी' सी हो उठी हो। डडे की सफील पर रथा क पहिये थरथरा उठे हा जहाँ वीरा ने साहस के सुख कसीदे लिखे हैं जा अपने भीतर एक पूरा युग सजोये हुए हैं, जो एक वसीयत है, प्रमाण-पत्र है आजाद रत्नो का अक्षय खजाना है, वहाँ ऐसा क्यो ? भूतपूव महाराजा के हृदय पर कितनी पीडा

दम मारती होगी ? इसी पीड़ा को और पूर्वजों की अखण्ड गौरव गाथा को अनुभूत करके राजा मानसिंह जी ने ऐसे ही ज्वलंत प्रश्नों को लेकर भूख हड़ताल भी की थी, लेकिन जोर जबरदस्ती से कोई दयादान मांगना अथवा देना, यह तो सम्भव ही नहीं है। यहाँ तो अपना भावनात्मक सम्बन्ध है। युग की थाती की रक्षा करनी है। अमर शहीद, काव्य और इतिहास का प्रकरण हमारा है सबका है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियाँ याद आ रही हैं

'इस ध्वज पर जूझे स्वजनों का ध्यान जहाँ आता है,
मस्तक ऊँचा होने पर भी मन भर भर आता है।
निर्भय मृत्यु वरण कर ही नर अमर कीर्ति पाता है,
ऐसे पुत्रों की ही आशा रखती भू माता है।"

———

इन्द्रधनुषी हवेलियां .
शेखावाटी के भित्तिचित्र

धन कुबेरो का नगर रामगढ

सीकर जिले के एकदम अन्तिम छोर पर स्थित है यह माया नगरी। सम्भवत् अट्ठारह सौ पचास के लगभग सीकर ठिकाने के राव राजा देवीसिंह के शासन काल मे सबसे पहले चूरू के एक सेठ श्री देवीप्रसाद पोद्दार अपने पूरे परिवार के साथ यहां आकर बसे। किसी कारणवश चूरू के ठाकुर श्री शिवसिंह से उनका कुछ सद्धान्तिक विरोध हो गया था। बस कुटुम्ब सहित इधर आ गए। पहले इस स्थान का नाम 'नाभा की ढाणी' था। राव राजा देवीसिंह जी ने इस नए बसे नगर का नाम अपने इष्टदेव श्री रामचन्द्र जी के नाम पर रामगढ रखा। इन्ही प्रसिद्ध और यशस्वी पोद्दारो के साथ उनके और भी निकट सम्बधी इष्ट मित्र और ब्राह्मण पुरोहित भी आए तथा इनके माध्यम से विभिन्न प्रकार की आजीविकाएँ प्राप्त करने वाले बहुत से कबीले कई जातियाँ भी इस नए नगर मे आकर रहने लगी। सुना जाता है कि उस समय यहा पर दुहाई राव राजा की थी और राज पोद्दार सेठो का था। इसीलिए इस नगर का नाम सेठो का रामगढ दूर दूर तक विख्यात हो गया है।

कई बार इस बहुचर्चित नगर की जब प्रशसा सुनी तब इसे देखने की इच्छा हुई कि आखिर कैसा नगर है ? कसी हवेलियाँ हैं ? इनकी बनावट और दीवारो की चित्रात्मकता का क्या रूप है ? देशी विदेशी पयटको के आकषण का केन्द्र क्यो बना है ? फोटोग्राफस क्यो वहाँ की हवेलियो का एक एक कोना कमरे की आँख मे उतारते है ? निर्माण कला को जानने समझने के लिए वहा ऐसी कौन सी श्रेष्ठ स्थापत्य कला है ? प्रतिवष कौन सी ऐतिहासिक खोजें वहाँ होती है ? हमेशा सत्रानियो के लिए वह कौनसी कशिश है जो खीचती रहती है ? यह सब बिना देखे, बिना जानकारी लिए कहाँ जाना जा सकता है? मन की गहरी जिज्ञासा रामगढ की ओर ले चलती है।

रीगस सीकर फतहपुर और रामगढ यात्रा म पता लगा कि शेखावाटी मे कई स्थान ऐसे हैं जहाँ की हवेलियाँ अपनी अनूठी बनावट और [illegible]

लिए आश्चय और आकषण का बिन्दु बनी रहती हैं। चूरू, नवलगढ, फतहपुर और झुन्झुनू जिले का महनसर और भी बहुत से नगर कस्बे लेकिन रामगढ की बात अलग ही है।

जसे ही फतहपुर पहुँचती हू कि यही से आँखें रगीन पारदर्शिया हो उठती हैं। थोडा माग और चलकर आता है रामगढ शेखावाटी-रामगढ से परिचित श्री गुप्ताजी साथ हैं।

वास्तव मे भित्तिचित्रो से अलकृत हवेलियो को देखकर बडा अचम्भा हो रहा है। सेठ साहूकारो की आकाश से बातें करने वाली हवेलियाँ। गगनचुम्बी बडी सुन्दर इमारतें। कला की विशिष्ट शैली। सारी इमारतें कलात्मक धरोहर के रूप मे फैली हुई हैं। कला अन्वेषका के लिए अनुपम खजाना है। हवेलिया का हरेक हिस्सा चित्रमय है इसके अतिरिक्त इन विशाल मकानो के दरवाजो, खिडकियो, छज्जो मोखो और बार्जो पर लकडी का, काठ का बहुत बारीक काम किया हुआ है। बढईगिरी की महीन नफासत मुग्ध कर देती है। चित्रकला की असख्य लघु शैलियाँ दीवारा पर उकेरी गई हैं। प्रत्येक हवली के मालिक ने अपनी कलात्मक अभिरुचि को अपनी शान शौकत की परम्परा से मिलाकर इसे एक दूसरे से बढा चढाकर बनवाने रचवाने म कोई कसर बाकी नही छोडी है। इसी होड म चरमोत्कष के कलात्मक भित्तिचित्र यहाँ उपलब्ध हैं। रगा का चयन, रेखाम्रा का अलकरण पोशाकों की मोहक सज्जा।

आभूपणो का सजीव अकन। तीखे नाक नक्श केश वि यास नख शिख का मोहक श्रृङ्गार। पुरुष आकतियो मे गव शक्ति का ओजपूण आभास। विषय वस्तु को साकार करती हुई प्रत्येक पृष्ठभूमि।

सोचकर हैरानी होती हैं कि कितने सिद्धहस्त श्रेष्ठ कलाकार होगे, जिन्हाने प्राचीन धार्मिक कथाम्रा लोक कथाम्रो और दनिक जीवन की समस्त युगधर्मिता को समकालीन चित्र योजना दीवारो, छतो छतरियो और गुम्बदो मे अमर कर दी है। इतनी सुनियोजित! कितने व्यापक कथाचित्र? कितनी सन्तुलित अगुलिया का कमाल? राग विराग की कितनी मौन-मुखर अनुगूँज महक? प्रकृति का शान्ति देन वाला खुला परिवेश। वृक्षो का सजीव रूप। तरह-तरह के पक्षिया के प्रिय आकार मनोहारी नृत्य करते मयूर बाँकी चितवन लिए खजन करुणा से छलछलाते मृग शावको के नेत्र सिंह सूअरो के शिकार चित्र हृदयहारी तोत कोयल अगुलिया पर बठे बाज कबूतर तरते हस और आकाश की नीलिमा का चीरते पक्तिबद्ध श्वत पाखी। कृष्ण गोपियो के ढेर ढेर नयनाभिराम चित्र कृष्ण का अनुराग भी और अर्जुन को गीत का प्रवचन देते हुए उनका कमयोगी रूप भी राम की कथा रास नृत्य।

मानना पडता है कि अपने समय की अत्यधिक व्यस्तता के बाद भी रईस सेठो ने विश्राम के थोडे बहुत क्षणो मे चित्रकारो कारीगरो और चित्रकला को कितना अधिक सरक्षण दिया था। रगकर्मियो से चित्रो का इतना विशाल ससार रचवा कर समस्त विश्व की चित्रकला मे राजस्थान का महत्वपूर्ण स्थान कायम किया। राजाओ की शुद्ध सात्विक वेशभूषा। कहीं युद्ध का चित्रण कही रनवास के विश्राम क्षण कही जल विहार उद्यान-किल्लोल कही महफिलो की छटाए होली के नृत्य दरबारी सगीत नृत्य ढाल तलवार पगडी अगरखे। पटके आदि के बडे विशिष्ट आकार। जाने कितने ऋतुचक्र नायिका भेद बारहमासा राग रागनिया राजकुमार राजकुमारिया रानी-राजा, प्रेमी युगल खेत-खलियानो मे काम करती नारिया पुरुष रूप पनघटा के दृश्य तीज गणगौर और भी बहुत से व्यक्तिगत अकन।

हवेली के बाद हवेली। मन्दिर के बाद मन्दिर। छतरिया देखते देखते आश्चर्यचकित रह जाना पडता है। समय का आस पास का न अनुमान, न होश। कल्पना की कुची से यथार्थ के बिम्ब फले हुए हैं। एक कदम बढाया कि मुस्करा कर रोक लेते हैं मन को। दृष्टि को सम्मोहित कर बाध लेते हैं। मुश्किल से आगे चले कि फिर वही जादू।

शुद्ध हिन्दू शैली पर आधारित देवी देवताओ के भव्यचित्र बने हुए हैं। भागवत पुराण महाभारत, रामायण, अवतार कथाए प्रेम अनुराग मिलन बिछोह साधारण असाधारण, हर प्रकार का मानवीय मनोविज्ञान और कर्मफल इन चित्रो से झाक रहा है। दीवारो पर और खिडकी छज्जो के हरेक घुमाव पर ये चित्र बलिया माखन चोरी रास लीला, वेणु वादन गोवर्धन प्रसग अलग अलग अवस्थाए पृष्ठ भूमिया। खूब प्रचुर मात्रा मे रग चित्र योजना मिलती है। ऐतिहासिक, सामाजिक धार्मिक और सास्कृतिक महत्व की पूरी खुलावट और खूबियो को उभारती हुई। बडी सूक्ष्म और पैनी दृष्टि का परिचय देते हैं ये भित्तिचित्र।

दूसरा आश्चर्य यह कि जसे अकबर के दिल्ली चले जाने पर उसकी प्राण-प्रिया सीकरी को परित्यक्त जीवन सहना पडा था वैसे ही ये रची बसी शृगारित और चित्र सुगन्धो से महकती नखरल हवेलिया शून्यप्रतीक्षा ओढे इठलाती आसमान तक सिरचढी दूर दूर राहों पगडण्डियो पर पलक पावडे बिछाए अपने अपने स्वामियो की बाट तकती अकेली बठी हैं। साल दो साल नही बल्कि वर्षों से पीढियों से।

गलियो दगडो पर उमडती गहराती बालू ही बालू ऐसी उम्दा और चिकनी कि रेशम बिछा कर बठ जाइए उठें तो तुरन्त झड जाए। चप्पल जूते ऐसे अटके घसे जा रहे हैं मानो मोटे फोम के या भारी रुई के गद्दो पर चल रहे हों? आस पास छोटे छोटे मकानो की बस्तिया और इनके बीच बीच मे लम्बे चौडे व्यास-

क्षेत्रफल घेरे तीन तीन, चार चार मंजिलों की ये कामदार चित्रों की पच्चीकारी से जगमगाती ऊंची ऊंची हवेलियां फैली हुई हैं—बालुई सागर में विशाल जलपोतों सी। नीचे से ऊपरी मंजिल तक सूनी। भाय भाय करता सन्नाटा। ऐसे बड़े बड़े अस्सी से सौ तक लोहा कील पत्ती जड़े कमरे। मजबूत जाली झरोखे कटी किवाड़ें, खिड़कियां एक एक कमरे में बाहरी और ढेरों खिड़कियां, ताकें गाख। लेकिन भारी भारी सांकल तालों में सब बन्द।

परदेस दिसावर जा बसे सेठ साहूकार लाखों करोड़ों का साज सिंगार किए उनके नाम का बोर बाजूबन्द कसे बैठी हैं ये उदास खामोश हवेलियां।

सड़क के किनारे बहुत ऊंचे चबूतरे पर बड़ी आलीशान हवेली में कई सीढ़ियां चढ़कर पहुंचे हैं। बालिश्त भर की जगह में भी गजब की चित्रकला। स्नान करके शीशा हाथ में लेकर नायिका। नृत्य मुद्राएं, प्रिय द्वारा प्रिया की मनुहारें। भीतर बाहर चित्र ही चित्र। इतने पक्के रंग कि दो सौ, ढाई सौ वर्षों की धूप आंधी वर्षा का कोई प्रभाव इनकी चटख और रेखाओं को मिटा नहीं पाया है। चौड़ी दीवारों पर बड़े बड़े रथ, बारातों के जश्न, फूलों से लदे गुलदस्ते, हाथी ऊंट पर ढोला मारू और इन्हीं के बीच अंग्रेज लोग टोप पण्ट छड़ी लिए गोरे साहब लोग काले जूते फ्राक पहन मेम साहब। अंग्रेज जोड़ों को चढ़ाए घोड़ा द्वारा दौड़ती फिटन। बड़ा अजीबोगरीब समां लगा है। देश काल, युग की मानसिकता का प्रतीक लगे हैं यह साहसी चित्र। चड्ढ़या वालों की यह हवेली निर्माण कला और चित्रकला की अमूल्य धरोहर है।

यह दूसरी हवेली अपनी अनोखी साज सज्जा के साथ सामने है। भारतीय शैली पर आधारित भित्तिचित्रों का विशाल संग्रह लिए हुए सेठ मोतीलाल मदनलाल सावल की भव्य हवेली। चौखूंट फैली तीन मंजिलें। लोहे के फल जड़े किवाड़ आगल मजबूत कड़े-कुण्डे और बड़ी-बड़ी सांकलों वाले कलापूर्ण किवाड़, फाटक, छोटी-छोटी अनगिनत जालीदार रंगीन शीशों वाली खिड़कियां हमारी दृष्टि बाहरी दीवारों ताकों टोडों और मेहराबों से लेकर भीतर कमरों और बैठक की भित्ति-सज्जा पर जड़ीभूत होकर रह गई है।

इस हवेली के नखरे भी ऊंचे लगे हैं। एकदम शृंगारित बनी-ठणी शायद इसीलिए भी कि मालिक सेठजी उनके पुत्र आजकल दिसावर से लौट कर आए हुए हैं। हम विशाल आंगन फाटक पार करके लोहे की कटावदार रेलिंग सीढ़ियां चढ़कर ऊपर जाते हैं। सेठजी की आज्ञा लेकर उस जादुई हवेली की सघनता में प्रवेश करते हैं। चारों ओर चित्रों की भूल भुलैया में आंखें भटक जाती हैं। हाथी पर राजा की सवारी, तो फिटन पर साहब मेम। पूरी दीवार पर राज दरबार का वैभव, तो नृत्य की मृदु थापों की रुन झुन। कृष्ण राधा के अलभ्य अनुरागी संकेत प्रतीक। राजपूतानियों की वंकिम भंगिमाएं—छन एसी सज्जित मानो किसी ने कीमती गलीचा जड़ दिया हो। कभी लगता कि रेशमी चादर पर कलाबत्तू और सलम

सितारे का काम करके फैला दिया हो ! पक्षी, घोड़े, ऊंट बड़े बारीक काम से उकेरे हुए हैं काठ के लट्टू, झाड फानूस से सजी सोठें चित्रमय टोढे आले, बेल फूल, पत्तियों पशु पक्षियां की सुन्दर आकृतियां प्रत्येक हिस्से पर रंगों में मुखर हैं। सेठजी बताते हैं, हमारी उमर हुई है तिरेसठ साल की। इस हवेली की चित्रकारी के लिए महाराष्ट्र गुजरात से पेण्टर बुलाए गए, लेकिन सवश्रेष्ठ चित्रकार था एक राजस्थानी, जयपुर का मुसलमान, शिल्पी। पति पत्नी, दोनों के हाथों में गजब का हुनर था। ये छतें, दीवारें मेहराबें आले गोखे सब उन्ही दोनों की कल्पनाओं से रंगी कढी हुई हैं। हमारे बुजुर्ग बाहर ही रहे। खाने कमाने हम सभी दिसावर चले गए। आते रहे इधर भी, जब भी फुरसत मिली। नहीं तो दस बीस बरस तक भी आना नहीं हुआ। अब तबियत ठीक नहीं रहती इसलिए इधर ही हूं। बच्चे सभी कलकत्ता बम्बई और दिल्ली में। ये सामने की चित्रकारी है न, यह बनाई थी गणपत शर्मा ने। यही रामगढ का चित्रकार था। दूर दूर तक बुलाया जाता था उसकी अंगुलियों में जादू था जादू क्या कीमत ? आप लोग आज इन हवेलियों की कीमत का क्या अन्दाज ले सकते हैं ? इसी को लीजिए सत्तर अस्सी साल पहले बनी थी यह हवेली तब डेढ दो लाख रुपए लगा था। सारा काम सामने बैठकर रातों जग कर पूरी देखभाल में होता था। आज की तरह नहीं कि काम शुरू हुआ नहीं, खत्म करने की पड जाती है। इस हवेली कीमत आज तो तीस चालीस लाख भी कम है। दीवारें, फर्श इतने शिमला चिकने क्यों हैं ! सारे संगतराश, मजदूर मिस्त्री, कलाकार चित्रकार घर में ही रखे बसाए जाते थे। महीनों तक सिंघराज से घुटाई होती थी। मक्खी तक फिसल जाए। सारा काम तसल्ली और ध्यान से अपना ही समझ कर। कौडियों से मजदूरी चुकाई जाती थी। एक पैसे की चार कौडियां चार आने आठ आने में ऊंचे स्तर का चेजारा (मिस्त्री) और चित्रकार मिलते थे। हमारी इस हवेली का नक्शा बनाने वाला था हेड चेजारा आसाराम। उदघाटन के समय सोने की मोटी सतलडी चेन इनाम में उसे दी थी। ऐसे ही कीमती इनाम मिले थे चित्रकारों को। आसाराम जैसा ऊंचे दर्जे का चित्रकार ढूंढे नहीं था। लेकिन भयंकर शराबी। दिन भर सोता, सारी रात काम करता। अधिक शराब के कारण ही मर गया। बस, लालटेन मशालों की रोशनी में रात भर काम चलता था। हां आ जाते हैं बच्चे इधर पन्द्रह बीस दिन के लिए कभी कभी। जी कहाँ लगता है ? महानगरों के आधुनिक वातावरण के बाद यहाँ कैसे रहेंगे ? ये विशाल हवेलियां, चित्र फुलकारियां इनके बुजुर्गों के शौक रहे। इनके बहाने लोग आकर बसे रोजगार पाया ब्याह शादी मरने जीने में मदद सुरक्षा पाई। रामगढ में ही मीलों तक फैली बेशकीमती हवेलियां हैं। सांय सांय कर रही हैं। कोई गिनती है भला इनकी ? सामान से अटी सटी, चित्रकारी से सजी ठसी। सब तालों में बन्द। हां, रखवाले पडे रहते हैं। सौ डेढ सौ महीना दे देते हैं इन्हें रहन को जगह मिल जाती है। ये ही शहर में होती, तब हजारों की आमदनी होती

लेकिन ये बहुमूल्य भित्तिचित्र कला कहा से राजस्थान को मिलती ? पूरी शेखावाटी को ऐसी हवेलियां विरासत मे मिली हैं।'

बहुत थकान हो गई है घूमते देखते। बाहर धूप मे एक चबूतरे पर बठ जाते हैं हम लोग। एक लडका बाडी की ताजा मूलिया और नमक दे जाता है। वहीं पर कुछ बुजुर्ग लोग यहां के सेठो के किस्से सुनाते हैं। अजीबो गरीब लेकिन एकदम सच्चे। आखो देखे और कानो सुने। "अजी साब! सेठ लोग बरसो पहले यहा आए थे बसे। तो खिदमतगारो से गाव बन गया। ऐसे दानी थे कि चाकर-सेवक खूब खुशहाल रहते। हजारो कहानिया चर्चे हैं इनके--अनन्तराम पोद्दार और बख्तावरीमाई जैसी दानवीर विभूतियां इसी नगर की विभूति रही। आसमान तक लहराती हवेलिया। धन की, सुख की बहती नदिया। चारो ओर रेत के टीबे। रात के स नाटे मे गीदड, कुत्ते, सियार बोलते, तो बख्तावरीमाई पूछती यो क्यू बोल्यो रेऽऽ' हर रात प्रश्न होते। हर बार चाकर दासियां कहते पियासा मरे भूख दहाडे जडाया रोवे है।' बस सुनते ही अनाज पूरिया, हलवा, रजाइया दी जाती। कुए, बावडी तालाब खुदवाए जाते। इनसे जाने कितने गरीब पलते। जानते अब सेठ सेठानी थे। ये अज्ञानता भरा भोला भाला दान होता था परजा के लिए। खूब सम्पन्न थे सभी साहूकार। तीन चार लाख की आमदनी। मुनीम, नौकरो की भीड। पोद्दार और रुइया सठ बडे नामी रहे हैं। दिल्ली कलकत्ता बम्बई मे बडा फैला हुआ कारोबार कारखाने, फर्म आदि जाने क्या क्या ? विदेशो म भी व्यापार। अब तो सब बाहर रम गए। ये हवेलियां सूनी पडी हैं कबूतरो का अखाडा बनी। भूतवासा बनी। अजी इसी बात पर इधर एक मशहूर लोक कहावत बन गई है कि—'गाव बसाया बाणिया, पार पडे जद जाणिया।'

अब हम जाते हैं सेठो की उस प्रसिद्ध छतरी का देखने जहा स्वर्ण-चादी की रेखाओ रगो मे गुम्फित सम्पूर्ण रामायण चित्रित है। बडी विशाल छतरी। चारो ओर बाग बगीचे चार खम्भो वाले घिरी चर्खी लगे कुएं।

तीस सीढियो के आस पास फूला और अष्टचक्रो की खुदाई वाली चौकिया। चौकियां। तीन ताको वाला चौडा द्वार, गलरियां परिक्रमा माग महराबें, गालाई लिए पतले पतले बरामदे। जाली झरोखो की कटाई कुराई लाजवाब। उस पर आलीशान चप्पे चप्पे पर चित्रकला का खुला भण्डार। बीच म है वह विशाल गुम्बद जिसकी छत के हर कटाव मे चौकोर काष्ठको म चित्रित है राम कथा सम्पूर्ण कथा ऐसी अद्भुत कि जिसे देखने का लोभ पयटक सवरण नही कर पाते और देख कर आश्चयचकित हो उठते हैं। बडी अलभ्य रग योजना। मैं सोच रही हू कि आदि कवि बाल्मीकि और लोक जनमानस के कवि तुलसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि शताब्दियो के बाद इस छोटे से नितान्त पिछडे हुए गाव म उनके

राम की पावन कथा को स्वर्ण तूलिका से और इन्द्रधनुषी रंगों की स्वप्नमयी आभा से कोई यों चित्रित करेगा ? स्वर्ण जल से रचित खचित ऐसी चित्रमय रामायण कहीं नहीं देखने को मिलेगी। आस पास के स्तम्भों बाहरी दीवारों पर भी पौराणिक कथाएँ अवतारों की कहानियाँ और धार्मिक पर्व अनुष्ठान चित्रित हैं। महाभारत के अंश हैं लेकिन रंग बिरंगे भित्तिचित्रों से सजी सम्पूर्ण रामायण की भला क्या तुलना ? राम जन्म, विश्वामित्र के साथ वन गमन राक्षसों द्वारा यज्ञों की पवित्रता नष्ट न हो इसलिए उनका वध। धनुष यज्ञ वनवास मारीच वध सीता हरण राम का विलाप बालि सुग्रीव के चित्र सुग्रीव मित्रता हनुमान संजीवनी बूटी राम रावण युद्ध, राम का राजतिलक। एक पूरा कोना राम भरत मिलाप का बहुत ही भावपूर्ण चित्र शैली में है—बड़ी बारीक रेखाएं अनोखे वृत्त, घुमाव, देशकाल साकार हो उठा है। चटकीले रंगों और स्वर्ण रेखाओं कामदार सज्जा से छतरी का गुम्बद जगमगाता रहता है।

बाहर बारहदरियों में ढेरों भित्तिचित्र—रानियों का झरोखों में बैठना, सीता द्वारा राम को सोने का हिरन दिखाना भीलनी द्वारा बेर खिलाना, हनुमान का सीता को मुद्रिका देना आदि इतने सुन्दर सजीव और जीवन्त हैं कि विश्वास नहीं होता। चित्रकारों की रंग योजना और सौन्दर्य सौष्ठवपूर्ण रेखांकन पर गर्व होता है।

वहाँ से लौटने को मन नहीं चाहता। मैं धूप में जगर मगर करती एक मेहराब के नीचे बैठ कर उस चौड़ी दीवार के चित्र को देख रही हूँ जहां समुद्र पर पुल बनाया है हर पत्थर पर 'राम' खुदा है, जो अथाह जल में डूबा नहीं। तभी तीन चार युवक प्रौढ पास आकर बैठ जाते हैं। मेरे आश्चर्य में और आश्चर्य जोड़ कर रामगढ़ के बीते हुए दिन याद करने लगते हैं। साथ ही दिल के दर्द में डूबी शिकायतें भी—

अजी बहनजी सा ये छतरियां सेठों की समाधियां हैं। यहां ऐसी चालीस छतरियां हैं। ये सबसे कीमती हैं और भित्तिचित्रों सम्पूर्ण रामायण, सोने के काम के कारण बहुत प्रसिद्ध हैं। आसपास में बड़े बड़े बरामदे, कोठरियां, चौबारे कुएँ इसलिए बने कि शादियों के दिनों में बारातें और मेहमान ठहरते थे 'ब्रह्मपुरी' के समय यहां तिल रखने को जगह नहीं रहती थी। ब्रह्मपुरी (मरणु भोज) तीस दिन तक चलती थी। बुजुर्गों के मुँह से सुना है कि इतना जीमण (खाना पीना) होता था कि एक बार महीना तीस दिन का और ब्रह्मपुरी इकत्तीस दिन चली। खूब दान दक्षिणा दी जाती। अपने साथ जो भी कुछ ले आता नजर करने को, उसे उतना ही धन मिलता। कहते हैं कि एक बार कोई ब्राह्मण लोटा भर कर कौड़ियां (चोटियां) ले आया। वह लोटा नकद रुपया से भर कर लौटाया। ब्रह्मपुरी के न्योते दूर दूर तक जाते गांव के गांव उमड़ पड़ते। चालीस-पचास हजार का भोजन

होता । बराबर ऐसे आयोजन चलते रहते । एक एक लाख के नगद कलदार सिक्का की चौकी (चबूतरा) बना कर अपने रावराजा को बैठाते थे । समारोह या ब्रह्मपुरी समाप्त होने पर यह सारा धन राजा को दे दिया जाता था । सेठो को सोने का कड़ा राव राजाजी की ओर से बख्शा हुआ था और चौबीसो घण्टे इन लोगो के लिए ड्योढी खुली हुई थी । पूरे भारत के स्टील सोल एजेन्ट यही थे सबसे पहले । आज तो इण्डिया ही क्या हागकाग जापान बर्मा रगून, कलकत्ता बम्बई और दिल्ली मे फैले पड़े हैं इनके कारोबार । आन शान ऐसी कि एक बार बाजार मे मतीरा (तरबूजा) के लिए इनके रसोइये ने सोने की जजीर दे दी । कोई और उस मतीरे को खरीदने लगा । रसोइये को लेना था, वह आदमी अड रहा था मुँह मागे दाम देकर लेने को । सेठ का रसोइया, इज्जत का प्रश्न ! तीन तोले की कण्ठी फेंक दी और वह कौडिया का मतीरा खरीद लिया ।'

श्री जगदीशप्रसाद बताते हैं 'आप देख रही हैं न एक से एक बढकर एक हवेली। भित्तिचित्र बनवाने की, एक दूसरे से बढ बढ कर कलाकारो को स्थान देना काम कराना आदि की होड मची रहती थी । कारण था सेठो का कलाप्रेम धम परायणता । कला की और कलाकारो की सुरक्षा । उदार दानी हृदय । जब एक जसे छोटे बडे सिक्के नही मिला करते थे तब यहा सरकारी आदमी आते और ताखडियो (तराजू) म तोलकर दे दिए जाते । और भी जो लेना चाहता ले जाते । पोद्दार सेठो के यहा क्या कमी थी ? फिर इतनी उच्चकोटि की कला यहा सरक्षण कसे नही पाती ? ऐसे ऐसे मढावे थे जिनमे सो सो क्विटल चीनी लड्डुओ के लिए घोली जाती थी । इस रामगढ की बसावट ही ब्रह्मपुरी भोजो के कारण हुई है । अजी ज्यादा क्या, केवल सत्तर अस्सी वष पहले की ही बात है । इधर जब से सेठ बाहर गये कि यहा फाके पड गए । सेठो को इधर रुचि नही रही । उद्योग धन्धे के नाम पर इधर कुछ नही है । काम करने की इधर आदत ही किसे है ! यहा के नागरिक सेठो की ब्रह्मपुरियो दान पुण्य पर पलते रहे मुखापेक्षी रहे । अब दरिद्रता मे वास कर रहे हैं । राजनीति भी पिछडी रही । आज तक एक भी एम० एल० ए० इधर नही बना । गाव इधर कम चारो ओर सेठो की विशाल हवेलियो से आच्छादित कस्बे ही बसते रहे । तकनीकी शिक्षा का अभाव । अब कहा तक इन हवेलियो की ऊचाइया और दीवारो की सज्जा देखते रहें ? नए लडके आदि भाग रहे हैं बाहर रोजी रोटी के लिए । यही, दुबई, ईरान, ईराक, सऊदी अरब । कुछ इधर उधर अध्यापक हैं । मुश्किल से एक दो प्रतिशत मिलिट्री मे हैं । थोडे बहुत दुकानदार किसान । थोडी बहुत कपास की खेती करते हैं कि रोटी तो मिले खाने को ! कुछ सफल हुई है । बड़ा पिछड़ापन है जी । काम कभी किया ही नही । महीना जहा मुफ्त का मिलता था, वहा रोजी की क्या चिन्ता रहती ? यातायात का नितान्त अभाव । ये तो देशी विदेशी लोगो का इन भित्तिचित्रो के कारण ताता लगा रहता है वरना वाह ! मोटर, कारा के लिए सीधी सडक बन गई है । धनकुबेरो की इस

अद्भुत वस्तुओं का खजाना : जोधपुर का किला

कहीं कठोर पठारी, दुर्गम भाग तो कहीं क्षीण नदियों की हथेली पर बिछलते उमगते हरे भरे मैदान। ऐसा है विख्यात राजस्थान।

अरावली पर्वत इसका कवच जिसका असली उच्चारण है 'आडावला पहाड़' अर्थात् जो आड़ा हो, रुकावट डालने वाला हो। कहीं ये रूखी सूखी पहाड़ियों के रूप में तो कहीं ये रेत मिट्टी के विशाल ढूहों, टीबों की शक्ल में, इन्हीं पर हुआ समय समय पर प्रसिद्ध सुदृढ़ किलों का निर्माण। सुरक्षा के सीमांत निशान कहीं कहीं इनकी मेखला शृंखला इतनी सकरी और गहरी कि शत्रु के लिए भयंकर चुनौती मौत से साक्षात्कार दीर्घकालीन राजपूत विजय और स्वतंत्रता का यह भी शायद एक कारण। शत्रुओं ने ऐसी ही विकट घाटियों राहों को संकटकाल में 'ऊंट गर्दन' कह कर संबोधित किया जैसलमेर बीकानेर और जोधपुर में जैसे बालू का अनंत सागर लहरा रहा हो! कोसों तक पानी नहीं, घास तिनका नहीं, कई किलोमीटर के फासलों पर बसे छिटपुट टाणी गाँव जीवनयापन के लिए कठोर श्रम इसीलिए यहाँ की सांस सांस में धीरज स्वाभिमान पराक्रम और हर प्रकार की परिस्थिति से टकराने की अद्भुत क्षमता।

ऐसी जलवायु और जीवन, कि दुश्मन पनाह माँग ले। भीषण ग्रीष्म असहनीय शीत। आदि वीरकाल से ले कर आज तक कथाकारों कवियों इतिहासकारों के माध्यम से यह प्रांत राजस्थान हँसता मुस्कराता रहा है। जैसा इसका कठोर बलशाली कलेवर वैसा ही दुर्गम रहस्यमय इसका अतीत। सैकड़ों कथाएं खोजिए कि हजारों और करवटें ले उठती हैं। प्रण प्रतिष्ठा और पराक्रम का ऐसा अटूट सिलसिला, जिसका कोई अंत विराम नहीं। हजार कष्ट, लाख असुविधाएँ, फिर भी इसका भारी जादुई आकर्षण।

महाभारत काल का जांगल देश जाने कितनी युग सीमाएं नापता, काटता जीतता कालांतर में 'रायथान' 'राजपूताना' और 'राजस्थान' बन गया! वीर पुंगव रजवाड़ों का स्थान।

इसी ख्याति चर्चा के बीच एक दिन जानकारी मिली कि जोधपुर के प्रसिद्ध किले में कुछ ऐसी आश्चर्यजनक कलात्मक वस्तुएँ हैं कि शायद ही कहीं और देखने को मिल सकें। बहुमूल्य और चित्ताकर्षक निशान पालने पालकियों और हाथियों के

हौदे-हौदिया प्रमुख हैं जो प्रमुख अवसरो पर भेंट किये गये हैं दूसरे राजघरानो से, दिल्ली दरबार मे कुछ विजय करके प्राप्त किये हैं बेजोड नमूने।

स्वाभाविक रूप से सुनते ही जिज्ञासा ने मन का बाध घेर लिया। सत्यता की पुष्टि के लिए इधर उधर पूछताछ की, तो सभी से यही उत्तर मिला कि वास्तव म मौलिकता और कलात्मकता की दृष्टि से जोधपुर किले की इस सामग्री का मुकाबला नही है। तब मन की जिज्ञासा अपने प्रयत्न प्रयासा मे जुट गयी लेकिन यह सब देखना जानना इतना सरल नही लगा, जितना सोचा था क्योकि फोटोग्राफी के लिए और पालन, पालकी हौदो का सम्पूर्ण विवरण लेने के लिए पहले इजाजत भी ली जाती है तब कही खर, यह काय भी किसी प्रकार से सम्पन्न हुआ और हमने भारत के महान पुरुषार्थी महाराजा मालदेव के मारवाड की ओर अपना सफर प्रारम्भ किया। मारवाड की ख्याता के वणनानुसार जोधपुर पर इक्तीस वर्षों तक राज्य करने वाला यह वीर बावन युद्धा का विजेता था। फिर यहाँ की गद्दी पर बैठ, सूय के समान तेजस्वी, महान प्रतापी महाराजा जसवतसिंह जी। जितने वीर और साहसी उतने ही प्रवीण कवि, विद्या प्रेमी और कलात्मक अभिरुचि के स्वामी। तत्कालीन दिल्ली सम्राट इनके सामने कभी सकट बनकर नही आ सका एक और सूय मण्डल रहा—वीर दुर्गादास। देशप्रेम, स्वामिभक्ति अपूव त्याग, वीरता और युद्ध कौशल मे अतुलनीय व्यक्तित्व जिन्होने वर्षों तक महाराजा जसवतसिंह के नाबालिग पुत्र अजीतसिंह की लाखो विपत्तियो और मुगला की तीक्ष्ण दृष्टि से रक्षा की राज्य और स्वामी के प्रति त्याग और प्रेम का परिचय दिया। अपने अटूट साहस और बुद्धि से मारवाड की स्वतन्त्रता कायम रखी न जान कितने और वीर राजाओं महाराजाओं का अटूट क्रम चलता रहा ।

यही सब सोचते सोचते व सुनते आ पहुची मैं जोधपुर नगर मे। सर्किट हाउस म हम लोग सामान रख कर किले की तरफ जाने की तयारियाँ करने लगे। भाई सूरज एन शर्मा और दिल्ली से साथ मे आये हैं उनके एक और छाया कार मित्र खीचने ये काकरौली और रणकपुर के चित्र, लेकिन जोधपुर किले का मोह यहा तक ले आया। हम सब साथ हैं। गाडी तेजी से पहाडी सर्पीले मोड काटती जाने लगी आकाश मे पीली सी धूल शायद आधी है धुध भरी। धूप म रास्ते म[illegible]र और पीछे छूटे घुमावदार चक्कर अच्छे लग रहे हैं ऊँची पहाडी घाटी से नीचे फला जोधपुर सपना शहर सा लग रहा है। वाहना की गति अचानक धीमी हो गयी। मालूम पडा कि केवल यही तक गाडिया आ सकती हैं। बडे से चौक म, कुछ बाहर समतल जमीन पर गाडिया पाक कर दी गयी हैं। दाना और राजस्थानी कला-वस्तुओं के प्रदशन कक्ष हैं। एक छोटे से गलियारे से भीतर प्रवेश करते हैं।

बडा परिश्रमजन्य माग इतना खडा और चिकना कि हर कदम पर पाँव पजे जमाने पड रहे हैं। सहारे के लिए लोहे के मोटे मोटे पाइप-साक्लो की रेलिंग। ठहरने बठने को चौकिया। बडी मुश्किल स बडा फाटक नजर आता है। नफीरी,

घोसा और शहनाई के स्वर गूंज रहे हैं। एक सुकून कि आखिर दुर्ग की उंगली छू ही ली। एक अनुभवी यात्री बताते हैं कि यहां सात प्रसिद्ध दरवाजे हैं। भीतर जाने के प्रसिद्ध द्वार हैं—गोपालपोल, भैरू पोल जय पोल डेढ कांगरे की पोल, इमरती दरवाजा, फतहपोल (मुख्यद्वार), लोहा पोल (भीतर का प्रवेश द्वार) सूरज पोल (ऊपर जाने का द्वार)। यह सामने है किला, मेहराबा, झरोखो, महीन जालिया से गठा बुना। इतनी सुंदर बुनावट और बनावट मानो पत्थरो के मूल्यवान आभूषणों से उसका शृंगार किया गया हो। दो मंजिला किला, नीचे चारो ओर बहुमूल्य वस्तुएं रखने के आगार प्रकोष्ठ, तहखाने और ऊपर राग रंग, विश्राम संगीत नृत्य, सत्कार-समारोह के लिए विशिष्ट महल, अलग-अलग रंग और सजावट वाले। इन्ही मे शीशमहल। एक ओर है सिलीखाना (शस्त्रागार), तीसरी ओर दौलत खाना (हुक्के बतन, पानदान सभी सोने चांदी हीरे जवाहरात के काम से जक वक) फूलमहल (रंग महफिले) अजीत विलास (ड्रेसिंग रूम), तख्त विलास, सरदार विलास (पखे बिस्तर शामियाने-चौपड) दीपक महल और चंदन महल।

समस्त राजाओ के बडे बडे तैलचित्र, सिंहासन वीर दुर्गादास राठौड (वजीर) की गद्दी दीवारो को घेरे हुए शिकार युद्ध ऋतुओ रागो की कलापूर्ण कलाकृतियां।

सबसे पहले हम पालकीखाने की ओर चलते हैं। नौबत, ताशे, दमामे के साथ राजस्थान के लोकगीत की धुन मन को सरस बना देती है। एक लंबा कक्ष छोटी छोटी कामदार खिडकियां। जाली के गोख झरोखे, बीच मे चौडी गलरी और दोनो ओर पालकियां एक से एक खूबसूरत। पूरा कमरा पार करके सामने है विशाल पालकी बहुत प्रसिद्ध और जोधपुर राजघराने के लिए गर्व का प्रतीक। बहुत शुभ मीनाकारी पच्चीकारी का बारीक काम, कीमती नगो से जडी, मखमल रेशम मढी सोने के कामवाली मखमली सिंहासन जडाऊ हत्थे, मोतियां की झालर, कीमती पर्दों की पारदर्शी झलक। बहुत बडा और बहुत भारी नाम है इस पालकी का महाडोल"। गाइड के द्वारा पता लगा कि महाराजा अभयसिंह जी जोधपुर ने इस महाडोल' को अहमदाबाद के सूबेदार राजा (सर बुलंदखा) मुबारिज़ुल मुल्क से युद्ध मे विजयी होकर प्राप्त की थी। यह रहा वजन सन 1730 का पूरी सोने मे जडी मढी सिंहासन के इधर उधर लंबी चौडी मखमली गद्दी। कारचो भी का काम दोनो ओर लगे ठोस डडे शेर मुखवाले इतने भारी, कि बारह व्यक्ति इसको लेकर चलते थे बहुमूल्य मोती मुक्ताओ के कामवाला जरी का मसनद चारो कानो पर कलश बेलपत्ती नगो वाले सोने के फ्रेमो म कसे शीशे। सिंहासन के ऊपर कलाबत्तू जरीवाला चवर शादी ब्याह, विशिष्ट समारोह मेहमान, उत्सव के समय इसका इस्तेमाल होता था। महाराजा लोग इन पालकियो म आगन द्वार (जिनकी संख्या बहुत है) तक जाते थे। फिर घोडे बग्घी रथ वगैरह। दोनो ओर रेलिंग म रखी हुई पालकियो की बनावट भी अपने आप म अपूर्व। तरह तरह के चमकील

रग । इनमे से अधिकतर विजय की प्रसन्नता म ज म दिन के अवसर पर, अन्य खुशियो के मौके पर उमरावो, राजाओ, वजीरो द्वारा उपहार मे दी गयी । गुदगुदी गद्दिया, जरी के किनारे बाडर बीच बीच मे, गु थे मोती और रत्न, हत्यो पर हाथी और शेर के मुख, सोने चांदी के तारो से बुने पर्दे । बीच मे बडे बडे मसनद । इधर उधर छोटे छोटे तकिये । गुलाबी, आसमानी, बासती और केसरिया रगो की अधिकता ।

जनानी पालकियो मे कीमती लकडी के जालीदार दरवाजे । देखने मे ही बडी नाजुक । अधिक लबी जरी सितारो का ज्यादातर काम । ऊपर छतरी के चारो ओर छोटे छोटे कलश । इन पालकियो के आगे पीछे मोर खचित अन्य पालकिया ! किसी विशिष्ट मेहमान के लिए अथवा अग रक्षक या प्रमुख दासियो के लिए राजमाता, पटरानी महत्वपूर्ण रानियो के काम मे आने वाली पालकिया की बनावट तथा सजावट की सबसे अलग पहचान । मोती पन्ने, लाल माणक का जडाव । डडो के बाजूओ पर लगी जरीवाली मखमली थैलिया । चादी की बारीक घटिया जरी के फु दने । कीमती बिल्लौर काम । एक पालकी मे है पूरा काम जाली का चदन की पालकी, फल पत्तियो की बेलें, हाथी–दात का जडाव, जरी और किमखाब की तोशक मखमली गाव तकिये ।

राजकुमारियो की पालकियो मे बारीक पर्दे, सुनहरे कशीदे का काम और बहुत महीन मीनाकारी । इनके कई अलग अलग कक्ष सभी मे ताले और पहरा । प्रत्येक को देखने की इजाजत नही, यदि है तो उसका भी एक खास समय निर्धारित ।

दूसरे कक्ष मे जाते हुए होली खेलने वाला मुख्य चौक पार करना पडता है । फूल महल शानदार सजावट । लाल नीली मखमल पर सितारे ही सितारे । पूरेचौडे शीशे पीढिया के अलकृत चित्र हर तरफ मोती मणियो के काम की बहुलता और उन्हे पार करके आता है वह खूबसूरत कक्ष जहा बडे करीने से पालने अपने भीतर जाने कितनी यादें समेटे ऊ घ रहे हैं । हवा की जरा सी लहर पर धीमे पदचापों से जो रह रहकर सिहर उठते हैं । गाइड ने सबसे पहले उस प्रसिद्ध पालने का परिचय दिया जो महाराजा हनुमतसिंह जी का प्रथम बार पी डब्ल्यू डी की ओर से भेंट किया गया था । दोनो ओर स्टड के रूप मे दो युवतिया । हाथो मे फूलो के गुच्छे इनके बीच में कमल के फूल । रोशनी के लिए स्थान । दूसरे हाथ मे पालना झुलानेवाली रेशमी डोरी । पूरे पालने मे सोने के जडे फूल । मोतिया की झालरें । बीच मे झूलती तसवीरें और खिलौने । तकियो के बीच मोटा गुलगुल मखमली बिछौना । बीच मे महाराजा का चित्र जोधपुरी पगडी पर राजसी कलगी गले मे बहुमूल्य मालाए ।

पायो म चादी सोने के जोड । बडे राजकुमार का जन्म । भेंट देने की होड । चदन का फ्रेम, रेशम मे गु थी चादी की साकलें बीच मे सूयवश का प्रतीक सूय,

नाचते हुए मोर, नीचे की चौकी पर हाथी दांत का काम पंख खोले उड़ती हुई परियां यह शाही पालना है। चारों बाजुओं पर पोशाक सज्जित चार चोबदार इनकी कसी हुई मुट्ठियां में पालने की सोने की जंजीरें। उड़ते हुए पक्षी झलती हुई बजने वाली घंटियां खूबसूरत घुंघरुओं के गुच्छे, सलमे की धुंडियां।

एक स्नेह भेंट यह भी पूरे शीशे के काम का मजबूत जक बक पालना सारा चाइनीज कटवर्क चांदी सोने के फ्रेमों में डिजाइनदार शीशे, इन्द्र धनुषी बिल्लौरी रंगों की छिटकती आभा। कहीं मोरों की मेहराब कहीं सुनहरे तारों का लहरिया, सोने चांदी की मीनाकारी से खिले, तिरछे फूलों की झालरें जैसे सचमुच के ताजा फूलों की बंदनवारें हों! चिड़िया तोते हंस, परियां, नन्ही पताकाएं, कलश और प्रत्येक खटोला बनावट में एक दूसरे से भिन्न।

पुरानी, पर नयी सी चौकियां, जिन पर दासियां बैठकर शिशुओं को झुलाती थीं खिलौने दबाये मुट्ठियों में तलवार कसने के जौहर स्वप्न जहां धाय माएं जगाती थीं। महारानी मां के वात्सल्य का आंचल इन पर फहराता था। कैसा होगा वह सजीव दृश्य! प्रत्येक राजकुमार का अलग पालना। इस कलात्मक बरामदा वाला यह झांकी महल अपने आप में अद्वितीय न जाने और कितने ऐंद्रजालिक दृश्यों से चलकर पहुंचते हैं उस लम्बे चौड़े कक्ष में जहां 'राजा रा जोधा राज तो जोधपुर' वंश के मुताबिक झंडे फहरा रहे है। वान झंडों का परिचय सुन रहे हैं और आंखें उन पताकाओं के रंगों, निशानों उनमें जुड़ी बहादुरी युद्धों की कहानियों और चिन्हों पर लगी हुई हैं। *यह देखिए इधर अलग अलग राज्यों के* निशान जब भी उत्सवों पर अथवा युद्ध के लिए सब एकत्रित होते, तभी ये सारे झंडे अपने अपने राज्य के मुताबिक लग जाते थे।

ठीक इनके नीचे विशाल हौदे है यह बहुत बड़ा और कीमती हौदा शाहजहां ने प्रसन्न होकर महाराज जसवंतसिंह को भेंट किया था। बैठने का खूब बड़ा आरामदेह स्थान चारों ओर ऊंची सपीले चौड़े पंजों को फैलाये हुए मोर शेरों की आकृतियां। चांदी की कामदार लंबी कमानी पर हौदे पर झुकी हुई छतरी (चंवर), इसके ऊपर ध्वजा, *(राजा का निशान) साथ में कई अंगरक्षकों के शानदार* हौदे। विशाल कुंद, जो मोटे रस्सों से बांध दिये जाते थे।

यह पंक्ति है उन हौदों की जो युद्ध के समय राजाओं सेनापतियों और राजकुमारों द्वारा काम में लिये जाते थे। शेरों के पंजों में पाये पूरे कद्दावर शेर एक एक रेशा आयलें, पंजे, नाखून आखें और दांत इतने सजीव कि जीवित शेर की भ्रांति भय उत्पन्न करने वाले ठोस चांदी के बहुत भारी वजनी हौदे कामदार सोने की रेलिंग। सलमे सितारे जड़े चंदोवे जरी के चंवर त्रिशूल और बड़े कला पूर्ण भारी अंकुश। दीवारों पर सती होने वाली रानियों के हाथों के चन्दनिया थाप कई प्रकार के आकारों के सतिये (स्वस्तिक चिन्ह)। आगे पीछे हैं, अन्य आकार में कुछ छोटी हौदियां। फिर हैं कोनों में रखे ऊंचे ऊंचे मजबूत सांकल कुंदों में ठुंक

जुडे बक्से झूलते हुए विचित्र डिजाइनों वाले विशाल ताले, जिनकी तालियों के आकार नमून देखकर आश्चर्य होता है। इनमें हैं हाथियों की जडाऊ झूलें, लंबी चौडी मखमली और हैं उनके जेवर। सिर पर टीका सूड तक लटकने वाली झूमर गले का हार, पीठ की पेटी और कमर की करधनी घुटनों के छडे परों की झांझर और पाजेब पूछ लडिया सूड झूमर के सिरे पर लटकती नथनी और कानों के गोल कुण्डल या झुमके बुदे। इतने भारी भरकम आभूषण हैं कि निकालने पर पहाड सी ढेरी बन गयी है।

कोनों में बिगुल, दमामे और धौसे रखे हैं खूटियों पर हाथियों के गले में पहनायी जाने वाली घटियों की गूथमालाएं लटक रही हैं। अंतिम पक्ति में हैं वे हौदे हौदिया जो उत्सव समारोह महाराजा की शहरी सवारी के समय बच्चों के लिए कसे जाते थे। बहुत सुन्दर और कलात्मक। प्रत्येक के साथ अंकुश और त्रिशूल।

साथ में जुडा है रथ खाना जैसे कई कई मंजिलों, प्रकोष्ठों के जलपात हों! ऊटों और बलों द्वारा सचालित रेगिस्तान के जलयान रेशमी झालरों पर्दों से झिलमिल अनोखे डिजाइन वाले। नृत्यशाला से होते हुए सबसे ऊपर की मंजिल आ जाती है। गाइड बता रहे हैं कि वह मंजर ही कुछ और होता था। पदल घोडे हाथी और राजदरबारी। राजा की सवारी। वजीर लोग प्रमुख अहलकार अशर्फी मुहरें आगे पीछे लुटाते हुए चलते थे। झाडशाही रुपयों सिक्कों की न्योछावरें फेंकी जाती थीं। पूरा शहर सडकों, खिडकियों और बाजों पर झूमझूम जाता था। समारोहों की क्या कमी थी! आये दिन त्योहार उत्सव और धार्मिक सवारियां! वहीं से देख रही हू उम्मेद-भवन पलेस, जहां राज परिवार रहता है। दीपावली पर बारूद तोप छोडने आता है। सबसे सुन्दर जोधपुर का प्रसिद्ध स्थल दिखाई दे रहा है। दूर छोटी पहाडी पर संगमरमर का 'जसवंत थडा'। चारों ओर हैं सभी विगत शूरवीर राजाओं की समाधियां, छतरियां। उधर शीतलामाता का मंदिर। एक बार पूरे किले पर नजर डालती हू। तलवार की धार पर तराशा गया एक पूरा युग इतिहास अब चुपचाप ठहरा हुआ सा जैसे गहरी नींद ने इसकी पलकें ढांप दी हैं, गम हवा के साथ कुछ इसके भीतर का किच किच बिखर रहा है खिडकियां गोल जालियां पुरानी पदचापों की रोशनी तलाश रही हैं। हर कंगूरे पर जाने कसा गम ठंडा उदास सा उन्माद लिपटा हुआ है। एक एक सीवन में दबाये छिपाये बैठा है जाने कितने नाम चरित्र, हुकारें और हसी अट्टहास कितनी पुरानी यादें! कैसी कसी खुशबुएं!

अभिशप्त भानगढ :
जादूतीर्थ अजबगढ

भानगढ और अजबगढ । बड़े विचित्र नाम । मानव मन को रहस्य रोमाच, विस्मय और भयकर जिज्ञासा मे डाल कर चरम सीमा तक आश्चर्य की भवरो मे डुबोने के लिए ये नाम अपने आपमे बहुत सक्षम हैं । जिसने भी इनका जिक्र किया, जिससे भी इनकी चर्चाएं सुनी, वह सभी अनोखी लगीं—कहा जाता है कि एक रात मे रानी के अभिशाप से अथवा साधु के शाप से पूरा का पूरा भानगढ उजड कर जनशून्य हो गया । यह भी कहा जाता है कि तभी से कछवाहा राजवशीय राजधानी खडहर के रूप म आज भी खडी है । जो मदिर अथवा जलाशय राजधानी के परकोटे से बाहर थे, वे उत्कृष्ट वास्तुशिल्प कला लिये उस युग की कला, सस्कृति और धार्मिक आस्था की कहानी आज भी कह रहे हैं । यह भी सब बताते हैं कि नाथपथी साधु जिन्होंने उस बीहड जगल मे बारह वर्ष तक एक पाव पर खडे रह कर तपस्या की वे आज भी वहीं रहते हैं । यह भी जनश्रुति है कि अजबगढ कभी तत्र विद्या का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा था और इसी विद्या के कारण उजडा । लोग तो यहा तक मानते हैं कि यह स्थान आज भी जादू टोने तत्र मत्र का गढ है और भानगढ के वशज आज भी टीकाई के रूप म सडक के अन्तिम गाव गोला का बास मे मौजूद हैं ।

बड़े अजीबोगरीब चर्चे हैं इन दोना स्थानो के । मेरे मन मे इन स्थाना तक जा कर इन्हे देखने की तथा नाथपथी साधु बाबा से और गोला का बास के टीकाई ठाकुर साहब से मिल कर भानगढ के अभिशाप की कहानी जानने की उत्सुकता जाग उठी है । साथ ही अजबगढ मे क्या अजीब बात है ? कैसे ये वे तांत्रिक जिनके कारण हरीभरी बसावट वाला नगर खडहर हो गया ? आज भी तत्र मत्र के क्या चर्चे हैं ? यह सब जानने के लिए वहा जाने का इरादा पक्का कर लिया । श्री पूरनजी हमारी इस रोमाचक यात्रा के मार्गदर्शक बनने को तयार हुए । वह अपने गुरु नाथपथी बाबा से मिलने के लिए यदा कदा वहा जाते रहते हैं । आखिर अथाह जिज्ञासा से भरे हुए हम गाडी से दौसा की ओर चल पडते हैं ।

कानोता, बस्सी माहनपुरा कब गुजर गये कुछ पता नहीं चला नीले पीले घास फूस के छप्परो मे मढे गाव एक एक करके गाडी की रफ्तार के साथ दौड रहे थे । ताड से लम्बे नीम चमेली के पेड सडक के दोना ओर छा रहे थे । दौसा तक

कोई भी किसी से नहीं बोला था, जसे भानगढ ग्रदृश्य रूप से सभी को ग्रपने मे समेटे हुए था। दौसा पहुचने पर पता लगा कि कार से भानगढ जाना बिल्कुल सम्भव नही है। क्योकि वहा जाने का रास्ता बहुत ही पथरीला, ऊची-नीची चढाइयो से भरा हुग्रा है। एक समस्यापूर्ण परेशानी सामने थी। क्या करें फिर ? दौसा के बाजारनुमा चौराहे पर कई सलाहें उछली पर ग्रन्त म निर्णय लिया गया कि जीप लेनी पडेगी। ग्रौर कोई उपाय नहीं है। कहा से लें जीप ? चाय नाश्ता करने का विचार हमारे दिमागो से उड चुका था। जीप की खोज शुरू हुई। दो घटे बाद जीप मिली, जो कभी-कभी उस रास्ते पर किराये पर चलती थी। बडी खुशी सी हुई। मन था कि जल्दी से भानगढ पहुच जाना चाह रहा था। हर तरह की देरी-बाधा बुरी लग रही थी। फौरन हम लोग जीप मे सवार हो कर चल पडे। जीप का ड्राईवर बडा खुशमिजाज ग्रौर किस्से दर किस्से सुनाने मे माहिर निकला। भूत प्रेत ग्रौर डाकुग्रो के किस्से रास्ते भर कहता चला।

मैं ड्राइवर के पासवाली सीट पर बैठी उस माग का रेशा रेशा ग्रपनी दृष्टि मे बुने जा रही थी रौंद घोक पीपल, बरगद ग्रौर नीम चमेली के पेडो से रास्ते-जगल ग्रटे हुए थे मालकवास ग्रौर पुरीखुद के बाद ग्राया बाणगगा का ककरीला मैदान पानी सूखा सिमटा हुग्रा बह रहा था। ड्राइवर ने बताया कि ग्रभी मोती सी झिलमिलाती पतलीधारा दिखाइ दे रही है वह किन्तु बरसात मे ग्रापे से बाहर हो कर फुकारती है। तब खेत गाव, पुल ग्रौर सडक सबको लील लेती है। वास्तव मे दूर तक फला हुग्रा ककरो पत्थरो ग्रौर पिसी रेती से भरा घास पेडो से शून्य विशाल मैदान उसके हस्ताक्षरो की गवाही दे रहा था।

बायी ग्रोर बौराक्षा के बाद बहुत ही सुदर प्राकृतिक दृश्य शुरू हो गये। हरियाली इतनी गहरी सघन ग्रौर पेड इतने घने ऐसी शीतल हवा कि जसे कोई पहाडी स्थल हो। पक्षियो के स्वर नाले झरने ग्राखो को तरावट देने वाली सुन्दर झुरमुटें बताया गया कि यह प्रसिद्ध सैथल बाध है। देशी विदेशी पयटको के के लिए मनोरजन ग्रौर पिकनिक का सर्वोत्तम स्थल। यहा के प्राकृतिक सौदय ने थोडी देर के लिए भानगढ को भुला दिया। ग्रब ग्राया वह स्थान जिसे गोला का बास कहते हैं। बताया गया कि भानगढ का दुरूह रास्ता यहीं से शुरू होता है। यही ग्राखिरी गाव है। सडक भी यही तक ठीक है। यहा रुक कर हमने चाय पी ग्रौर बाबा शकरनाथ जी के लिए सब्जिया, चीनी चाय ग्रौर ग्रालू वगराह खरीदे। हम उनके मेहमान बन कर जो जा रहे थे! हमारे रात के पडाव की बात सुन कर गोला का बास बडा हैरान। भानगढ म रात बिताना भयकर दुस्साहस नही है क्या ? जितने मुह, उतनी ही रहस्यभरी बातें।

जीप जसे ही गोला का बास को सीधी सडक छोड कर ग्रागे चली कि पत्थर ही पत्थर। माग इतना पथरीला कि जीप इस तरह उछल कर चल रही थी

मानो किसी शरारती बच्चे के हाथों में गेंद टप्पे खा रही हो। दो मिनट में ही शरीरों के पुर्जे हिल गये। शब्द हवा में थर्रा रहे थे। नीचे ऊपर दायें बायें बड़े बड़े पत्थर। पहाड़ के पहाड़ बिछे पड़े थे। इनके बीच बीच से पानी की धाराएं बह रही थीं, जो न जाने कहां कहां से पहाड़ों के कलेवरों से झर झर कर आ रही थी। दूर दूर तक न कोई बस्ती न कोई गांव। भाय भाय सन्नाटा, हू हू करती हवा। खड़खड़ाते पत्ते और टहनियां। एक दो आदमी बच्चे भेड़ बकरी हांकते हुए मिले। 'ये दिन में आ जाते हैं इधर पशु ले कर शाम पड़ी कि भागे। गालों का वास है। सारे दिन इन पत्थरों की ढेरियों ढूहों में खखोरा मारते रहते हैं। बड़े बूढ़ों से हरेक पीढ़ी सुनती आयी है कि खजाने के टनों सिक्के, धन दौलत यहां दबी पड़ी हैं। हां कई बार मिला है भाग्यवानों को।' पूरन जी बताते हैं।

पहाड़ों पत्थरों के बीच से नालों के बहते पानी के कारण कई जगह दल दल हैं। धन्य है यह जीप और धन्य हैं इसके चालक। जीप इतनी खड़खड़ा रही है कि लगने लगा जैसे अब टूटी अब टूटी। ऐसा शून्य कष्टपूर्ण भयानक दुर्गम और अभिशाप के दुर्भाग्य की कहानी कहता क्या और कोई ठौर ठिकाना हो सकता है?

'यह किसी समय कछवाहा राजवंश की राजधानी थी। धनिक प्रजा श्रेष्ठियों की चहेती बड़ी सुनियोजित ढंग से बसी हुई एक कलापूर्ण नगरी। धर्म और पराक्रम की प्रतीक।' पूरन जी बता रहे हैं। पत्थरों पहाड़ों और नगर के ध्वस्त खंडहरों के बीच बड़े विशाल वृक्ष हैं। बड़ पीपल, गूलर और न जाने कौन कौन से? बरगदों का तो जैसे यहां भण्डार है। ऐसे लम्बे चौड़े बरगद की देखते ही भय लगता है। अजगर की तरह जमीन पर फैली जड़ें। भयानक सर्पों की तरह कुण्डली जकड़े जटाएं। एक बरगद में से कई कई बरगदों का समूह। जैसे अभिशापित सम्पन्न प्राणियों की जीवन शक्ति सोख कर यहां का जंगल राक्षसी जबड़ा और बांहें फैला कर खड़ा है।

जीप और सवारों का बुरा हाल है। सिर भन्ना रहा है मेरा और आंखों की पुतलियां बरौनियों पर टंग सी गयी हैं। दृश्य पर दृश्य बदल रहे हैं। मन पर उदासी भरी अवसन्नता छा रही है। ड्राइवर साहब बार बार उतर कर पत्थरों को हटा कर जीप के निकलने का रास्ता बना रहे हैं। अरे! यह क्या? राजमहलों के परकोटे! नगर प्रवेश का मुख्य दरवाजा। कितना ऊंचा? खूब बड़ा कांच का महल जैसे हाथ से गिर कर कहीं कहीं तड़क जाये, कहीं कहीं चूर हो जाय! ऐसे ही पूरा भानगढ़ हमारे चारों ओर है। शाप की विनाशकारी, शक्तिशाली ठोकर ने जिसे एक रात में चकनाचूर कर दिया है। हमने अब जीप की रफ्तार बहुत धीमी करवा दी है।

हम कछवाहों की राजधानी के हृदय में प्रवेश कर चुके हैं। सचमुच कभी भव्य नगरी होगी यह कभी? हम उस वक्त के बाजार से गुजर रहे हैं। दोनों ओर

चबूतरे सीढियां, जीने, छतें आला ताखो से भरी दीवारे, छज्जे बरामदे, दरवाजो की मेहराबें, दुकानो के बीच बीच म रास्ते। कुए मकान हवेलिया, समाधिया छतरिया और असख्य यादो से भरी यादगारें। शाम के कचलाये नीम अधेरे मे कसी मुतही नगरी ? कछवावा राजपूतो की शानदार राजधानी का कसा हाहाकारी भयकारी रूप ? कही पूरी दीवार कही आधा लटका द्वार, कही उघडी बुज, कही रोते बिसुरते राजाशाही कगूरे कही बडे बडे स्तम्भो पर टिके मेहराबी दरवाजो के झुके टूटे कधे। अजीब सा तिलस्मी मजर। चिमगादड, उल्लू एव परिंदो के पखो की फडफडाहट। मारो की आवाजें। टूटे साबुत मदिरो के बीच मदिर ही मदिर। सध्या आरती के शख घटो की आवाजें और भी सन्नाटे का, भय को बढा रही है। हर ओर विचित्र सी दहशत व्याप रही है। कई चक्कर हम उन खडहरो के लगा चुके हैं। आश्चय कौतुक, उत्सुकता और पीडा का बोझ हम पर व्याप्त है। टूटे खिलौने की तरह दूर तक फैले नगर को देख कर बुद्धि हैरान रह गयी है। अगर सच है, तो कितना निष्ठुर रहा होगा वह अभिशापित क्षण ! उजाड पडा है तभी से यह। कई घर साबुत से मगर एक आदमी भी इनमे नहीं बसता। धारणा है कि रात बसा जिंदा भोर उठा मुर्दा। रोमाचित हो रही है पूरी देह रोम रोम सिहर रहा है। किसी किसी दीवार बरामदे मे ऐसा बढिया प्लास्टर, बेल बूटे, बढिया फश जसे कल ही बने हो ! जगली जानवरो और साप बिच्छुओ का भय दिलाया गया है। हम वसे ही स्तब्ध बेहोश से दूसरी ओर मुड जाते हैं।

यह फिर एक और अजूबा। सैकडो मीटर रेत। मिट्टी के ढेरो मे दबी यह कसी खडहर हुई आलीशान इमारत है ! देखते ही डर लगता है। क्या है यह ? कितने सारे बरामदे ? प्रेत सी झुकी भयावह भारी छतें। चिमगादडो के उडने से झरझर-भडभड गिरता मलवा। झाडिया पर ऊपर की मजिल म भी मेहराबें। दालान गुम्बद। जमीन से इतनी ऊची है यह इमारत कि गदन दुखती है देखते हुए क्या गोरखधधा है ? ओहो ! यही तो महल था। और वह ऊपर, बहुत ऊपर पहाडी पर ? वह स्थान सेवडे (तांत्रिक) की छतरी है। और ठीक इसके दूसरी ओर ? वह रानी की छतरी है। वहा महल ? वहा मदिर ? तभी दायी ओर कोई जानवर भागा या परिंदा उडा कि खडखड पत्थर लुढके। वह देखा वह इतनी सुदर हवेली का खडहर ? कहा ? वह नाले के पास ऊचे कगूरेवाला ? वह उस समय की प्रसिद्ध अत्यधिक सुदर और मान-गुमानभरी नतकी की हवेली है। वह परकोटे के ऊपर विशाल नक्कारखाना है। सुबह से शाम तक हर पहर नौबत बजती थी। बराबर म भैरू जी का मदिर है। ये सभी राजधानी के फाटक हैं। कुदो से लस। मुख्य-मुख्य द्वार थे—सयद लुहारी दरवाजा, दिल्ली दरवाजा जी का फाटक। फुलवारी का द्वार। उधर चौखूटा घेरा है। सीढिया हैं। ५ झिलमिल छतरिया हैं न। यह थी बहुत सुदर फल फूलो स लदी बीच म था सरोवर। आसपास थे रग रोगन चित्रो और वभव स सज्जित

सरदारो अहलकारो के आवास। अब भी सब ताजा ताजा खडे हैं। पत्थरो के बेशुमार ढोको टीलो के बीच म।

हम दूसरी ओर मुड कर गिरते पडते ठोकरें खाते चल पडते हैं। जीप तो अब जा ही नही सकती। बहुत देर बाद नारी पुरुषो के स्वरो की गुनगुनाहट कानो से टकरायी है। पत्थरो के ढेर अब कम होते जा रहे हैं। थोडी समतल भूमि आयी है धुआ उठ रहा है। परन्तु समतल जमीन तो बीच म थोडी-सी ही है। चारो ओर बहुत गहरा जगल है। समाधिया ही समाधिया, सामने उबडखाबड चबूतरो के बीच एक तिवाडा। भीतर कच्चा बडा सा आगन। फिर उजाड। चारो ओर दालान। चबूतरा। इसमे फिर तिवाडा। आगन मे भीमकाय चूल्हे बने हुए हैं। बडे बडे कढाव औंधे पडे हैं। पहलेवाले तिवाडे मे घुप्प अधेरा है। धूनी लक्कड सुलग रहे हैं। राख की ढेरिया—इन्ही लक्कडो पर पतीले मे चाय बन रही है। ये कैसी समाधिया हैं? यह धूनी किसकी है? वातावरण मे ऐसी धुकधुकी सी क्यो है?

अब आप नाथ सम्प्रदाय के आश्रम मे हैं। नाथ बाबा आनेवाले हैं। हम थक कर चूर हो रहे हैं। उसी टेढे मेढे चबूतरे पर बठ जाते है। सामने भानगढ खडा भाय भाय साय साय कर रहा है। कोई बाबा का भक्त पेट्रोमैक्स जला कर रख गया है गोला का बास से ला कर, जो लगातार भक भक् करके और भी डर पदा कर रहा है। बाबा शकरनाथ जी महाराज आते हैं। बडी विचित्र अपूव सज्जा है। एक हाथ म तूबी और कमडल। दूसरे मे गाठ गठीला सप की तरह बलखाता डडा। फटे काना मे शीशे के भारी-मोटे कुडल। पूरा लिबास स्याह काला है। एडी तक लटकता चोगा, सिर पर टोपानुमा लिपटा काला कपडा। स्वभाव से मृदुल प्रसन्नचित्त द्वार से लगी ऊची चौकी पर बठ जाते है। भक भक रोशनी मे और चारो ओर के सन्नाटे मे उनकी आकृति मन को सिहरा रही है। कुछ आदमी हम लोगो को बुलाने आये हैं। कौन हैं इस उजाड मे ये लोग? बाबा का हुक्म होता है कि पहले सब जा कर शिव का प्रसिद्ध-प्राचीन मदिर देखिए—फिर इन लोगो की गोठ (दावत) आरोगिए (खाइए)। यह पार्टी गोठ करने आयी है। मन्दिर म। अब जानेवाली है। हम सब तुरन्त चल देते हैं। साथ म बाबा के ग्रामीण शिष्य भी हैं।

भैरू जी, गोपीनाथ जी और हनुमान जी के उच्चकोटि के मन्दिर रास्ते म पडते हैं। फिर वही पत्थर। रिसते पानी के झरनें विशाल मर्पीले बरगद। घना जगल। जानवरो-कीडों का भय पैरो म दहशत बो रहा है। सामने एक सरोवर है। गोठ मे आये लोग स्नान कर रहे हैं। अनवरत बारहो महीने एक पहाडी झरना इसमे गिरता है। सरोवर का पानी कहा जाता है? पता नहीं यह तो बराबर इतना ही लबालब भरा रहता है। इसके जल म स्नान करना सिर आखों पर लगाना बहुत पवित्र माना जाता है। हम भी उसम उतर कर हाथ मुह धाते हैं।

आचमन लेते हैं। राजस्थानी प्रिय भोजन दाल चूरमा और मिश्री मावा गोठ म बैठ कर खाते हैं लालटेनो का प्रकाश है। सभी को वहा से लौटने की जल्दी है।

लौट कर देखते हैं कि बाबा ने उसी ऊ चे नीचे पत्थरो वाले चबूतरो पर दरिया बिछवा दी हैं जिन्हें हम दौसा से किराये पर लाये हैं। दूध की तरह स्निग्ध चादनी फल रही है। हमने पेट्रोमैक्स बुझवा दिया है। चादनी मे नहाते भानगढ के के खडहर और भी रहस्यमय हो उठे हैं।

बड पीपल और गूलरो के बीच बहुत बडा एक मोलश्री का वृक्ष चबूतरे के ऊपर छतरी की तरह छाया हुआ है। छोटे छोटे कानो के झुमका की तरह सुगधित पुष्प हमारे ऊपर बार बार झर जाते हैं। समाधियो और भानगढ के उजाड घरो के विषय म चर्चाए चल पडती हैं। बाबा बता रहे हैं और हम सब जडवत सुन रहे हैं, 'इस घनघोर जगल मे आदमीजात कोई नही। ये सभी समाधिया बाबा बालनाथ जी बाबा शकरनाथ जी तथा अन्य भक्तो की हैं। सभी जीवित समाधिया हैं। मतलब जीवित ही वे लोग समाधिस्थ हो गये थे। यह अठारहवी पीढी चल रही है नाथ सम्प्रदाय की यहा पर। हमारा यह पिटारा लगभग ग्यारह सौ वष पुराना है। इसे बाबा बालनाथ जी का धूणा भी कहते हैं। भैरू जी, मा दुर्गा और ब्रह्माणी की निरन्तर पूजा होती है। नवरात्रि दशहरा दीवाली और होली पर इस उजडी-मुतही नगरी म दशनार्थी (आसपास गावो से) आते हैं दिन रहते ही लौट जाते हैं यह जो मौलश्री का पेड है न ! इसके नीचे मैंने पूरे बारह वष तक एक पाव पर खडे हो कर तपस्या की थी। एक शेर रोज बगलवाले नाले पर पानी पीने आता था। मेरे पास रुकता, बठता धीरे धीरे वह पालतू सा हो गया। मोती नाम रखा मैंने उसका। एक पत्थर की परात अपने हाथ से बनायी। गडरिये और भक्त उसे दूध से भर देते थे। वह रात मे आ कर पीता था मेरे पैर के पास बठ कर। शिव मदिर मे वह परात सुरक्षित रखी है। (हमको भी वह दिखायी गयी)।

यह इतनी तीव्र मनोहारी सुग ध कसी है यहा चप्पे चप्पे मे ? बाबा बताते हैं—'यहा बहुत केवडा है गौमुख से ले कर पूरे गोलाकार घेरे तक। चन्दन के वृक्ष भी हैं। इसीलिए सप खूब हैं। यह चन्दन केवडे की खुशबू है।'

यह एकदम सामने समाधियो से लगी अकेली खडहर हुई इमारत कसी है ? बडी डरावनी और कितनी साबुत है टूटने पर भी ?

'यह पीर का घर है। इसके पीछे कहानी है—भानगढ के राजा का था एक मन्त्री। कुछ भयकर कसूर हो गया उससे। फासी का हुक्म मिला। रात मे छिप कर दौड कर आया और थरथर कापता गिरा बालनाथ बाबाजी के चरणो मे। बाबा ने तुरन्त उसके कानफाडे और बैठा लिया पास मे। क्रोध मे कापते सिपाही फिर राजा आये। लाओ हमारा दण्डित कदी। बाबा बोले, तू क्या दण्ड देगा ? हमने दे दिया। अब वह मेरा चेला है। जाओ तुरन्त यहा से। राजा लौट गया। मत्री की पत्नी आयी कि स्वामी के बिना मेरे जीवन का क्या होगा ? बाबा ने तब

राजा से कह कर यह पीर हवेली बनायी अपनी धूणी के सामने। मंत्री के केवल दो पुत्र हुए। बाबा ने कहा कि इनमे से एक करेगा गृहस्थी और दूसरा करेगा मेरी चाकरी। तभी से यह प्रथा जारी है।"

बाबा ने थोडी देर चुप हो कर ध्यान लगाया है। सामने मोढो की बडे श्रेष्ठि की, दीवान की नतकी की, पीर की और खिरनीवाली हवेलिया जसे पत्थरो की ढेरिया पर ऊंघ रही ह कभी इनमे हास्य मनोरजन, व्रत अनुष्ठान, गायन नतन और मत्रणाए होती होगी ? आज विध्वस का चरम बिंदु बन खडे है ये भूतकाल के अवशेष ? कसी मानसिक पीडा रही होगी जब लाग धन धान्य से भरे अपने अपने घर छोड कर भागे होगे ?

बाबा का खरखराता स्वर फिर उभरा तुमने हिम्मत की है हमारी धूणी —समाधियो पर बठने की। बीस वष की उमर मे हमने पत्नी को मा कह कर कान फडवा लिये। गुरु बालनाथ जी की आज्ञा से भानगढ को तपस्या के लिए चुना। उम्र ? लगभग साठ। बारह साल की तपस्या ! वह भी जनशू य भयानक जानवरो स भरे इस जगल मे। इस मौलश्री के मोटे तने मे एक रस्सी लटका रखी थी। नीद का झटका आने पर उसे थाम लेता था। गर्मी सर्दी, वर्षा सब सिर और पाव पर पूर पैर मे दो दो सूत की दरारें पड गयी थी। साभर तरह तरह क साप बिच्छू, भेडिये तेंदुआ और शेर धीरे धीरे मित्र बन गये थे। जल के लिए पानी का टाका भ.जन के लिए पेड से टूटे वह भी अनायास फल थे।

यह भानगढ ? वतमान जयपुर के राजवश का सम्ब ध जुडा हुआ है यहा। कछावा राजवश के राजा की सवप्रथम यह राजधानी थी। दो सगे भाई थे। जब यह नगर उजडा, तब एक भाई गये अजबगढ और दूसरे गये दौसा जो आज भी सूरजमल जी भौमिया के नाम से पूजे जाते हैं। फिर अजबगढ भी बरबाद हुआ तो वहा से उठ कर आये जमवारामगढ। यहा से गये आमेर। फिर आमेर से स्थायी रूप स आये जयपुर।

बात भानगढ के विनाश की आर मुड चली। बाबा ने कहा कि 'भानगढ विनाश क कई किस्से हैं। लेकिन सर्वाधिक रूप स जो चर्चित है वह यह है कि उस समय यहा तान्त्रिको साधुओ और ज्योतिषियो का सम्मान के साथ ठहराया जाता था। रानी राजा और प्रजा की अभिरुचि कलापूण थी और धम म उनकी गहरी आस्था थी। रानी बडी रूपवती गुणवती तथा स्वय तत्रविद्या की ज्ञाता थी। उन्ही दिनो म सिंघा नामक सवडा तान्त्रिक, राज्य म आया और उस सामने वाली पहाडी पर आसन जमा लिया। आज जहा उसकी छतरी ह न इसी पर। सामने था रानी का महल। रानी के सौन्दय पर वह मोहित हो उठा। अपनी तत्र मत्र शक्ति से रानी को अपनी आर आसक्त करन क उपाय सोचने लगा। रानी की दासी एक दिन जब बाजार से लौट रही थी तब सेवडे ने अपने तत्रज्ञान का परिचय दे कर दासी को तेल दिया। वह तेल जादू टोने और तत्र स बधा हुआ था। तान्त्रिक न दासी स

कहा 'अपनी रानी से कहो कि इसे सिर मे डाले और पूरे शरीर पर लेप करे। उनका अति कल्याण होगा। हम तंत्र सिद्ध बाबा है।"

दासी ने रानी को वह तेल दे दिया। उसने तान्त्रिक का हुलिया और तल देने का कारण बताया। यह कसा तेल है? सेवडा कौन है? यह परखने के लिए रानी ने तेल पर अपना मन्त्र डाला। तेल घूमने लगा। रानी अपने सत से और सिद्ध शक्ति से जान गयी कि तेल म वशीकरण मन्त्र तथा मारक-तन्त्र का प्रयोग किया गया है ताकि रानी सेवडे की ओर आसक्त हो कर उससे मिलने को बौरा उठे। रानी इतनी क्रोधित हुई कि उसने अपने स्थान से एक जबरदस्त तन्त्र मन्त्र पढ कर उस तेल म फूक मार कर, वही से सामने वाली पहाडी पर वह तेल फेंक कर मारा, जहाँ वह सेवडा तान्त्रिक बठकर साधना कर रहा था। तेल एक भयानक शिला के रूप मे वहाँ से उडा सेवडे के ऊपर जसे कहर टूटा। तत्काल उसकी मृत्यु हो गयी। तभी से उसी पहाडी की चोटी पर सेवडे की छतरी खडी है। रानी ने इस लिए ऊँचाई पर इसको बनवाया ताकि भविष्य मे कोई भी तान्त्रिक अपन देश की रानी पर अथवा किसी भी सभ्रात महिला पर कुदृष्टि न डाले। लोग उसका अन्त देखें और भयभीन हो।

यह राजधानी क्यो शापग्रस्त हुई? इसके लिए कहा जाता है कि ग्यारह सौ वष पहले बाबा बालनाथ जी और बाबा शकरनाथ जी यहाँ इसी जगह जहाँ आप बठी हैं तपस्या कर रहे थे कि उनके पास बडा तेजवत राजा आया और इस भयानक खतरनाक जगल मे अपना राज्य बसाने की इच्छा प्रकट करने लगा। नमस्कार करके जब अपनी इच्छा के लिए आज्ञा मागने बठा ता गुरु बाबा ने देखा कि वह 'वीर आसन' (दपपूण मुद्रा) म बठा था। बाबा को यह अभद्रता लगी लेकिन इतना ही कहा कि 'जा जितनी भूमि पर तीन परिक्रमाएँ लगा लेगा वह तेरी होगी।' परिक्रमाएँ लगाकर वह फिर उसी गवपूण वीर आसन म आ बठा। अब बाबा अपने क्रोधावेग को रोक नहीं पाये। आखें अगार हो उठी। शाप दिया जा अविवेकी, महात्माओ के सम्मुख बठने की शालीनता तुझम नही है इसलिये तू राज्य तो बसायेगा लेकिन जिस तरह तू एक पाव वाली गर्वीली मुद्रा म बठा है वसे ही एक पाव (अनिश्चित अशात) तरा राज रहेगा, दूर हो यहाँ से। राजा स्तब्ध! भूल का भान हुआ। पश्चाताप से भरकर रोया। परो मे गिरकर गिडगिडा कर प्राथना करने लगा। सत ने हुक्म दिया उठ तू जो अपना महल बनवायेगा सामन उसकी छाया मेरी तपोभूमि धूणी पर नही पडनी चाहिए। तब तेरा राज्य स्थिर रहेगा।

राजा ने मन्त्रीगणो की सलाह पर जब यह महल जिसे देख रही हैं, बनवाया तो छाया धूणी पर पडी। बस शाप के अनुसार सारा राज्य बरबाद हो गया। प्रजा को भी यह पता था कि सन्त को क्रोधित कर दिया तो राज मे तन्त्र शक्ति भूकम्प ला देगी। सारी प्रजा भाग गयी जब यह नगर उजडा था।

पूरी रात नींद कहाँ आनी थी उस भयावह शून्यता में ! बस इन्हीं चर्चाओं में, साप बिच्छुओं के डर में उदास बिसूरते खडहरों को देखने में सुबह हो गयी। हम लोग श्रद्धापूर्वक सत बाबा को और सभी समाधियों को प्रणाम करके गोला का बास लौट चले जहाँ भानगढ़ राजा के वशज टीकाई के रूप में आज भी मौजूद हैं। उनसे मिले बिना मुझे भानगढ की कथा का अथ सार अधूरा सा लग रहा था।

ठाकुर साहब की हवेली तक जब हम पहुँचे हैं, तब तक रात हो गयी है। हमारे बाहर बैठने के लिए दरी चादरें बिछाकर खाटें डाल दी गयी हैं। ठाकुर सूरजसिंह जी बड़े रोबीले और खनकदार आवाज के धनी लगे। उनके बेटे घर की जमींदारी भी देखते हैं और नौकरी भी करते हैं। वे भी वहाँ के कुछ प्रमुख ग्रामीणों के साथ आकर बठ गये। हमारे आने का प्रयोजन सुनकर ठाकुर साहब बहुत प्रसन्न हुए बोले "धन्य भाग हमारे और करम तिरे इस भानगढ के। बड़ा आभारी हूँ कि आपने इस करमजले अभागे भानगढ को याद किया। आप कष्ट पाकर यहाँ तक पधारी हैं युगों बाद सौभाग्य जागा है इस अभिशापित जगह का।"

मेहमानदारी के बाद वे भानगढ के अतीत की कहानी सुनाने में जसे डूब गये— देखिए जी उन्नीस गाव का बट लेकर बसायीथी भानगढ राजधानी। अजबगढ सूरतगढ, चौसला, पलसाना पड़ाव गढबसई होदाहेली, पिपलाई गोला का बास बुजो और गढ राजोर आदि बारह गाव मीणाओं से लडकर लिये। कई राजा बठे गद्दी पर लेकिन महाराजा चतुरसिंह जी के काल में यह सुदर कलात्मक नगर उजड़ा था। हाँ सन्त जागा बाबा द्वारा लगभग 585 वर्ष पहले भानगढ बसा था और लगभग 287 साल हो गये उजडे हुए। आज भी चतुरसिंह जी महाराज की समाधि बनी हुई है। छतरियों के रूप में चार स्मृतियाँ हैं।

उनकी पत्नी रत्नावली तीतरवाडा की बेटी थी। अपने समय की बड़ी विदुषी, सुन्दर, पतिव्रता, धार्मिक और तन्त्रविद्या में निपुण थी। वह कितनी सतवती थी, इसी गाने से जान लें। आसपास की नारियाँ हरेक शुभ कारज पर गाती हैं—

राणी थान डूबत जहाज तिराई जी
चुड़ला में नीर बहायो सा
भानगढ की राणी मा
कलयुग में असल भवानी सा

कहीं नदी में किसी व्यापारी का जब जहाज डूबने लगा तो उसने रानी रत्नावली का मन ही मन जाप किया। तन्त्रबल से रानी जान गयी। जितना जल जहाज में भर गया था, सारा अपने चूड़ा में भर भर कर भर कर बहा दिया। जहाज बच गया।

इस भानगढ स्टेट के राजगुरु संत बाबा दादूपंथी महात्मा जी थे। इधर-उधर रमते घूमते रहते थे। स्टेट कभी कभी आते थे। यहाँ उनके चेले चपाटे पड़े रहते थे। महाराजा उनका आदर करते थे और रानी उनकी परम भक्त थी। इसलिये राजकाज से लेकर महलों तक, राजा से लेकर रानी तक और प्रजा से लेकर सेना तक उनका अत्यधिक प्रभाव था। परिणामस्वरूप राजा के सभासद मन्त्री और मुसाहिब लोग महात्मा जी से मन ही मन बहुत जलते थे। एक बार भानगढ में आकर बाबा समाधिस्थ हुए। पूरी अवधि बताकर हुक्म दे दिया कि कोई भी भीड़, शोर एवं अशांति नहीं होनी चाहिए। आदेश देकर एक कोठरी में भूमिगत समाधि ले ली। ईर्ष्यालुओं को मौका मिला। एक मरा हुआ जानवर भीतर डाल दिया। जब वह सड़ कर दुर्गन्ध देने लगा तब उन जलने वाले चाटुकारों ने कहा कि महात्मा अन्दर मर गये हैं। शव से बदबू आ रही है। विनाश काल में बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है न! सो बिना सोचे समझे लकड़ियाँ चिनवा कर (दाह क्रिया के लिए) समाधिस्थ सन्त को जीवित ही जला दिया। बाबा के प्रमुख भक्त शिष्य ने तन्त्र विद्या की शक्ति, हाथ में लिये जल में फूँककर शाप दिया कि रात भर में यह नगरी खाली कर दो प्रातः होते ही बड़ा अनिष्ट होगा। जो जैसा था वैसा ही भाग पड़ा।

रानी ने जैसे ही अपने परमात्मास्वरूप गुरु के साथ षडयन्त्र की गन्ध सूँघी कि वह क्रोध से पागल हो उठी। महल से छलांग लगाकर मृत्यु का वरण करने से पूर्व यह अभिशाप दे गयी कि यह उजाड़ नगरी कभी नहीं बसेगी। कोई यहाँ रह कर जीवित नहीं बचेगा। इस पापी राज का सात पीढियों तक वंश नहीं चलेगा। सभी जानते हैं कि महाराजा माधोसिंह जी तक सात पीढियाँ निःसन्तान रहीं। महाराजा मानसिंह जी गोद आये तब पीढी आगे चली। हाँ इस राजवंश की वास्तविक कुल देवी जमुआ रामगढ की 'जमवा देवी' हैं। राजघराने के जात जडूले सभी वहाँ सम्पन्न होते हैं। तभी से यह भरी पूरी नगरी अभिशापित है। तीन पक्के सरकारी पहरेदार उजड़ने से बचे हुए मन्दिरों के लिए पुजारी लोग हैं। पहरेदार इसलिए हैं कि कोई तोड़फोड़ या खुदाई न करे। क्या पूछती हैं? लोग छिपकर खुदाई खखोड़ा करते ही रहते हैं। घोड़े बाँधने के ठौर बावड़ी और प्रसिद्ध शिव मन्दिर की खुदाई होती ही रही है। शिव मूर्ति तोड़कर रख दी है। सारी प्रसिद्ध हवेलियों की भी यही हालत है। यह जो महल देख कर आयी हैं कहा जाता है कि इसके नीचे सात मंजिलें कई सुरंगें मलबे के ढेर के नीचे दबी हुई हैं। इसी प्रकार ऊपर केवड़े की छतरी के नीचे मकानात हैं सुरंग-तहखाने हैं। जाने कितना लम्बा-चौड़ा भानगढ और इसकी दौलत इन पत्थरों के सागर में समायी हुई है।

क्या अजबगढ? अजी, इसकी भी बड़ी निराली तन्त्र लीला है, जब आप यहाँ तक आयी हैं, तो इस तन्त्रमाया से उजड़े स्थान को भी जरूर देखकर जाइए, आप देखेंगी कि मूठ तन्त्र और जादू टोनों ने क्या से क्या कर दिया है? वहाँ जरूर

जाइये लेकिन पता और पत्र लेकर वहाँ जाइये वरना कोई बात भी नही करेगा। हम ठाकुर साहब का और अलवर वाले पंडित जी का पत्र कलाशचन्द जैन के नाम लेकर जाते हैं। सभी खोये खोये से उधर की ओर चल पड़ते हैं। पांवों मे भय भकृत हो रहा है। यहाँ के जादू टोनो के जाने कितने किस्से सुने हैं। सभी जातियां के लोग तन्त्रविद्या मे सदियो से पारगत। मूंग की साबुत दाल, तिल के दानो अडो पत्थरो सातियो चावलो और कपास के बिनौलो पर मन्त्र बींध कर दुश्मन पर फेंकने (मूठ मारना) की कला मे अजबगढ सिद्धहस्त रहा है। खजाने की खोज मे यहाँ का किला खोदकर रख दिया है। यहाँ किले मे लेकर रघुनाथ मन्दिर तक भयानक सुरग है। जहाँ आज भी जादू तन्त्र का पत्ते पत्ते म असर है, वहाँ जाने के लिए दिल की धड़कनें असतुलित तो होगी ही। पर तु इच्छाशक्ति के हठ का क्या इलाज? लौटते समय फिर वही भानगढ का हाहाकारी मजर है। भरन, हवेलियाँ महल छतरियाँ केवड़ा, टूटे परकोटे, महराबें कगूर तिदरियाँ सपीलें, घराइश (सफेद गोटे सा चमकीला पलास्तर), बाजार, मन्दिरो की कतारें समाधियाँ मकबरे। जैसे सबके सब अभी और रुकने के लिए पकड़े ले रहे हैं। धौंक, लौंज, सेमल छीला रौंद और पत्थरचक्की के पेडो से लदे जगल से होकर हम अजबगढ की ओर जा रहे हैं। सब खामोश बुत बने बैठे हैं। सेवड़े की ओर सन्त बाबा के शाप की कथाएँ पहले ही दिमाग को निचोड चुकी हैं। अब साक्षात मारक मन्त्रो के घेरे मे अपने आपको कसने चल दिये हैं। गोला का बास के टीकाई ठाकुर साहब ने अपने खुद के अनुभव बतलाकर और सुन्न कर दिया है।

अजबगढ को देखकर मैं हैरान रह गयी हू। यह भी भानगढ की तरह आधा उजड़ा खड़ा है। थोड़े से नये घर और दुकानें दूसरे हिस्सेमे दिखाई पड रहीहैं। तलाश किसकी करें? गिनतीके घरहैं। दो चार से पूछने पर ही कलाशचन्द जन परचूनी वाले मिल गयेहैं। जीप कमरा और कई शहरी लोगो को देखकर पहले वडे बिदके और भी दस पांच लोग सामने आ गये हैं। हमने अलवर वाले पंडितजी, नारायण जी शर्मा का हवाला और ठाकुर साहब का पत्र दिया तब तो वातावरण का रग ही बदल गया है। कुछ लोग फिर भी कुछ बताने के विरोध म हैं डरते हैं कि साहब, किसे अपनी मौत बुलानी है। नही जी यहाँ सब ठीक है। वही म से कुछ समझदारी से सभी को समझाते हैं कि कोई भय नहीं है। जमाना बदल रहा है। हम तो इस अभागे की नगर कहानी जानने आये हैं। सब बढ़कर होकर अजबगढ की आप बीती सुनाया। कुछ देर बाद सभी तयार हो जाते हैं। खाट जाजिम की बिछावट पर आराम से बैठते हैं। खातिरदारी म सभी आगे मार लेना चाहते हैं क्योंकि हम लोग उन ठाकुर साहब के खास व्यक्तियो मे म हैं जो बारह गावो के टीकाई हैं जिन्हें शादी और भाने म पहले सिरोपाव मिलता है जो जयपुर राजघराने का भेंट स्त पाये हैं।

अस्सी, नब्बे वर्ष के तीन चार बुजुर्ग भी वहाँ बुलाये गये हैं जिनसे जानकारी मिलेगी। ज्वालासहाय जी जो लगभग 70 75 वर्ष के हैं, बताते हैं—बेटी मां, इस अजबगढ की मन्त्रविद्या बडी ठाढी (ऊंची) रही है। बहस व दी म सारा नगर उजड गया। इसे महाराजा अजबसिंह जी ने बसाया था इस झिलमिल दह के नजदीक। आप देखोगी, कैसे सुदर झरनो से हरियाली से, शिकार-औदियो से भरी जगह है झिलमिल। दुनिया आती है यहाँ सर करने। करीब सौ साल पहले तो यहाँ कालबेलिये (सपेरे) बहुत आया करते थे, जो तन्त्र मन्त्र में माहिर होते थे। पहले गाव म आकर सारे घरो की रोटी भात खाते, फिर बहस बन्दियाँ करते। ललकारते कि या तो हमारे मन्त्रो से तुम हारो या तुम हमे हराओ। खूब कच्ची पक्की चौकियाँ मैंने देखी सुनी हू। सिन्दूर म लिपटे उडद मूंग और तिलो पर मन्त्र तन्त्र फूंक मार कर जिस पर छोडें, वह या तो पागल हो जाता था या अपग। पहले तो यह हालत थी कि जगल म जाओ या गलिया रास्तो म। तेल सिन्दूर मे लिपटे दाने पडे मिला करते थे। जाने कब किसकी कजा आ जाती थी! हाँ क्यो नहीं। आज भी दस बीस आदमी इस इल्म मे बडे पुख्ता हैं। जितने भी घर हैं सभी मे भरू जी और देवी की मूर्तिया मिलेंगी। मूठ तो खास दुश्मन के लिए मौत के लिए छोडते हैं। कच्ची पक्की चौकियां ज्यादा चलती हैं। अग भग हो जाये। आदमी न जीने मे रहे, न मरने में। कच्चे कलुए भी बहुत चलते हैं। इसके लिए समान (श्मशान) मे मास, कलेजी, दारू फूल बताशा से साधना करनी पडती है। मुर्दे के शव सने (काबू मे करना) पडते हैं।

घनश्याम जी महाजन आगे आये हैं। उन्होने बताया—नादिया की मूर्ति है यहाँ पर। एक आदमी ने सुबह उठकर कहा कि मन्त्रबल से मैंन जाना है कि नादिया का करम फाडो और माया लो। एक नाई ने माथे से दी टक्कर, दूसरे ने मन्त्र बीच मे ही फूंक दिया। नाई का सिर फट गया। तीसरे ने तन्त्र मे बीध कर पत्थर नादिया पर फेंका। मोहरें ही मोहरें निकल पडीं। सभी ने लूटी। अभी थोडे दिन पहले ही शिव की विशाल मूर्ति तोडी है धन माया के चक्कर मे आकर। बात यह है जी कि जब यह नगर बाढ से तन्त्रविद्या से उजडा, उधर भानगढ एक रात म वीरान हुआ, तब वहाँ के मन्दिर से लेकर ठेठ यहा के मन्दिर तक सुरग से होकर खजाना लाया गया था। इसी चक्कर मे यहा की भी और वहा की भी जमीन म जाने कितनी दौलत गक है। यहा के किले का सारा फर्श खोद कर पटक रखा है। हाँ खुदाई से निकलता रहता है कुछ न कुछ। आगे भी निकलेगा ही। जिसकी किस्मत मे होगा लेगा। किले के और शिव तथा हनुमान मन्दिर के आसपास हजारो बार रात मे गाने नाचने की आवाजें सुनी गयी हैं। कोई नही जाता रात मे उधर आज कल। कौन जिस, भूत प्रेतो मे जाकर मरेगा?

घासीराम जी व्यापारी अजबगढ का सामती युग बताते हैं—'पहले इस नगर की चहल पहल से भरी खूब आबादी थी। सोनभद्रा नदी को रोककर यह

जयसागर बांध जब बनाया गया तब इस विशाल बंधे ने सारी जमीन घर हड़प लिए। डेरा मकान कुए इसके पेट म समा गये। तिहाई नगर बरबाद। दुहाई किससे करते ? राजा का जमाना ठहरा। बोल सकता था कोई ? सिपाहियो और सनिका के डडे बरसते थे। किले पर हर वक्त हथियारबन्द पहरायत रहती। तोप बारूद तलवार भाले तने रहते गदन पर।...बंधे के नीचे बाग। उधर झिनमिल। शिकार-औदियाँ। आये दिन राजा के जश्न शिकार। तम्बू डरे लग जाते। आदमी बेगार मे पकडे जाते। नगर से सारा सामान जाता। पस दिये न दिये। कोई हिसाब नही। बकरे मुर्गे दूध दही आटा सब ठोकर और डडे पर वसूला जाता। एक प्रसिद्ध महाजन था। आये दिन खचेडा जाता कि ला चार पाच हजार। कहा से लाऊँ? कि चल ये भी ले और ऊपर से दे डेढ-दो सौ रुपये का जुर्माना। आध से ज्यादा भाग गये बाप दादो की जगह छोड कर इधर उधर। ऊपर से जादू टोटको का डर साप चीते से भी ज्यादा रहता था।"

दिनेशचन्द्र शर्मा कहने लगे—सच तो यह है कि इस सम्पन्न नगर का सव नाश तीन कारणों से हुआ। पहला तो सबसे अधिक रहा है तन्त्रविद्या का दुरुपयोग, दूसरा अरावली की बारहमासी सानभद्रा नदी का यह बाध, और तीसरा, राजा के डेरे तम्बू। ये हजारीलाल पडित रहे। घासीराम जी और प्रभुदयाल जी रहे। सब जानते हैं कि यहा थ एक श्यामजी भट्ट बडे तात्रिक और विद्वान थे।

एक दिन सपेरे आये कि हम इस गाव म बाज' खेलेंग। (मन्त्रो स हाथ पाव नजर बाध कर पटक देना) लगभग साठ कालबेलिये थे। बहुत मना किया कि यहा एक से बढ कर एक जादू-तन्त्रा म निपुण हैं। (यहा की लगन तो तन्त्रमशान मे दूर दूर तक मशहूर थी। उनक तन्त्र से बचने का उपाय ही नही था।) जब सपेरे नही माने तो उन सभी पर यहा क श्याम जी भट्ट ने तन्त्र फूक दिया। उसी ठौर साठो मूछित। कान मुह म मे खून। सभी जसे मृतप्राय। पानी लेने गयी हुई एक बूढी सपेरन ने लौट कर चरणा म गिर कर प्राणा की भीख मागी। तब तीन पत्थरो पर लिख कर सौगध दिलवायी कि इस नगर म भूल कर भी मन्त्र चलाने की कोशिश मत करना। फिर आज तक किसी ने यह कसम तोडन की जुरत नहीं की। बडे निडर हैं यहा के लोग। सिद्धियां प्राप्त करने के शौकीन। जगल श्मशान दोराहो चौराहो पर देवस्थाना पर भरू दुर्गा भोमिया और हनुमान क थान मिलेंगे। एक पत्थर इधर ऐसा है जिस पर सवा लाख गायत्री के मन्त्र हैं। औरतें इसे पूजती हैं। बच्चा की सारी बीमारियां ऊपरी हवा क रोग दूर हो जात हैं।

यह लादूराम मीणा है न ! यह मन्त्र नाक म फूक कर जमीन सूघ कर बता देता है कि यहा मीठ पानी का कुआ निकलेगा। अब तक साठ सत्तर कुएं खुदवा चुका है। सिरोपाव पगडी और रुपये मिलत हैं इस प्रभाती मीणा न कई बार सूअर मढ़े में रुप म जिन्न प्रेत देखे हैं किले के आसपास। तन्त्र मन्त्र के कारण यहा की यह हालत है कि घरा म औरतें हैं तो मन नहीं दाना है, न बच्चे नगे। एगा

हाल था पहले कि एक दूसरे पर मन्त्र चौकिया और मूठ मार रहे हैं और बरबाद हो रहे हैं। टोना टोटका मन्त्र आज भी खूब होते हैं पर अब भलाई के लिए ज्यादा होते हैं। बीमारियो के लिए साप बिच्छू का जहर उतारने के लिए। पहले जरा सी रजिश हुई, ईर्ष्या जलन हुई कि चला दी मूठ। असाधारण मन्त्रो का प्रयोग अनाजा के दानो पर होता रहता था। सातो जात इस फन विद्या की जानकार थी। यो ही बहसबाजी म स्याने घपाडो तान्त्रिका न ढेर कर दिया। जिस पर मन्त्र फूँकते हैं खून बहा-बहाकर एडिया रगडता हुआ वह आदमी मर जाता है। समय बधा रहता है एक हफ्ता या पन्द्रह दिन। इसके बाद आदमी सूखता जाता है। खून की उल्टिया शुरू। बडी बुरी मौत मरता है।

पहले पच्चीस-तीस हजार की आबादी थी। अब यह मुट्ठी भर गाव हैं और मीलो तक उजडा अजबगढ। स्लट की जबरस्त चट्टानें हैं यहा। पहले तीन चार सौ भटि्ठयाँ थी, लुहारो की। आठ किलोमीटर दूर लोहे की खानें हैं। उजडा ता सब बरबाद। मिट्टी मे सैकडो लोह के मल के टीले दबे पडे हैं। कहा रखी है आमदनी ? उधार का धन्धा चलता है। फसल नही हुई तो उधारी बढती जाती है। कौन आयेगा इधर बोहरगत करने के लिए ? अजबगढ तन्त्र मन्त्रो के कारण सहज है क्या ?

फोटू पाने खीच लिख लिये गये हैं। इस पर तो सब प्रसन्न हैं, पर अधिक बुजुग अपने नाम चित्रो के साथ लिखवाने म हिचकिचा रहे हैं। कागद पर बेसी (चाहे) लिखल्यो जी पर म्हारा नाम जिकरा फोटा पर नही आवणा चाइज। थासू मा विनती छ " यही आग्रह बराबर रहा है।

पूरा अजबगढ देखकर जब हम जाना चाह रहे हैं तब उस घर मे मुझे ले जाया गया है, जहाँ कई पीढ़ियाँ श्मशान जगान मे तन्त्र मूठ विद्या मे खतरनाक रूप मे प्रसिद्ध रही हैं। अब तो इस वश के लोग खेती और बाहर नौकरी करते हैं। टूटे उखडे पुराने सन्दूको म से दीमक और चूहो से खाये सैकडो तन्त्रो के पाने मन्त्र चक्रा की कुण्डलिया और कितनी ही जादू टोटको की किताबें मुझे दिखायी गयी हैं। जानकारी के लिए बडी दुलभ सामग्री। क्या रखी हुई हैं इतनी लापरवाही से ? पुरानी वस्तुओ के सग्रहकर्ताओ को ही दे दें। मेरे यह कहने पर उस घर की प्रतिक्रिया हुई है कि इतनी ही पोथियो के तो औरतो ने कूट छान कर ढल्ले कठौते (अनाज आटा रखने के बतन) बना लिये और बना लेंगी। पहले ही चबा गयी ये विद्याए।

खूब हैरान से चमत्कृत होकर हम अविस्मरणीय अजबगढ और भानगढ से लौट चले है।

भग्न किराड़ू

बीकानेर पहुचते पहुचते शाम हो जाती है। दिमाग पर एक ही फितूर कि जो भी मिलता है उसी से प्रश्न कि यह कि किराड़ू का रास्ता कौन सा हुआ? एक ही सपाट उत्तर कि बाड़मेर से सही राय मिलेगी कि रास्ता ट्रेन वाला ठीक रहेगा या बस वाला। दूसरे दिन हमारी गाडी जैसलमेर की ओर रवाना होती है। जैसलमेर से बाड़मेर तक बड़ा शान्त वातावरण। केवल मिलिट्री की हलचलें और गाडिया। जन जीवन बेहद शान्त एव सन्तुष्ट। मैं बाड़मेर के बहुचर्चित साहित्यकार एव पत्रकार श्री भूरचन्दजी जैन से मिलती हू। किराड़ू सम्बन्धी सारे निर्देशन उनसे प्राप्त हुए हैं।

पानी की कमी और सघर्षपूर्ण जीवन यहा के निवासियो को सदा से विरासत मे मिलता रहा है, इसलिए जो व्यापारिक सुविधाएँ जैसलमेर को मिली यहा कहा? शायद तभी यहाँ स्टेट नही रही, इधर सुरक्षा की क्या गारण्टी! कोई हिम्मत करे भी, तो चोरी डकैती मे माल जाने का भय। हा, यह जरूर इधर गर्व गुमान है कि बाड़मेर के चारो ओर रणबाकुरो के स्वाभिमान के मर्यादित हस्ताक्षर खुदे पड़े हैं। वीरोचित कार्यों की गौरव गाथाओ से इतिहास ओतप्रोत है। बड़े जीवट वाले जुझारू लोग हैं इस जमीन के। साथ ही घूमने पर आप पाएगे कि इधर न केवल ऐतिहासिक वरन धार्मिक और [सामाजिक अनेको स्थान और स्मारक भरे पड़े हैं। इसी बाड़मर जिले मे किराड़ू जसोल कपालेश्वर महादेव, देवका, जूना रणछोड़जी का मन्दिर, खीरातरा गरीब नाथ का मन्दिर बिस्सू कल्ला का चण्डी मन्दिर, प्रसिद्ध जैन-तीर्थ नाकोड़ा और, आन बान शान पर मर मिटने वाले ऐतिहासिक वीर पुरुष दुर्गादास राठौड की शौर्य भूमि कनाना आदि देशी विदेशी सैलानियो का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते रहते हैं। इस धरती ने अनेको वीरो को जन्म दिया है। राव मल्लीनाथ अपने बुद्धि चातुर्य और पराक्रम के लिए, जगमाल अपने रण कौशल के लिए और चन्द्रसेण स्वतन्त्रता के लिए उत्सर्ग और मर्यादा निर्वाह के लिए गौरव के शिखर रहे हैं। तिलवाड़ा खेड तथा सिवाना का दुर्ग इनकी कीर्ति के आज भी परिचायक हैं। जितनी वीरता उतना ही कलात्मक सौन्दर्य यहा बिखरा हुआ है।

हा इन सबके बीच कलात्मक शिल्प-सौन्दर्य के लिए किराड़ू बहुत उच्चकोटि का स्थान है। यह भी सत्य है कि गजनी जब जब भी जैसलमेर से होता हुआ सिंध

की ओर गया, तब इस किराडू मार्ग से होकर ही गया। उस काल से ही यहां की अलभ्य प्रस्तर शिल्प शैली नष्ट होती रही।

किराडू के पास सिहाणी में साठ सत्तर वर्ष के बुजुर्ग कहते हैं, 'पहले इधर कई मन्दिर थे। मैं स्वयं साथियों के साथ खेलने और पीलू खाने के लिए जब आता तब मैंने ही बचपन में किराडू में दस बारह देखे हैं। अब तो आपको केवल पांच मिलेंगे, वह भी पूर्ण नहीं, भग्नावशेष के रूप में।

किराडू से एक-दो दन्त कथाएं भी जुड़ी हुई हैं जो आपको वहां जाने पर सुनने को मिलेंगी। इस राजधानी के विनाश के लिए कहा जाता है कि किसी साधु के क्रोध श्राप से इसका विध्वंस हुआ। कहते हैं कि यहां एक बड़ा तापसी-पूजा पाठी साधु रहता था। उसके पास एक अतिप्रिय शिष्य था। एक बार साधु को किसी दूसरे स्थान पर जाना पड़ गया। नागरिकों की कृपा विश्वास पर अपने शिष्य को छोड़ गया। शिष्य अस्वस्थ हो गया। पानी भोजन की अवस्था के कारण बेहाल। केवल एक कुम्हार जाति की स्त्री ने उसकी देखभाल की थी। लौट कर साधु ने जब अपने शिष्य को बेहाल देखा, तब बड़ा कुपित हुआ और श्राप दिया कि जहां दया माया और सहयोग का अभाव हो वहां मानव जीवन का क्या अर्थ—इस किराडू नगरी के समस्त निवासी पत्थर के हो जाएं और नगरी का सम्पूर्ण विनाश हो। कुम्हारी से कहा कि चूंकि तेरे हृदय में ममता शेष है इसलिए तू तुरन्त यहां से भाग जा। नगरी की सीमा से एकदम दूर। अगर तूने पीछे मुड़ कर देखा, तो तू भी पत्थर की हो जाएगी। कुम्हारिन बेतहाशा सांस छोड़ भागी। मन में कौतूहल जागा कि क्या सचमुच पूरे किराडू का नाश हो गया है? जन बच्चा क्या पत्थर के हो गए? जैसे ही जिज्ञासा शान्त करने हेतु वह पीछे की ओर देखने को मुड़ी कि तत्काल पत्थर की हो गई। इस किम्वदन्ती की पुष्टि? हां है पुष्टि। खड़ीन स्टेशन और सिहाणी गांव के बीच कुम्हारिन का प्रतीक रूप वह पत्थर आज भी देखा जा सकता है। इस किम्वदन्ती के साथ ही इस पत्थर की पहचान जुड़ी हुई है। किराडू के एक तालाब के पास तब कोई बारात ठहरी हुई होगी आज भी बारात का वह दृश्य पत्थरों के रूप में दिखाई देता है। अब सच क्या है क्या नहीं लेकिन किम्वदन्ती के अनुरूप यह सब सामने है।

यह रहा हातमा गांव और यह रहा मोड़। सड़क की चिकनाहट छोड़ कर कच्चे में उतर पड़े हैं परन्तु रास्ता ककरीला, झाड़ झंकारों से भरा और पथरीला है। एक थोड़ा साफ चौरस स्थान आता है। पास है हरे भरे पेड़ों का झुण्ड। दो चार मनुष्य और पक्षियों के स्वरों के साथ तरती हुई इन्सानी आवाजें। बड़ी राहत मिलती है। दाएं बाद मन्दिरों में उत्कीर्ण अनुपम प्रस्तर शिल्प। दो गार्ड्स पास आ जाते हैं। वातावरण का परिचय देते हैं।

अब कोई डर नहीं जो बहुत जानो कि इस पथरीली पट्टी से गाडी साबुत पहिए ले आई। हम तो फारेस्ट डिपार्टमैण्ट के मुलाजिम हैं वह सामने रही

बिल्डिंग। उधर रहा पुरातत्व सग्रहालय। जी बस यहा पाच मंदिर बचे हैं। अब जसे जसे इनका पता लग रहा है, वैसे वसे इन्हे देखने, खोज करने, लिखने और फोटो खीचने के लिए देशी विदेशी लोग आते हैं। इधर ठहरते हैं। पहले तो इनने लोग नही आ पाते थे। जानकारी वाले अब बढे हैं। किसे कल्पना कि ऐसे विकराल एरिया म ऐसा कमाल का वास्तुशिल्प मिल सकता है?'

नजदीक ही दोनो प्रमुख सरकारी इमारतो के सहारे लम्बे चौडे चबूतरे वाला सीमेण्ट का पक्का कुआ है। लोहे की साकल म बधी बाल्टी। जाने किधर से भेड बकरी चराने वाले ग्रामीण युवक और बडी उम्र वाले लोग वहा आ कर बठ जाते हैं। खीच कर ठण्डा पानी पिलाते हैं। कुछ युवक गम सिके भुट्टे खिलाते हैं। पूरा माहौल आत्मीय सा प्रिय हो उठा है।

चारा ओर काले और भूरे रग की, कही गहरे कत्थई भूरे रग की पहाडिया छाई हुई हैं और इनके बीच म नीचे आसपास हैं रेतीले टीबे टीले। मन्दिरो के खण्डहर ही खण्डहर। इनके पास पेड-ही-पेड। कई के नामो का ज्ञान नही। एक ग्रामीण बताता है कि ये राजस्थानी धरती के रूखडे हैं। फोग, जाल आकडा, खेजडी, आकी कर, थार खेजडा और नीम बरगद आदि क्या साग भाजी? जी राम मालिक यही फली, काचरी बेर, मतीरा ग्वारफली खोखापातरी और कुछ सूखे साग पात। इधर जीना बडा कठिन है, खेती बाडी कहा? भेड बकरी, गाय ऊट पाल लेते हैं, ये ही हमारा धन। हा इधर मारवाडी नस्ल का ऊट दूर दूर तक मशहूर है और जी थरपारकर के पशु और मालानी नस्ल के घोडे जसे और कही नही। हा, वसे थोडी बहुत खेती भी हो जाती है। मूग मोठ, बाजरा, ज्वार, चना गेहू फोड लेते हैं अगर कभी मह पड गया तो। नही तो मालिक की मर्जी पर।'

मैं कुए के पास वाले मंदिर की तरफ मुड जाती हू। अद्वितीय कला का ऐसा मनोहर रूप इसमे उत्कीर्ण है कि एक एक इच पर दृष्टि अटक कर रह जाती है। चारा ओर पेड। कुछ तो इनम इतने पुराने और खोखले जसे अभी गिर पडेंगे। चौडे नुकीले पत्थरा की रौस और चौरस आगन म मन्दिर मण्डप की तरफ फला हुआ। छह सात अनगढ पत्थरा की सीढियां। इधर-उधर प्रहरी से दो वृक्ष। एक सामने झुका हुआ मानो नमन मुद्रा म हो! किसी गुल्म या स्तम्भ से टूटे बडे कलात्मक कई पत्थर बाउण्ड्रीवाल में लगे हुए हैं।

यह अपने समय का कलातीर्थ रहा। बारहवीं शताब्दी मे किरात कूप के नाम स विख्यात रहा। नागर शैली के कलात्मक वभव स मण्डित किरातकूप (किराडू) के ये देव मंदिर परमार सोलकी (गुर्जर) युग की शिल्प समृद्धि से सम्पन्न हैं। इन पर गुप्त युग के साहित्यिक एव कलात्मक अभिप्राय मुख्य भाव म स उत्कीर्ण हैं, इसलिए यह स्थान तीन युगा की कलाधाराओ का ममन्वित तीर्थ है।

यहां बारहवीं शताब्दी ई० के तीन शिला लेख उपलब्ध हैं लेकिन ये इनके निर्माता और निर्माण काल के सम्बन्ध में मौन हैं। मंदिर निर्माण के तुलनात्मक अध्येताओं का विचार है कि ये मंदिर ग्यारहवीं शताब्दी ई० (1020–1025, ए डी) की निर्माणकला के प्रतिरूप हैं। निर्माता एवं निर्माण काल के निश्चित उल्लेख उपलब्ध न होने पर भी यह निश्चित है कि ये मंदिर मरुमण्डल के देव प्रासाद हैं। इतिहासवेत्ताओं के अनुसार अनुमान के तौर पर इन्हें परमार मुंज के भ्रातृ पुत्र दुशालराज ने अथवा उसके वंश के स्थानीय शासकों ने ग्यारहवीं शती में क्रमश इन्हें बनवाया होगा। इन मंदिरों में एक विष्णु मंदिर है और शेष सभी शिव मंदिर हैं। विष्णु मंदिर किरातकूप के स्थापत्य शिल्प का प्रारम्भिक प्रतिरूप और सोमेश्वर मन्दिर—इस कला का चर्मोत्कर्ष सूचक माना जाता है।

वि स 1235 ई० स 1178 में इन्हें तुर्कों का कोपभाजन बनना पड़ा। शहाबुद्दीन मोहम्मद गौरी आदि द्वारा विनष्ट किए गए। अन्य आक्रमणों में भी नष्ट भग्न हुए। तब से अब तक के भग्नावशेषों के ये भव्य कला स्मारक प्राय सात सौ आठ सौ वर्षों का इतिहास अपने हृदय में समेटे हुए कलाजिज्ञासु दर्शकों को अपनी ओर पुकार पुकार कर आकर्षित करते रहते हैं।

मन उदास हो उठता है इतनी अद्भुत कला को बालु कणों में बिखरा हुआ देखकर। कितना सम्पन्न और हराभरा विकासशील राज्य रहा होगा कभी यहां पर ? कला साहित्य एवं संस्कृति की कितनी सुरक्षित स्थली होगी यहां ? प्रत्येक पाषाण पर उस वक्त के योग्य शिल्पियों की छैनी हथौड़े और उंगलियों के स्पर्श का जादू स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। कैसे मनोहारी दृश्य और सजीव सौंदर्य के अंकन रहे होंगे कभी ? आज केवल इन पत्थरों के भीतर रेशे रेशे में टीसता हुआ एक इतिहास है, जिसका एक एक पृष्ठ समय के कठोर आघातों की आंधी से मौन चीत्कार करता हुआ बिलख रहा है कराह रहा है। कहां गए आलीशान गढ़-किले सरोवर बगीचे और राजसी निशान ! मंदिरों के फहराते ध्वज ? जहां तक दृष्टि जाती है पूरी किरातकूप नगरी प्रस्तरों की ढेरियों में घायल हुई पड़ी है।

मण्डप का स्वरूप ग्रहण किए मंदिर में जो भी द्वार, स्तम्भ, कोण आधार और छत के अवशेष बचे हैं उन पर बड़ी लुभावनी नृत्य मुद्राएं और वाद्य संगीत की टोलियां उत्कीर्ण हैं। विष्णु के विभिन्न अवतार—भगवान राम और कृष्ण की लीलाएं—चमत्कार, स्त्री पुरुषों के मनोरंजक रूप रामायण महाभारत पुराण आदि के आख्यान स्वरूप तत्कालीन दैनिक जीवन की अलग अलग झांकियां शिल्पकार की कुशाग्र बुद्धि और पैनी दृष्टि ने कोई भी ऐसा सांस्कृतिक एवं मानवीय पक्ष नहीं छोड़ा है जो इन मंदिरों का शिल्प सौंदर्य न बना हो। हाथियों के घेरा वाले भाग की ओर निकले स्तम्भ धरातल मन को मोह लेते हैं। छतें स्वर्ण आभूषणों सी सज्जित।

शिखर शेष नही है पर तु यज्ञवेदी स्थल है, जहा मूर्ति पहले प्रतिष्ठित होगी, यहा के द्वार और चौखट बहुत सुदर हैं। फूलो लताओ से टकित गुल्म और अद्ध छन शेष है। कही कही अजन्ता जसे शिल्प का मूत रूप साकार है। बहुत ही उच्चतम मूर्ति कला से सयुक्त दीप शिखा स्तम्भ हैं। ऐसी ही अवर्णनीय पास मे शोभित हैं आधार शिलाए नत्य भगिमाओ म यक्ष ग धव अप्सराए परिया और कि नरिया। अपने लास्यमय हाव-भावो के साथ जीव त रूप मे मानव मन को बार बार जसे टहोके डाल रही हैं। इस मदिर के पीछे दूर दूर तक ऐसे सज्जित खण्डहर छितराए पडे हैं। उधर सूय मदिर बुद्धि को भ्रमित कर डालता है। अज ता एलोरा की साकार अनुभूतिया को ताजा करने वाला, मुख्य द्वार के दोनो ओर शिलालेख खुदे हैं।

पाच देवालयो म से सोमेश्वर म दिर कला की दृष्टि से बेजोड है। बहुत बडा अनेक उत्कृष्ट कलाकृतियो से सजा हुआ है। प्रवेश-भाग एकदम गोलाकार है मध्य म है प्रागण। पीछे है सभागार। बडा विलक्षण शिल्प है यहा का। खण्डहरो के बीच नगीने सा जडा हुआ।

इस मदिर का प्रस्तर कला को प्रस्तुत करने मे बहुत बडा महत्व है। खुदाई का बडा बारीक और सुदर तराश वाला काम है। तीन भागा म है यह देव स्थान मूर्ति स्थापना वाला गभ गृह सभा मण्डप और दशक भक्त दीर्घा आपाद मस्तक यहा पर प्रस्तर शली की अनोखी कलाकारी तराशी हुई है। परिक्रमा चक्र दखते ही बनता है।

मदिर के बाहरी दीवार आधारो पर प्रस्तर-मूर्तियो के अलकरण की जम बाढ है। नागपाश से समुद्र म थन, रथ अथवा अश्वारूढ होकर युद्ध एव शिकार दृश्य भगवान राम के शौय प्रदशन स्वण मग का पीछा करत राजीवलोचन सम कनार बद्ध विघ्ननाशक गणेश हाथी के हौदे पर बठ कर युद्ध सचालन, घाडो पर आरूढ सवारी प्रदशन सपत्नीक कुबेर एव गणेश ग्रामीण दशक, रूप गविता का दपण दशन, नृत्य सगीत वाद्य पर तरगित मादमयी मुद्राए शेष शया पर आसीन विष्णु कृष्ण लीलाए, पूतना वध गावधन धारण बलो एव हाथियो की लडाई, कस वध, राम रावण युद्ध सुग्रीव हनुमान की राम भक्ति, अशोक वाटिका मे शोकातुर सीता, भीष्म पितामह की शर शया तथा महाभारत के प्रमुख युद्ध दृश्य आदि का बहुत ही सुदर प्रदशन इन मूर्तियो के माध्यम से किया गया है।

पास म ही बाहरी आधारा पर सेना सचालन युद्ध कौशल बिगुल नगाडे तुरही के धाप फलाते योद्धा गण। प्रत्येक चित्रण टकण म युद्ध क वीरोचित भाव और आत्रमण एव लडाइयो की सजीवता प्रतिध्वनित होती हुई प्रतीत होता है। ऐसा मालूम होता है कि इन सभी मन्दिरो को देख कर कि जसे वद, पुराण, भक्ति सौ दय नारी पुरुष के अनुरागा सम्बधो, मातृत्व, पराक्रम वीरोचित गव राजनीति इतिहास, दनिक व्यवहार स्वास्थ्य देव-पूजन नारिया द्वारा मागलिक क्रियाओ

द्वारा गृह-कल्याण के कायकलाप, मनोरंजन, शिकार आदि की शिक्षा पत्थरो की इन खुली पुस्तका द्वारा दी जाती होगी। युद्ध विद्या, यौन शिक्षा भक्ति दीक्षा और रोजमर्रा के व्यवहारो सम्बन्धो का परिपाक भला इन खुले पृष्ठो पर जैसी जीवन्त शली मे फैला हुआ है, वह और कहा मिलेगा? भगवान के मन्दिर भी और मानवीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के शिक्षा स्थल भी। धन्य है उस काल के पाषाण-चितरे और धन्य हैं स्वप्नदर्शी उस समय के शासक सब कुछ अतुलनात्मक, अचम्भित करने वाला।

इसी मन्दिर के पास खण्डित अवस्था मे एक और शिव मन्दिर है लेकिन जितना भी है वह उच्चतम प्रस्तर कला का प्रतीक है। इसमे अधिकाश मूर्तिया रामायण के सन्दर्भ मे हैं—शक्ति आघात से मूछित लक्ष्मण, शोकाकुल राम तथा वानर सेना हनुमानजी द्वारा सजीवनी लाने वाला दृश्य। कुछ महाभारत के कुरुक्षेत्र युद्ध के दृश्य भी हैं। सभी कलात्मक दृष्टि से अद्वितीय।

दूसरी ओर सामने ब्रह्मा, विष्णु और शिव के खड खड हुए मन्दिर हैं। जितने आकार प्रकार साबुत खडे हैं, वे भी इतने जजरित हो रहे हैं कि कब इनके ऊपर टिके चर्मोत्कृष्ट कला को सज्ञापित करने वाले गुम्बद गिर पडें, नही कहा जा सकता। निचले आधारा पर देव किन्नरिया की अप्रतिम छविया हैं। नारी सौन्दय की मधुर आतुर भगिमाए हैं। प्रत्यक देह-यष्टि की बडी कोमल कमनीय छटा है। प्रस्तर मूर्तियो से गुम्बद ऐसे अलकृत हैं मानो तरह तरह के नगो से गहनो को जडा गया हो? मन्दिर के आसपास भग्न शिलालेख, मूर्तिया, आधार स्तम्भ और अनक अलभ्य पाषाण बिखरे हुए हैं।

नारी पुरुषो के शृगार, आभूषण और वेशभूषा के निराले रूप इन मूर्तियो म गु थे हुए हैं। चौड-भारी स्तम्भो पर फूलो, बेलो, पत्तिया कलियो की खुदाई, बारीकी तराश और सजीवता देख कर मन आश्चयचकित होकर रह जाता है। सच तो यह लगने लगता है कि समय के क्रूर थपेडे और आक्रमणकारियो के वज्र प्रहार भी इन मूर्तियो की कमनीयता को नष्ट करने मे कामयाब नही रहे। क्योकि प्रत्येक भग्न टुकडा अपने आप म उत्कृष्ट पाषाण कला का परिचायक है। बुद्धि और कल्पना पगु होकर रह जाती है इन मन्दिरो का ऐसा अभिनव सौन्दर्य देखकर। जीण शीण अवस्था पर पहुचे हुए इन पाचो देवालयो को देखने मे न समय का होश रह सकता है, न मन को चाहना का अन्त। कला की समस्त बारीकियो का अध्ययन कराने के लिए ये शेष मन्दिर ही अपने आप मे पूण सक्षम हैं।

एक फारेस्ट कमचारी बताते हैं, 'अब यह भी उजडता जा रहा लिस्तानी टुकडा। जाल खेजडी बबूल और बेरी भूख का पाटती रहती हरे भरे रोहिडा के पड आए दिन सरकारी ठेको पर और ेरी चो हैं। क्योकि इसकी खूबसूरत और बडी मुलायम लकडी होनी है। फर्नीचर इसी से बनता है। इधर ये दूसरे पेड हैं, तो कुछ तो

खाने मे ग्रा जाते हैं ग्रौर फिर इधर की, मतलब जसलमेर, बाडमेर ग्रौर बीकानेर की (पचकुटा साग) सूखी भाजी के पैकिट्स दूर दूर तक जाते हैं। मशहूर है यह पचकुटा साग। यही जी, थोर कूमट सागरी, कर ग्रौर सूखे लेसुए। साबुत मिर्चें ग्रादि सुखा कर मिला कर भाजी बनाना। इधर की काकरेज ग्रौर थरपारकर नस्ल की गाए इतनी मशहूर हैं कि हिन्दुस्तान की हरेक डेयरी म ये जरूर मिलेंगी।

शाम की धु धली रवानगी मे सभी मन्दिर उदास खडे हैं। लगता है कि जैसे पुकार रहे हो ! रोक रहे हो ! ग्रजीब माहाविष्ट सा वातावरण हो उठा है।

र धोरा र रूखडा—
रै मिन्दर मन भाय
रणबाका मरुधर जगत
क्यिा भुलायो जाय ।

केशोराय पाटन

पूरा का पूरा कोटा बूंदी क्षेत्र देवी देवताओ के प्रति आस्था और विश्वास की भावनाओ से बुना हुआ प्रतीत होता है। यही क्षेत्र क्यो, बल्कि सारा हाड़ौती का इलाका ही अपनी धार्मिक सम्पदा से भरा हुआ है। ठौर ठौर पर विशाल मन्दिर प्राचीन वास्तुकला को सहेजे उत्कृष्ट प्रस्तर मूर्तियो से अलकृत मन्दिरो के भग्नावशेष देवी देवताओ के प्रतिष्ठान, चौरे, चबूतरे छतरिया, थानके और ढूमले आदि देखने को मिलते हैं। सभी मे लोकमानस की धार्मिक परम्पराए जुडी हुई हैं। प्रत्येक देव स्थल स्थापत्य शिल्प का अनुपम उदाहरण देता हुआ दिखाई पड़ता है। इनमे राम, कृष्ण और शिव के मन्दिरो की प्रतिष्ठा प्रचुर मात्रा मे मिलती है। इनके अतिरिक्त विष्णु, सूर्य वराह, गणेश, नृसिंह, हनुमान आदि देवताओ की पूजा भी हाड़ौती मे प्रमुख रूप से होती हैं। इन देवताओ के मन्दिरो का भी अतुल भण्डार इस इलाके के पास है। साथ ही लोक देवताओ के थान तिवारे इधर खूब हैं जसे, बालाजी और भैरूजी। हाड़ौती क्षेत्र म इनकी तथा माता एव कुलदेवी की पूजा प्रचलन लगभग घर घर मे होती है। धास भैरू, काल भैरू, खुलखुल्या भैरू और माइता नाहरया तथा दीवट के भैरूजी को नगर एव गाव के लोग बडी श्रद्धा और भक्ति से पूजते हैं। इसी प्रकार रक्तबीजा सोवच, पीताम्बरा, किसनाई,'बीजासण, रानादेई, बडदेई और डेरूमाता आदि देविया को बडी आदर भावना से पूजा जाता है। कुछ ऐतिहासिक महापुरुषो को इनकी वीरता शक्ति, भक्ति, त्याग-तपस्या और दानशीलता के कारण देवता रूप मे पूजा जाता है जसे तेजाजी, देवनारायणजी, हीरामनजी, पाबूजी, लालाजी, पीपाजी, कबीरजी तथा रामदेवजी आदि। इस तरह से सम्पूर्ण हाड़ौती क्षेत्र का वातावरण— *ऊचा ऊचा मदर लाल धजा, परभूई किरपा मदर की देखो छटा* " स ओत प्रोत है।

ऐसे ही धार्मिक-आस्था जगाते हुए मन्दिरो की छटा देखती हुई मैं कोटा मे जन-सम्पर्क विभाग व सूचना केन्द्र पर आती हूं। यहां पर मैं पी धार औ साहब से मिलती हू। वह हमको हाड़ौती की चित्रकला प्रदर्शनी कक्ष मे ले जाते हैं। भव्य चित्रों से गलरीज तथा कक्ष सज्जित है। पूरी दीवार का आधा भाग घेरे हुए एक चित्र बरबस दृष्टि को बार बार खींच रहा है। नील जल में प्रतिबिम्बित अनूठा शिल्प आकार। क्या यह कोई गढ किला है? पी धार औ साहब बताते हैं कि 'नही किला गढ नहीं, यह तो इधर का बहुचर्चित मन्दिर है—केशोरायपाटन। स्थापत्य कला का बेजोड नमूना। केशव (कृष्ण) का पटण। इसी नाम पर इस

स्थान नगर का नाम भी केशोराय पाटन हो गया है। बहुत प्राचीनकाल की यह वसियत इस इलाके को मिली है। बस और नाव दोनो के द्वारा यहा पहुचा जा सकता है। जी हा बडी भव्य विशाल है केशव की यह भक्ति स्थली। बस दूसरी सुबह को हमारी गाडी पी आर ओ साहब को साथ लेकर केशोराय पाटन की ओर दौड चली है।

रास्ते मे रेत तथा हरियाली आख मिचौनी खेलती साथ साथ चल रही हैं। हवा मे सुहावनी ठण्डी सी खुनकी है, क्योंकि चम्बल की शीतलता सारे वायुमण्डल को पुलकित करती रहती है। कई छोटे जोटे गाव, खेत और चरागाह हरापन भेंट रहे हैं। हमने नाव वाला रास्ता चुना है। थोडी देर बाद नदी तट के भीगे मुरमुरे तट पर हमारी गाडी रुक जाती है। कई छप्पर झौंपे, उनमे बिछे तख्त, स्टूल बैंचे, फूल और बताशे। इन्ही मे उबल रही है चाय की मादक गन्ध। दूसरी ओर हैं पीने के पानी से भरे मटके और टब।

बहुत ही सु दर वातावरण इधर उधर है। गहरी नीली चम्बल का दूर से आता बलखाता जल, चौडा पाट कण्ठ हार सी लहराती गोलाकार चम्बल ने पलको पर शीतल रिमझिम सी अनुभूति बाध दी है। आखें नदी का नसर्गिक सौंदय देखते हुए मुग्ध हो उठी हैं। रग बिरगी पोशाको मे सज्जित स्त्रिया बालिकाए पुरुष। इधर उधर कई झुण्ड, कई आते जाते समूह। खूब स्वच्छ चमकीली धूप पूरे नील-जल पर बिछल कर उसे चन्दन जैसा स्वर्णिम बना रही है जसे नीलवर्णी कृष्ण के साथ गौरवर्णी राधा जल लहरियो मे तरगित हो। घाटो पर धोबी कपडे पछाड रहे है। इन्द्रधनुषी रगो मे लिपटे बालू पर ढेरो कपडे सूख रहे है। हवा के ठण्डे झौंके बडे भले लग रहे हैं। एकदम सामने है किसी बहुत बडे मजबूत किले की शक्ल मे सीधा खडा गर्वित केशव मन्दिर। कगूरोदार परकोटा सीढिया और आकाश तक तना विशाल शिखर। जल म बिम्बायित केशोराय का यह भव्य मन्दिर। नावो के चक्कर लग रहे हैं। जब भरी हुई नाव इस तट से चलती है, तब खाली नाव आ कर लगर डाल देती है। सवारिया इन्तजार म रहती हैं उधर के तट पर भरी नाव म थर गति से प्रस्थान कर उठती है। खाली होते ही नाव उस घाट की सवारिया ल कर लौट पडती है। आरोह अवरोह की यह नदी नाव सगीत-ताल सुबह से ले कर सध्या तक अनवरत लहरो पर गूजती रहती है और शात चम्बल के किनारे खडा है भव्य केशोराय पाटन ट्रको की एक लम्बी कतार देख कर विस्मय होता है। पी आर ओ श्री रामेश्वर जोशी बताते हैं कि प्रतिदिन दो सौ ढाइ सौ ट्रको पर चम्बल की रेती बजरी लाद कर बाहर भेजी जाती है। बडे पमाने पर यह लदान चलता रहता है। खाली नाव जसे ही ठाव मे आ कर बधी है कि हम अपना स्थान लेने के लिए उस ओर बढते हैं लकडी की खूब बडी बडी पुराने फशन की नावें हैं। खूब फला बीच का हिस्सा। जलखाई फूली गधियाती भीगी लकडी भारी बडी पतवारें,

नीचे बिछे चौडे चौडे पट्टे और इनके बीच चप्पुओ से झरा पानी । जल्दी ही पूरी नाव भर जाती है । किराया भाडा तत्काल इकट्ठा कर पतवार चम्बल मे डाल दिए हैं—छपाक् छपाक् । नाव का हिलना डुलना पता नही लगता । चल भी रही है या नही, ऐसी धीमी चाल मे जल फट रहा है । यहा चम्बल जसे एकदम शान्त ठहरी सी बठी है । पानी पर कही कहीं हरी काई है और कहीं ढेर ढेर फली जल वनस्पति । उलझी लिपटी घास । जल के बीच पहुचते ही दूर से देखे गए केशोराय पाटन की छवि अधिक स्पष्ट सुदर और चित्ताकर्षक दिखाई देने लगती है ।

तट पर उतरते ही बहुत विस्तृत फला हुआ घाट मैदान । यहा भी कुछ छप्पर टीन ढली झोपडिया, प्याऊ और चायघर । ट्राजिस्टर्स बज रहे हैं, भजन चल रहे हैं एक एक बालिश्त पर पत्थर की पक्की समाधिया, शिव चौरे बने हुए हैं । जहा तक नजर जाए, वहा तक चम्बल घाट के किनारे किनारे ये समाधिया और शिवलिंग—लाल पत्थर पर काले शिवलिंग और सामने गढ किले की तरह गोल-कगूरो के घुमाव मेहराब के लिए मन्दिर का लम्बा, ऊचा और मजबूत परकोटा । परकोटे की ऊपरी गोलाकार सतह तक काली-हरी रगत पुती हुई है और इसके ऊपर हैं लाल-गुलाबी कगूरे मेहराबें । यह बेमेल रग कैसा है ? बताया गया है कि यह शान्त ठहरी सी नदी जब झु झला कर बिफरती है तब इसका पानी परकोटे की ऊपरी सतह तक चढ आता है । सारा मैदान चौरे समाधिया सीढिया चबूतरे पानी के सैलाब मे डूब जाते हैं । परकोटे तक जब चम्बल की विकराल लहरें थपडे मारती हैं तब यह मन्दिर ऐसा लगता है, जसे पालथी मारे कोई तपस्वी नेत्र मू दे पूजा सध्या कर रहा हो !

बडे मन्दिर के अतिरिक्त दृष्टि पार तक मन्दिर ही मन्दिर फले हुए हैं । छोटे बडे अनेक राजसी शिखर गोल गुम्बद, बीच बीच मे सघन हरियाली फूला लताओ से वेष्टित वृक्षो के समूह और पक्षियो के कू जते गू जते स्वर सबमे अधिक मन को बाधने वाला दृश्य है, मीठे सुनहरे स्वप्न सी थरथराती जल मे थिरकती इस पूरे परिवेश की परछाई ।

जोशीजी बताते हैं कि, "यह स्थान बू दी जिले मे आता है । कोटा के बहुत नजदीक और चम्बल के उत्तरी तट पर है यह पावन मन्दिर । पुख्ता पत्थरो की इतनी ऊची सपील और गढ किले जसा विशाल परकोटा शायद इसीलिए बनाया गया होगा, ताकि मुख्य मन्दिर तथा अन्य मन्दिरो—देव प्रतिमाओ को चम्बल के प्रचण्ड प्रवाह से सुरक्षित रखा जा सके । इसी स्थान पर मृत व्यक्ति की लोग अस्थिया विसर्जित करते हैं । लोक विश्वास है कि इस स्थान का चम्बल जल गगा जैसा पवित्र है । कारण ? कारण यही है बडा विचित्र सा कि केवल मन्दिर के विराट विस्तार को घेरने वाला यही नदी का टुकडा पूरब से पश्चिम की ओर बहता है अन्यथा ? अन्यथा तो पूरी नदी इससे उल्टी मतलब दक्षिण से उत्तर की ओर

वहती है। हा, अनोखी प्रभु लीला है यह, इसीलिए गगा नदी सा पवित्र यह तीथ है। ये समाधिया देख ही रही हैं आप सभी बडे बडे प्रतिष्ठित लोगों की हैं। कुछ प्राचीन युग की हैं—इनमे महात्मा, राजा सामत, श्रेष्ठि आदि सभी समाधिस्थ हैं। चू कि प्राचीन काल मे इधर शक्ति उपासना बडी प्रवल रहीं है, आज भी है, तभी तो सभी समाधियो थानो पर शिवलिंग और नादिया बने हुए हैं। यही उल्टी बहती नदी मिलेगी, जो दक्षिण (विन्ध्याचल) से निकल कर उत्तर (यमुना) मे बहती है।"

इक्यानवें चौडी पतली सीढिया चढ कर हम ऊपर वाले चबूतरे पर आते है। रग बिरगी ध्वजाए उड रही हैं। श्वेत हरे रग के बरामदे तिदरिया दोनो ओर हैं। दाई ओर एक गोल छोटा चबूतरा है। पास है जटा जूट फैलाए बहुत पुराना बरगद। पीपल नीम हवा मे लहरा रहे हैं। मुड कर फिर सीढिया और अब आता है मन्दिर का विशाल प्रागण और इस पर बहुमूल्य रत्न-सा जडित है भारतीय वास्तु एव मूर्तिकला का अनूठा उदाहरण केशव मन्दिर। हरेक कोने मे छोटे छोटे तिवारे द्वार और इनमे प्रतिष्ठित मूर्तिया, हवा मे फहराती पताकाए दीप स्तम्भ और इसके ऊपरी सिरे पर लगी घूपघडी। मन्दिर का शिल्प बडा ही उच्चकोटि का है। पत्थर मे खुदाई का बडा बारीक और चमत्कारी काम है। हरेक मूर्ति, स्तम्भ कमानी गोल, कगूरा कला के सौन्दय से मण्डित है। प्रस्तर कला का जीता जागता उदाहरण है यह मन्दिर। कितने समृद्ध राजाओ का यहा वैभव रहा होगा जिनके द्वारा निर्मित मन्दिरो का ऐसा अपूव ससार यहा व्याप्त हुआ। पत्थर का प्रत्येक टुकडा सुन्दर मूर्तियो मे ढाला तराशा हुआ, मन्दिर के कलात्मक द्वार। भारी किवाडें, मूर्ति खचित स्तम्भ शिखर मण्डप, भीतर का गोल गुम्बज, देवी देवताओ की अलकृत छविया और बीच मे केशव की अलभ्य मूर्ति—बहुत ही सुन्दर और दर्शनीय स्वरूप। मन्दिर के तल से ले कर ऊपरी शिखर तक मूर्तियो की शानदार नक्काशी पत्थरो मे दीप्त है। बारीक जाली का काम इनको और अधिक सौन्दय प्रदान करता है। यक्ष किन्नर, देवी देवता, गन्धव नृत्य युगल और अप्सराओ की मूर्तिया देखते ही बनती हैं।

चारों ओर मन्दिरो के ढेरा शिखर गुम्बद और तिदरिया पिछवाडे हरियाली के बीच जन मन्दिरो की भव्यता बिखरी है। पीपल केले और बड बरगद की छतनारी छाया भक्तो दशको की सारी दैहिक मानसिक थकान को दूर कर रही है। हर कोने पर कोई न कोई मूर्ति। केशव मन्दिर की छतरिया खम्भे और झुकी मुडी मेहराबें बहुत हृदयग्राही हैं। दाई ओर के बरामदे मे बडे बडे नगाडे रखे हैं। बीच मे एक और नगाडा। पुजारीजी बताते हैं कि दिन मे चार मतबा यह बजता है। पास ही जालीदार घेरे मे गणेशजी की सुन्दर मूर्ति है। गरुण स्तम्भ पर गरुण मूर्ति है। यह मूर्ति कला का सुन्दर नमूना है।

केशव के मुख्य मंदिर की सीढ़िया संगमरमर की है। तीन खण्डो वाला नुकीली मेहराबो से सज्जित है यह खूबसूरत देवालय। बीच मे है जालीदार झरोखे गाखें। पीतल का बहुत बडा घण्टा। पुजारीजी कहते हैं कि, 'पहले के जमाने मे घूपघडी देख कर यह बजाया जाता था। पूरे शहर के लिए यही समय-सूचक था। नही जी पहले घण्टे भर का प्रश्न नही था। धूपघडी समझीं आप? एक डबल भगोना लेते उसमे पाच सात किलो पानी डाल देते। एक ताम्बे की पैदी का कटोरा लेते। इसमे बाल बराबर नन्हा सूराख करते। धीरे धीरे पानी रिसता रहता। जब कटोरा डूब जाता, तब समझ लेते कि आधा घण्टा हो गया। बस हर आध घण्टे बाद घण्टा बजता रहता था। हा, कटोरा इतना बडा ही लेते थे, जिसमे आधा किलो पानी आ जाए।"

हम पुजारीजी के साथ मन्दिर की परिक्रमा कर रहे हैं। उनके द्वारा वर्णन भी चल रहा है— 'अब जी, आज का है क्या यह मन्दिर? लगभग सात सौ आठ सौ साल पुराना तो मान लें। कार्तिक की पूनम का यहा बडा भारी मेला लगता है और कृष्ण जन्म पर जबदस्त भक्तो की भीड लगती है। दोनो वक्त रोज पूजा दर्शन पर लोगो का आना जाना रहता है। इन दिनो और मेले पर बडी रौनक। दस पन्द्रह दिनो तक भक्ति भावना का सागर उमडता है। स्थानीय लोगो के अतिरिक्त बाहर से बहुत लोग आते हैं। देशी विदेशी सैलानियो, छायाकारो और धार्मिक आस्था रखने वालो का आना जाना प्रतिदिन लगा रहता है। यहा के बाजार तो सजते ही है, लेकिन जन्माष्टमी पर और मेले पर बाहर की दुकानें भी अधिक मात्रा मे लगती है। जी हा, कृष्ण जन्म पर बडा भारी पर्व उत्सव। रात भर दिन भर भजन कीर्तन चलता है। हा, यहा की चम्बल का गगा नदी जसा महत्व दिया जाता है। मृत व्यक्तियो की अस्थिया प्रवाहित की जाती हैं। मन्दिरो मे श्रद्धा व हैसियत के अनुसार दान पुण्य किया जाता है। सेठ साहूकारो की छतरिया बनी हुई हैं। स्मृति चबूतरे बने हुए हैं। क्या शिवलिंग इन पर क्यो? वाह जी! शिव-देवता की पूजा सबसे सुलभ जो ठहरी। सबसे भोला ठहरा देवता। राख धूल, साप धतूरा। बाकी देवताओ की रही सज्जा आरती और शृंगार पोशाक बहुत ऊंची रहती है।

यह सामने का नीचे का आसपास का और चम्बल के दोनो घाटो के किनारे सभी कृष्ण दर्शन के लिए भर जाते हैं। मेले मे लगभग पांच सौ चार सौ दुकानें लगती हैं। कोटा बूंदी, झालावाड जाने कहा कहा से। हा जो मगला आरती शृंगार आरती, भोग सध्या और शयन आरती प्रतिदिन नियम क्रम से होती हैं। कई पुजारी हैं बहुत से सेवक हैं। हा, इस केशव मन्दिर के पीछे तीन प्रसिद्ध जैन मंदिर हैं और सकडो दूसरे मंदिर हैं।"

मंदिर के विस्तृत चबूतरे के आखिरी कोना से सीढिया नगर के बाजारो यहा की गलियो रास्तो और घरों मे उतर जाती हैं। सुनते हैं कि सत्रहवी या इसमे

भी पहले स्वय यह मूर्ति प्रकट हुई। बूंदी नरेश ने इसे प्रतिष्ठापित किया। नगर बसा ग्रौर इसी केशव पट्टण नाम पर यह स्थान केशवराय पाटण हुग्रा।

पूजा ग्रारती से निवृत्त हो कर दूसरे पुजारीजी ग्रा कर बातचीत मे शामिल हो जात हैं।

'यहा के पच्चीस महन्त हैं। प्रत्येक के ग्रपने ग्रादमी हैं यही पुजारी लोग बारी बारी से यहा केशव चरणो की पूजा सेवा करते ह। इतनी सीढियां, देवन पूजास्थल छतरिया वे लोग बनवाते रहते हैं जिनकी मानता पूरी होती है जिन पर केशव की कृपा रहती है।"

मन्दिर की दीवारो पर हाथिया की बडी सुडौल सुन्दर मूर्तिया खुदी हुई हैं। चार भुजा मूर्ति ग्रौर गगा का मन्दिर भी बहुत सुन्दर हैं।

बूंदी के कपूरचन्द्रजी केशव मन्दिर की विस्तृत जानकारी देते हुए हमको स्वादिष्ट प्रसाद खिलाते है। 'बडा प्राचीन पौराणिक तीथ स्थल रहा है यह स्थान। लाक विश्रुत ग्राघार पर ग्रष्ट पत्तनो (ग्राठ नगरो मे से यह एक केशव की पत्तन थी। काला तर मे यही केशोराय पाटन हुई। ग्रनेक प्रसिद्ध तीर्थों की यह केन्द्र भूमि रही।कहा सुना तो यह भी जाता है कि पुरानी वैभवशाली नगरी ग्राज भी भूमि मे दबी हुई है। उत्खनन होने पर प्राचीन इतिहास की न जाने कितनी ग्रछूती कडिया सामने पत दर पत खुल पडेंगी। स्कन्द पुराण, पद्म पुराण ग्रौर वायु पुराण मे इसका वणन मिलता है। हा, नदी तट से उनमठ ग्रौर मन्दिर परिधि द्वार तक बीस ग्रौर फिर ऊपर ग्राधार द्वार तक बीस सीढिया हैं। तब यह केशव राय की ग्रद्भुद भव्य मूर्ति विराजमान है ग्रौर पृष्ठ भाग में है चार भुजाजी की ग्रनुपम मूर्ति।

'कथा प्रचलित है कि प्रजा वत्सल नरेश नदी मे स्नान कर रहे थे कि उनस कुछ मूर्तियो का स्पश हुग्रा। फिर तो उन्होने जल को उथल पुथल करक मूर्तियो को खाज खोज कर निकलवाया ग्रौर उच्चकोटि की शिल्प मे खचित मन्दिर म सभी को प्रतिष्ठित कराया। बीच मे विराजे केशवराय। विस्तृत चौक मे गणेश, शेषनाग ग्रष्टभुजा दुगा गौरी शिव राम हनुमान ग्रौर गगा के मन्दिरा की प्रतिष्ठापना कराई। इस कलात्मक मन्दिर का निर्माण बूंदी नरेश छत्रसालजी द्वारा हुग्रा बताते हैं।

केशवराय की यह पूजित पवित्र भूमि कई कारणा से प्रसिद्ध है। कहते हैं कि महर्षि परशुराम ने पृथ्वी से इक्कीस बार क्षत्रियो का विनाश किया इसके बाद यहीं बठ कर बडी कठोर तपस्या की थी। पाण्डवो ने भी बनवास काल मे कुछ समय यहा निवास किया था। इसीलिए केशोराय पाटन म पाण्डवो की यज्ञ शाला, गुफाए ग्रौर इनके द्वारा स्थापित पच शिवलिंग मिलते है। जम्बु मार्गेश्वर हनुमान व माता ग्रजनी के तप, बस्ती के छोर पर एक विशाल जन मन्दिर भी बहुत प्राचीन काल की स्मृतिया ग्रपने मे समाए हुए मिलते हैं।

हाडोती क्षेत्र का यह केशवराय का पाटन एक गर्व है, धार्मिक भावना का अटूट श्वास बिन्दु है। पुण्य तीर्थ है। कृष्ण जन्म पर खूब धार्मिक गायन भजन और लीलाओं की चन्दन अगरगन्ध से यह स्थान महमह महकता है। फिर लगता है हाडोती क्षेत्र का प्रसिद्ध धार्मिक कार्तिक मेला। केशव कृपा से इधर सभी का होता है शुभ मंगल और इस मन्दिर के सामने वाली नदी से स्नान करने से मोक्ष मिलता है।

'हां, कुछ ऐतिहासिक खोजों के तत्व भी इस केशवराय पट्टन के विषय में आए हैं। कहते हैं कि प्राचीन काल में प्राचीन नगरी के नाम से यह बहुत पवित्र तीर्थ स्थल माना जाता था। इसे आश्रम पट्टन नाम से भी ख्याति मिली हुई थी। प्राचीन राजवंश यहां आ कर महायज्ञ किया करते थे। यहां मृत्यु प्राप्त होना अत्यधिक पुण्यदायिनी माना जाता था। केशोराय पाटन के तट से बहने वाली चम्बल नदी ही बूंदी कोटा जिले की विभाजन-रेखा है।' हाडा नरेश राव छत्रसाल द्वारा निर्मित इस भव्य कलात्मक मन्दिर की वास्तु कला से दृष्टि हटने का नाम नहीं ले रही है।

केशव मन्दिर की दो आरतियां देख कर प्रसाद वरदान ले कर और अन्य मन्दिरों की कलापूर्ण मूर्तियों के सौन्दर्य का अवलोकन करते हुए सुबह से सन्ध्या हो जाती है। लौटते समय सूर्य की अस्त होती हुई किरणों की सिन्दूरी सुन्दरता में चम्बल और भी अधिक मनोहारी लग रही है और केशव मन्दिर का पूरा परिवेश और भी अधिक मुग्ध करने वाला प्रतीत हो रहा है। शाम की सांवली परछाईं में नाव पर बैठ कर लौटना अपने आप में एक अविस्मरणीय अनुभव लग रहा है। मन विस्मित है कि रेत के इस सागर में ऐसे शिल्प सौन्दर्य के जाने कितने अलभ्य मोती बिखरे पड़े हैं।

दीप पर्व : माडणो

दीपावली का शुभ पर्व ज्योति का प्रचण्ड स्रोत प्रकाश धारा मे प्रादोलित भारतीय आर्य संस्कृति की पावन आत्मा प्राचीन श्रुतियो स्मृतियो से ही अनवरत जगमगाती आलोक की यह प्रखर शक्ति दीपो का आध्यात्मिक जीवन ग्रथ शिव, सत्य, सुन्दर का महान सगम उपनिषद् का प्रेरणास्पद उद्घोष हमे असत्य से सत्य की ओर ले चलो अधकार से प्रकाश की ओर ले चलो मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो "

कमलासना लक्ष्मी का पूजन आधाशक्ति का स्वागत सर्वोच्च चेतना, शाति और पवित्रता का सर्वव्यापी यह त्योहार ! एक तरफ पटाखे चर्खी, सुर्री और फुलझडियो के ज्योतिनिर्झर तो दूसरी ओर रग बिरगे कदीलों के फानूस, गमलो बेला मे अगडाते फूल दीवारो पर तसवीरो की नयी ताजगी, मोमबत्तियो की महफिलें और दीपको की आख मिचौनी, लिपे पुते घरो के नये प्रदाज वार्निश के उबटन से महकती किवाड खिडकिया, खेल खिलौने मिठाइयो की मौसमी गध से बालक, वृद्ध, तरुण सभी के मन गरमाये हुए।

शहरो से लेकर गावो तक महीनो पहले से इस पर्व के स्वागत की जसे एक होड सी लग जाती है। घर द्वार, आगन का सौदर्य अधिक-से अधिक उभरे इसके लिए उमग भरी कलात्मक प्रतियोगिताएँ चल पडती हैं। सुख सपन्नता की देवी लक्ष्मी उसका आगमन, फिर स्वागत समारोह मे सास की हरेक लय समर्पित क्यो न हो ?

हमारे 'धरती धोरा री ' राजस्थान की दीपावली की तो बात ही न्यारी है। जाने कितनी वीरता भरी किंवदतियो और न जाने कितने शृगारिक मधुर आख्यान इसके साथ जुडे हुए हैं। रगीला राजस्थान, शृगार और वीरता से सज्जित यह मरुभूमि, जनमानस की रग रग मे उल्लास की सरसराहट प्रत्येक पर्व कला कथाओ मे डूबा हुआ। इस इद्रधनुषी बालू पर अगर हर कदम पर हल्दीघाटी है तो स्थान स्थान पर देलवाडा और रणकपुर जसी कलात्मक झाकिया भी हैं। असख्य गौरव मडित दीप हैं अनेक जौहर की प्रज्वलित बातिया हैं, जो यहा की संस्कृति और तैलयुक्त शक्ति से आलोकित होती हुई युगो से मीरा के गीतो को चद्रबरदाई के रासो को और बिहारी की सतसई को कठ कठ मे उतारती आ रही हैं जहा तन-मन का शृगार तलवारो और रणवासो मे होता रहा हो वहा के पर्वों के चटकील पन का अपना अलग ही महत्त्व है।

यहा द्वार चबूतरे और आगन माडणे की प्रथा बडी ही कलात्मक है। द्वार-द्वार कई दिनो पहले से नारी वर्ग के रगोनरेशमी मेले जुड उठते हैं। कही अल्पना के चित्ताकर्षक बेल बूटे तो कही भर भर आगन—बरामदे रगोली के गोल तिकोन,

अष्टाचक्र और चोखुटे नमूने मन मोह लेते हैं। कही कही बडे बडे रगीन अथवा चिकने श्वेत कागजो पर लक्ष्मी का चित्र अदभुत सज्जा से रगो और तूलिका का बेजोड काय प्रस्तुत करता है। देखने वाला ठगा सा रह जाता है।

सलमा सितारे, किमखो गोटा गोखरू जडे रेशमी परिधान सिंगारपट्टी के बीच हीरे, मोती, माएक, पन्ना जडे बोरले बिंदिया छूते टीके जडाऊ अनार, कु डल, भुमके सतलडे हार, चूडे कगन, हथफूल, गू ठिया साटन की घुनटो पर भूलती करधनियां, निखरी पायलो मे मुस्कराती महावर मेहदी रची सौभाग्वती हथेलिया, हिना इत्र की मादक सुगध कोरे कोरे भीगे सकोरे प्याले, उनमे घुले लिपटे रग, ब्रश कहीं कलई, खडिया और गेरू चुहलबाजियो के क्षण, देखने दिखाने की प्रदशनी, चर्चाओ के बाजार काजल जुडी पलको मे अ गडाती लोककला, अपनी ही कृति पर गर्विता बेसर अटकी नटखट नथनिया, अजीब समा और अनोखे माडणे। शहरो का तो फिर भी हर दिन विभिन्न प्रकार के नृत्य, सगीत, चलचित्र और रगमचीय समा रोहो मे व्यस्त रहता है लेकिन इस पव पर गावो का उल्लास, वहा की माडणे माडने की कला का योग देखते ही बनता है। पक्के आगन के बरामदों से अगर सदल भरता है कि "चादी रो दीपक, सोना री बाती सरसो रो तेल घालो म्हारे भवर साथी" तो नीम पीपल और बरगद की लखछौंही छाया भी पुकार उठती है—
'गोबर लीपी देहरी चदन सी महके माटो नीलम दिवड जडो हसे पुखराजी बाती "

गुलाबी सर्दी की वासती धूप, माडणो से लदी लदी चबूतरो की पक्तिया पतली नाजुक उ गलियो से उकेरे गये आश्चयजनक माडणे विभिन्न चित्र आकृतिया दृष्टि को वीच पकड कर रखनेवाली लोक कला शैली पगडी से भाकते यौवन से दीप्त चेहरो का सतोष और सोरठे पीलया लहरिया तथा मोमिया सितारे जडी चूदडी मे उल्लास से भीगी नजरें दिवाली के साज सवार मे बिछी बिछी जाती हैं।
'दिवाल्यां आई साववा आव विदेसी बालमा '

सकोरो की अदला बदली एक दूसरे के चित्र माडणो का अवलोकन आलो चना, अपनो की प्रशसा नेत्रो मे कही और सीखने की उत्सुकता कही ईर्ष्या, आनद ही आनद घर का कोना कोना मुखर, गृहपत्नियो के नेत्रो म श्रम जनित गरिमा, दूध के कटोरो की तरह भरे भरे कलई के पात्र अनुराग भरे गेरुए दिवले चबूतरो के आसपास घने पेड गोल घेरेवाले चौके ढूहे मठ, थान मदिर की चबूतरी सीढिया सब पर तरह तरह के माडणें, मानो रातो रात विश्वकर्मा उतर कर यहा का पूरा ही नक्शा बदल गया हो।

कौंध भरे आश्चय लिये दो उगलियो बीच घू घट की फाक छाटे पास जुडे आ रहे हैं ढेर ढेर नाम—सुरसुती भूरो, लिछमी नाथी गैदो, कमली, धौली और मैंमनबाई खनखनाती हँसी के बीच शब्दो के फूल भरने लगते हैं—

"वो खेजडे के बिरछ तले चबूतरा म्हाने माता जी। लिपा, पुता मजाकोरा आछो लागे। मनख माणस आव जूती खोल, गल बात रही चार जना बठें, हुक्का पानी लें, दो घडा सुस्ताव दो बाता चलें आवता जावता हम भी बठ जावें छ। या बाला जी री थान, सिवजी रो मदिर गोगा बाबा रो मठ चबूतरो, हाजी, सभी माढे जाव छ। जद घरा माडें, तो इन्हे क्यो न ? '

कई आग्रह भरे बोल भीतर घरो म खीच ले जाते हैं। आगन ओखली, तुलसी चौर, बल भैसो की सानी की लडामनी, अनाज भरने की गोठ कोठिया

पानी की पलैंडी सब लिपी पोती और मढो हुई। उद्यान से खिले खिले दृश्य ! गीत भी चल रहे हैं—

"म्हे तो वारी हो राणा जी थारे देस ने जेठे नीपजे सांठा रो वाड
ज्यू चूलू रस भरे–थे तो रस भरिया हो-बाईसा रा वीर"

ननदबाई के वीर के प्रति बीदणी का मन पुलक पुलक उठता हैं। गोल गुदाज चेहरे हाथ ननद देवरानी, जिठानी सास की कचहरिया लाज कायदा मे पायल झनकाती भोजाइया हर चेहरे पर परिवतन की नयी चमक !

पुष्पा और कमली की उगलिया, कभी गेरू म कभी कलई मे डूबती हैं और लहराती बलखाती कोई सी भी कलात्मक आकृति उकेरती जाती हैं। आचल पकडे घुटनो से सटे कधो पर झुके लदे बच्चो की ठुनकती जिदें किसी की बद मुट्ठी मे गुड तिल के लड्डू किसी के पास बाजरे का टिक्कड छोटी छोटी बच्चिया भी बू दे कगूरे माडने मे योग दे रही हैं। बतासी बाई गेरू घिसती जा रही है "अजी पूछोई मत आ तिवार को क्याई और छ ? अब जी बडान की रीत चलि आरी छ। खेता म काम अलग, लीपनो पोतनो अलग, माडणो ऊपर सू । घणाई काम रहै छै। घर द्वार आछो लागै छै माडणा सू । लिछमी जी साल पाछे आव छ तो ऊन पधारवा कू सफाई चाइज, जदी तो म्हे पूजा करा जोग होवा छ राम राम करवा नाता रिस्ता का भाई बिरादरी का भी आवै छ। अजी सब बचपन सू ही सीख जावै छै—नारियल साटा, रथ, फूल माड राख्या छै। अजी म्हारे तो बालक हो शादी ब्याह हो, बार तिवार हो कोई भी खुशी हो पहले माडणा जरूर माडा जाव छै। कद चौपड, कदै फूल पाती पडौस मोहल्ला घर घर माडणा चल तो कु ण मन रोके ?'

कलई से दरारें पडी उगलियो पर तेल मलती चौगानी टिप से हस देती हैं। भोरी मु ह पर बधेज बू धी चू दडी रख हौले से मुस्करा कर अपना चबूतरा दिखाती हैं। हफ्ता की मेहनत से खिले, खिले माडणे !

'जी, कोई पाठसाला मे सीखने नही जाये। परपरा सू चली आ रही है यह रिवाज। मैं चार पोथी बाच चुकी हू जी, बस ! यो समझो की सास बहू को और भौजाई ननद को सिखा देती हैं। कुछ देख देख कर आ जाती है ये कला। दिवाली पूजन को पहले रथ फिर पगल्या माडते हैं–बिच्छु मींडका और पपीहा, बैंगन, कद्दू फूल बल, सेर हिरन चौपड, पासा आठकोन चौकोन तिकोन, अपना अपना मन कैसा भी माडो। अजी पूरा गाव क्या खलकत माडती है। ठाकर बामण बाणिया, दरोगा नाई कुम्हार छीपा। जी साता जात की है दिवाली तो। नहीं जी। अगर सीक म रुई लपेट कर माडें तो तेज रगत नही आती। चटकोली टिकाऊ माडणे उगलियो को पोर से ही बठते हैं।'

सचमुच माडणे क्या हैं मानो सफेद फूलो की रौस बिछी हैं। जब इनके बीच दीप झिलमिलायेंगे तो द्वार द्वार सोन किरणें बरसेंगी, हर देहरी चम्पे की कलियों मे बदल जायेगी। किसी आगन से लहर गू जी—

'उलझ गयी म्हारी पायलडी
ढोला आये सवारोजी म्हारी लट उलझी
म्हे तो माढ़ रही थी रग मोरनो



सावित्री परमार

जन्म स्थान 16 सितम्बर 1932
खुर्जा, जिला बुलन्दशहर [उ० प्र०]

शिक्षा एम० ए० (हिन्दी)

लेखन

कहानी तथा काव्य पर अखिल भारतीय स्तर पर पुरस्कृत।

राजस्थान साहित्य-अकादमी द्वारा "1984 सम्बल-पुरस्कार से पुरस्कृत।

काव्य सकलन "कटी सतरो का इतिहास" कहानी सकलन—"घाटी में पिघलता सूरज" एव उपन्यास 'सूरज की आहट' प्रकाशनाधीन।

दो पुस्तकें बाल साहित्य पर प्रकाशित।

स्वतत्र लेखन में सलग्न—